मोरिसाकी बुकशॉप में बिताए दिन

अंतर्राष्ट्रीय बेस्टसेलर

सातोशी
यागीसावा

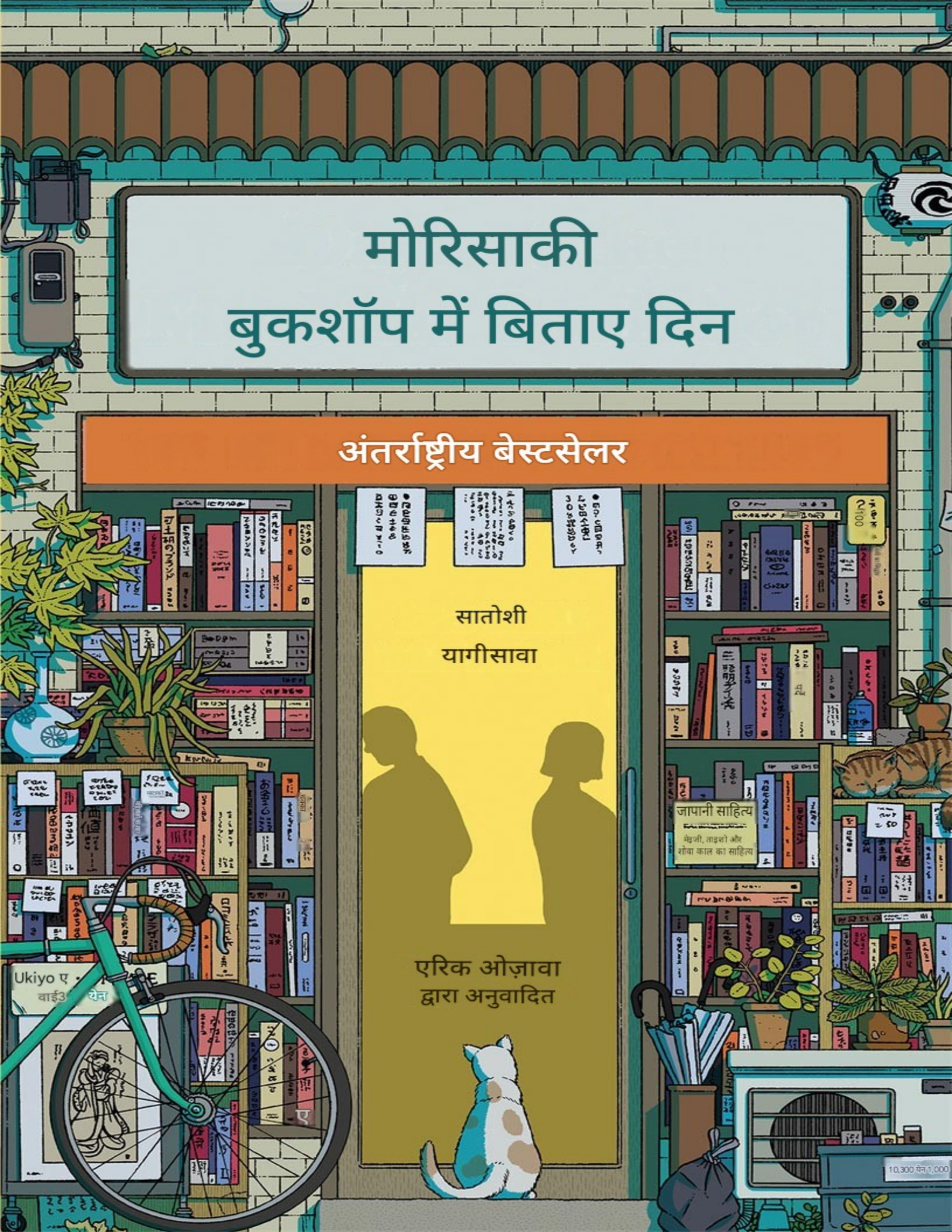

एरिक ओज़ावा
द्वारा अनुवादित

Table of Contents

लेखक के बारे में
शीर्षक पेज
अंतर्वस्तु
भाग ---- पहला
अध्याय 1
अध्याय दो
अध्याय 3
अध्याय 4
अध्याय 5
अध्याय 6
अध्याय 7
अध्याय 8
भाग 2
अध्याय 1
अध्याय दो

□□□□□□□ 3
□□□□□□□ 4
□□□□□□□ 5
□□□□□□□ 6
□□□□□□□ 7
□□□□□□□ 8
□□□□□□□ 9
□□□□□□□ 10
□□□□□□□ 11
□□□□□□□ 12
□□□□□□□□ □□ □□□□
□□-□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□
□□□□□□□□□□

[illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] 1977 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], '[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]', [illegible] [illegible] [illegible] 2009 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

Days at the Morisaki Bookshop

SATOSHI
YAGISAWA

Translated from the Japanese
by Eric Ozawa

MANILLA
PRESS

□□□□□□□□□□

□□□ □□

□□□□□□ 1
□□□□□□ □□
□□□□□□ 3
□□□□□□ 4
□□□□□□ 5
□□□□□□ 6
□□□□□□ 7
□□□□□□ 8
□□□ □□
□□□□□□ 1
□□□□□□ □□
□□□□□□ 3
□□□□□□ 4
□□□□□□ 5
□□□□□□ 6
□□□□□□ 7
□□□□□□ 8
□□□□□□ 9
□□□□□□ 10
□□□□□□ 11
□□□□□□ 12

□□□□□□□ □□ □□□

□□-□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□

□□□□□□□□

1

अगले साल गर्मियों के अंत से लेकर वसंत के आरंभ तक, मैं मोरिसाकी बुकशॉप में रहा। मैंने अपने जीवन का वह दौर दुकान की दूसरी मंजिल पर स्थित खाली कमरे में बिताया, जहाँ मैं किताबों में डूबा रहने की कोशिश करता था। तंग कमरे में मुश्किल से ही रोशनी आती थी और हर तरफ नमी महसूस होती थी। वहाँ लगातार पुरानी किताबों की दुर्गंध आती रहती थी।
लेकिन मैं वहां बिताए दिनों को हमेशा याद रखूंगा। क्योंकि वहीं से मेरे असली जीवन की शुरुआत हुई। और मुझे पूरा यकीन है कि अगर वे दिन न होते, तो मेरा बाकी जीवन नीरस, उबाऊ और अकेला होता।
मोरिसाकी बुकशॉप मेरे लिए बहुत खास है। यह एक ऐसी जगह है जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगा।
जब मैं अपनी आंखें बंद करता हूं, तब भी वे यादें मुझे इतनी स्पष्टता से याद आ जाती हैं।

यह सब अचानक आसमान से बिजली गिरने की तरह शुरू हुआ। नहीं, जो हुआ वह उससे भी कहीं अधिक चौंकाने वाला था, यहाँ तक कि मूसलाधार बारिश में आसमान से मेंढकों की बारिश देखने से भी कहीं अधिक चौंकाने वाला।
एक दिन, हिदेकी, जिसके साथ मैं एक साल से डेटिंग कर रही थी, ने अचानक कहा, "मैं शादी कर रहा हूँ।"
जब मैंने पहली बार उसे सुना, तो मेरे मन में कई सवाल उठे। अगर उसने कहा होता, "चलो शादी कर लेते हैं," तो मैं समझ जाती। या अगर उसने कहा होता, "मैं शादी करना चाहता हूँ," तब भी मैं समझ जाती। लेकिन "मैं शादी कर रहा हूँ" कहना अजीब लगा। आखिर शादी तो आपसी सहमति पर आधारित एक समझौता है, इसलिए व्याकरण की दृष्टि से यह वाक्य पूरी तरह गलत था। और जिस बेपरवाही से उसने यह कहा, वह भी अजीब था। उसकी आवाज़ का लहजा बिल्कुल वैसा ही था जैसे वह किसी से कहे, "अरे, मुझे सड़क किनारे सौ येन मिले हैं।"
जून के मध्य में एक शुक्रवार की रात थी। हम काम के बाद शिंजुकु के एक इतालवी रेस्तरां में साथ में बढ़िया डिनर कर रहे थे। रेस्तरां एक होटल की सबसे ऊपरी मंजिल पर था, इसलिए हमें रात में शहर का खूबसूरत नज़ारा दिख रहा था, चारों ओर जगमगाती नियॉन लाइटें। यह हमारी पसंदीदा जगह थी।

हिदेकी, जो काम में मुझसे तीन साल आगे था, वो ऐसा व्यक्ति था जिस पर मुझे नौकरी शुरू करने के दिन से ही चुपके से क्रश था। बस साथ होने से ही मेरा दिल उछलने लगता था जैसे कोई ट्रैम्पोलिन पर चढ़ रहा हो। उस रात हम काफी समय बाद अकेले थे, इसलिए जब मैं अपनी वाइन पी रही थी, तो मेरा मूड बहुत अच्छा था।
परन्तु फिर । । ।
बिना सोचे समझे मैंने जवाब दिया, "हूँ?" मुझे लगा शायद मैंने उसे गलत सुना हो। लेकिन उसने अपनी बात को सहजता से दोहराया। "तो, लगता है मेरी शादी अगले साल हो रही है।"
“शादीशुदा? कौन किससे शादी कर रहा है?”
“मैं हूँ। उसके लिए।”
“हूँ?” मैं अब भी असमंजस में था। “ये कौन है?”
और फिर, उसने कंपनी के एक अलग विभाग में काम करने वाली एक लड़की का नाम लिया—उसके स्वर में जरा भी अपराधबोध नहीं था। उसे भी मेरे साथ ही नौकरी पर रखा गया था, और वह इतनी सुंदर थी कि मेरा भी मन किया कि उसे गले लगा लूँ। उसकी तुलना में मैं लंबी और दिखने में साधारण थी। मुझे समझ नहीं आता था कि जब वह उसके जैसी खूबसूरत लड़की के साथ डेट कर रहा था, तो वह मेरे साथ संबंध बनाने के बारे में सोचेगा भी क्यों।
जब मैंने उससे पूछा, तो उसने कहा कि वे ढाई साल से साथ थे। दूसरे शब्दों में, वे हमसे भी ज़्यादा समय से साथ थे। ज़ाहिर है, मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि वह किसी और के साथ है। मुझे कभी शक नहीं हुआ। मैंने कभी इस संभावना पर विचार भी नहीं किया। हमने ऑफिस में अपने रिश्ते को गुप्त रखा था, लेकिन मैंने यही सोचा था कि ऐसा उन्होंने ऑफिस में दूसरों के लिए असहज स्थिति से बचने के लिए किया था। फिर भी, शुरू से ही मैं उसकी पहली पसंद नहीं थी, मैं तो बस उसके साथ मौज-मस्ती करने वाली थी। मुझे यह बात कैसे समझ नहीं आई? या तो मैं बहुत धीमी थी—या फिर उसमें कुछ गड़बड़ थी।
खैर, उन दोनों की आपस में एक-दूसरे के माता-पिता से मुलाकात हो चुकी थी। सगाई के तोहफे अगले महीने दिए जाएंगे। मुझे चक्कर आने लगा। ऐसा लगा जैसे किसी साधु ने मेरे दिमाग में मंदिर की घंटी बजा दी हो। मुझे लगभग घंटी की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

“तो, जून में शादी करना बहुत अच्छा होता, है ना, लेकिन उसने पूछा ही नहीं, और अब, ज़ाहिर है, इस साल के लिए बहुत देर हो चुकी है, इसीलिए...”
मैं वहीं स्तब्ध होकर उसके मुंह से निकले शब्दों को सुन रहा था। फिर मैंने धीरे से कहा, "ओह, यह तो अच्छा है।" मैं खुद भी अपने कहे पर हैरान था।
“ओह, धन्यवाद, लेकिन आप जानते हैं कि हम कभी-कभी मिल सकते हैं,” उसने बड़ी मुस्कान के साथ कहा। यह उसकी हमेशा वाली मुस्कान थी—कितनी अच्छी बात है। उसे दुनिया की कोई परवाह नहीं थी।
किसी भावुक नाटक में, यह मेरा वो पल होता जब मैं उठकर उसके चेहरे पर अपनी शराब फेंक देती। लेकिन मैं कभी भी अपनी भावनाओं को इस तरह व्यक्त करने में माहिर नहीं रही। जब मैं अकेली होती हूँ, गहराई से सोचती हूँ, तभी मुझे समझ आता है कि मैं असल में क्या महसूस कर रही हूँ। और वैसे भी, मेरे दिमाग में मंदिर की घंटी इतनी तेज़ बज रही थी कि सोचना नामुमकिन था।
अभी भी सदमे में, मैंने उसे अलविदा कहा और अकेले अपने अपार्टमेंट में वापस चली गई। और जब आखिरकार मुझे होश आया, तो अचानक मेरे ऊपर दुःख की एक लहर छा गई। क्रोध से कहीं अधिक, मुझे दुःख महसूस हुआ। एक ऐसा दुःख जो इतना तीव्र, इतना गहरा और स्पष्ट था कि मुझे लगा जैसे मैं उसे छू सकती हूँ।
मेरी आँखों से आँसू बह रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे ये कभी रुकेंगे ही नहीं। लेकिन मैं चाहे जितना भी रोऊँ, खुद को संभाल नहीं पा रही थी। मैंने लाइट भी नहीं जलाई थी। मैं कमरे के बीचोंबीच गिर पड़ी और सिसकने लगी। अचानक मेरे मन में एक अजीब सा ख्याल आया कि काश ये सारे आँसू तेल होते, तो मैं अमीर होती, लेकिन ये ख्याल इतना बेवकूफी भरा था कि मुझे और ज़्यादा रोना आ गया। कोई मेरी मदद करो, मैंने मन ही मन सोचा। मैं सच में गंभीर थी। लेकिन मैं अपनी आवाज नहीं उठा सकी। मैं रोने के अलावा कुछ नहीं कर सकती थी।

उसके बाद तो एक के बाद एक भयानक घटनाएँ घटती चली गईं।
क्योंकि हम एक ही ऑफिस में काम करते थे, इसलिए मुझे उससे मिलना ही पड़ता था, चाहे मुझे कितना भी बुरा क्यों न लगता हो। और वह भी पहले की तरह ही मुझसे संपर्क करता रहता था, जो मेरे लिए असहनीय था। और हालात और भी बदतर हो गए क्योंकि मैं अक्सर ब्रेक रूम और कैंटीन में उसकी मंगेतर से टकरा जाती थी। जब भी ऐसा होता, वह मुझे एक प्यारी सी मुस्कान के साथ greet करती थी, और मुझे समझ नहीं आता था कि उसे हमारे रिश्ते के बारे में पता है या नहीं।

कुछ ही समय में, मेरा पेट खाना पचाना बंद कर दिया। मुझे रात को नींद नहीं आती थी। मेरा वजन तेजी से घटने लगा। और मेकअप से इसे छुपाने की तमाम कोशिशों के बावजूद, मेरा रंग इतना पीला पड़ गया कि मैं एक लाश जैसी दिखने लगी।
काम के बीचोंबीच में मेरी आंखों से आंसू बहने लगते थे। मैं कई बार बाथरूम के एक छोटे से कमरे में छिपकर रोई, अपनी सिसकियों की आवाज़ को दबाने की कोशिश करती रही।
दो सप्ताह तक ऐसा चलने के बाद, मैं शारीरिक और मानसिक रूप से पूरी तरह थक चुका था। अंततः मैंने अपने सुपरवाइजर के पास जाकर अपना इस्तीफा सौंप दिया।
मेरे काम के आखिरी दिन, हिदेकी मेरे पास आया और हंसमुख स्वर में बोला, "सिर्फ इसलिए कि तुमने नौकरी छोड़ दी, इसका मतलब यह नहीं है कि हम रात का खाना नहीं खा सकते, है ना?"

मैंने एक ही पल में अपना बॉयफ्रेंड और अपनी नौकरी दोनों खो दी थी। मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे अचानक अंतरिक्ष में फेंक दिया गया हो।
मैं क्यूशू से हूँ और दक्षिण के एक स्थानीय कॉलेज से स्नातक होने के बाद काम के सिलसिले में टोक्यो आया। इसी वजह से, शहर में मैं जिन लोगों को जानता था, वे मूल रूप से ऑफिस के लोग ही थे। और क्योंकि मैं शर्मीला हूँ और दोस्त बनाने में कभी अच्छा नहीं रहा, इसलिए पूरे टोक्यो में ऐसा कोई नहीं था जिससे मैं बहुत करीब हो सकूँ।
जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो अब तक मैंने जो जीवन जिया है, उसके पूरे पच्चीस साल, उसे संक्षेप में बताने वाला शब्द है "पर्याप्त"। मेरा जन्म एक पर्याप्त रूप से धनी परिवार में हुआ, मैंने एक पर्याप्त रूप से अच्छे स्कूल से स्नातक की उपाधि प्राप्त की, और एक पर्याप्त रूप से अच्छी कंपनी में नौकरी पाई।
उस समय हिदेकी से मिलना मेरे लिए बहुत मायने रखता था। मेरे जैसी निष्क्रिय स्वभाव वाली लड़की के लिए, उसके जैसा प्रेमी मिलना किसी चमत्कार से कम नहीं था। मैं उसे इतना पसंद करती थी कि खुद को संभालना मेरे लिए मुश्किल था। लेकिन इसका नकारात्मक पहलू यह था कि मुझे इस सदमे का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था, और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इससे कैसे निपटूँ।

अंततः मैंने जो तरीका अपनाया, वह था अपना पूरा जीवन सोने में समर्पित करना। मुझे खुद भी आश्चर्य हुआ कि मुझे कितनी नींद आती थी। मुझे पता है कि शायद यह मेरे शरीर का वास्तविकता से बचने का तरीका था, लेकिन एक बार जब मैं अपने कंबल में लिपट जाती, तो तुरंत सो जाती थी। मैंने अपने छोटे से कमरे में कई दिन गहरी नींद में बिताए, मानो मैं अकेले ही अंतरिक्ष में भटक रही थी।
मैंने शायद एक महीना ऐसे ही बिताया। मैं अपने फोन को नज़रअंदाज़ कर रहा था और फिर एक रात जब मैं जागा, तो मैंने देखा कि मेरे फोन पर एक वॉइसमेल आया है। स्क्रीन पर दिख रहा नंबर मुझे पहचाना नहीं, लेकिन मैंने उसे सुना। अचानक, मुझे एक खुशमिजाज आवाज़ सुनाई दी, "हे, हे!"
“ताकाको? कैसी हो? मैं हूं। मैं सटोरू हूं! मैं किताबों की दुकान से फोन कर रहा हूं। मुझे कॉल करना। बाद में ठीक रहेगा। अरे यार, एक ग्राहक आ गया। मुझे जाना होगा। जल्द बात करेंगे।”
मैं कुछ पल वहीं बैठा रहा, असमंजस में। सटोरू? कौन? मुझे बिलकुल भी पता नहीं था। उसने मेरा नाम लिया था, तो फिर यह कोई गलत नंबर तो नहीं हो सकता। किताबों की दुकान क्या थी? किताबों की दुकान... मैंने इस शब्द को बार-बार अपने दिमाग में दोहराया—और फिर आखिरकार मुझे समझ आया।
सटोरू मेरे चाचा सटोरू थे! याद आया, कुछ समय पहले मैंने अपनी माँ से सुना था कि उन्होंने जिम्बोचो में वह किताबों की दुकान संभाल ली है जिसे मेरे परदादा ने शुरू किया था। आखिरी बार जब मैंने उन्हें देखा था तब मैं हाई स्कूल के पहले साल में था, इसलिए लगभग एक दशक से हमारी मुलाकात नहीं हुई थी, लेकिन मुझे यकीन था कि वह उन्हीं की आवाज़ थी।
और फिर मुझे धीरे-धीरे शक होने लगा कि इसके पीछे मेरी माँ का हाथ है। जी हाँ, यह ज़रूर उन्हीं का काम होगा। मैंने सिर्फ़ उन्हीं को बताया था कि मैंने नौकरी छोड़ दी है और अपने बॉयफ्रेंड से ब्रेकअप कर लिया है। उन्होंने मुझसे इतनी चिंता की होगी कि ज़रूर उन्होंने बॉयफ्रेंड से कोई मदद माँगी होगी। लेकिन फिर भी, यह कोई पर्याप्त कारण नहीं था।
सच कहूँ तो, मुझे अंकल सटोरू उतने पसंद नहीं थे। उनका स्वभाव इतना अपरंपरागत था कि उन्हें समझना मुश्किल था। वे हर किसी के सामने बेफिक्र रहते थे। वे हमेशा छोटे-मोटे मजाक करते और खुद ही हँसते रहते थे। यह अजीब था, और इसी वजह से वे थोड़े सनकी लगते थे, जो मुझे खटकता था।

लेकिन जब मैं छोटी थी, तो मुझे उनका व्यक्तित्व बहुत पसंद था। जब मेरी माँ मुझे अपने परिवार से मिलने टोक्यो ले जाती थीं, तो हम उनके कमरे में साथ खेलते थे। लेकिन जैसे-जैसे मैं किशोरावस्था के करीब पहुँची, उनकी अजीबोगरीब आदतें मुझे बेहद परेशान करने लगीं और मैंने उनसे छुप-छुप कर दूरी बनाना शुरू कर दिया। और फिर, ऊपर से, उन्होंने अचानक शादी कर ली—जबकि उनके पास अभी तक कोई स्थायी नौकरी भी नहीं थी। तब से, किसी न किसी तरह, वे परिवार में परेशानी खड़ी करते नज़र आने लगे।
इसीलिए जब मैं टोक्यो आया तो मैंने उससे मिलने के बारे में कभी सोचा भी नहीं। मैं उससे किसी भी तरह का संबंध नहीं रखना चाहता था।
मुझे उसका वॉइसमेल मिलने के बाद अगली दोपहर मैंने अनिच्छा से उसे वापस कॉल किया। मैं सोच भी नहीं सकती थी कि अगर मैंने उसे वापस कॉल नहीं किया तो मेरी माँ गुस्से से आग बबूला हो जाएँगी। जब मैं प्राथमिक विद्यालय में पढ़ती थी तब मेरे चाचा लगभग पच्चीस वर्ष के थे, तो उनकी उम्र चालीस से अधिक होनी ही चाहिए।
पहली ही घंटी बजते ही किसी ने फोन उठा लिया।
"हैलो, यह मोरिसाकी बुकशॉप है।"
“हाय, मैं ताकाको हूँ।”
“अरे वाह!” मुझे फोन के दूसरी तरफ से अपने चाचा की तेज़ आवाज़ सुनाई दी। पुराने दिनों की वो ही तीव्रता मुझे याद है। मैंने झट से फोन को अपने कान से दूर कर लिया।
“कितने दिनों से नहीं! तुम ठीक हो?”
“अह, हाँ, ठीक है…”
मुझे पता था कि तुम टोक्यो में हो, लेकिन तुम मुझसे मिलने कभी नहीं आए। "माफ़ कीजिएगा। मैं काम में व्यस्त था," मैंने अनायास ही माफी मांग ली। लेकिन आपने तो नौकरी छोड़ दी थी, है ना?
उन्होंने सीधे दिल पर चोट की। मैंने बस कुछ बुदबुदाते हुए जवाब दिया। यह ऐसा आदमी नहीं था जिससे आप शालीनता की उम्मीद कर सकें। मेरे चाचा बस बोलते ही रहे, मुझे बताते रहे कि यह सब पुराने दिनों जैसा ही है, बोलते ही रहे— अचानक उन्होंने कहा, “सुनो, मैं सोच रहा था, अगर अभी तुम्हारा काम करने का मन नहीं है, तो क्यों न तुम यहीं आकर रह लो?”
"माफ़ कीजिए?" उनके अचानक प्रस्ताव ने मुझे चौंका दिया।

लेकिन मेरे चाचा मुझसे जवाब पाने के लिए लगातार दबाव डालते रहे। “किराए और बिजली-पानी के बिलों पर जो पैसा तुम खर्च कर रहे हो, वो कम नहीं है। अगर तुम यहाँ आ जाओ, तो सब कुछ मुफ़्त है। खैर, मतलब तुम किताबों की दुकान में मेरी थोड़ी मदद कर सकते हो।”
जब मैंने उनसे इस बारे में पूछा, तो उन्होंने बताया कि वे दुकान अकेले ही चला रहे हैं। उन्हें सुबह दुकान खोलने के लिए किसी की ज़रूरत थी, ताकि वे पीठ दर्द के इलाज के लिए अस्पताल जा सकें। मेरे चाचा कुनिताची में एक घर में रहते थे, इसलिए दुकान बंद होने पर मुझे पूरा घर खाली मिल जाता था। उन्होंने मुझे भरोसा दिलाया कि मुझे पूरी निजता मिलेगी। कुछ साल पहले तक वह घर एक रिहायशी मकान था, इसलिए उसमें एक अच्छा बाथरूम भी था।
मैंने एक पल के लिए इस बारे में सोचा। मुझे पता था कि मेरी मौजूदा व्यवस्था हमेशा नहीं चल सकती। अगर मैं इसी तरह जीता रहा, तो जल्द ही मेरे पैसे खत्म हो जाएंगे। दूसरी ओर, मुझे यह भी पसंद नहीं था कि कोई मेरे जीवन में दखल दे।
"लेकिन मुझे यकीन है कि मैं बोझ बनूंगा," मैंने प्रस्ताव को अस्वीकार करने की कोशिश करते हुए कहा।
मेरे चाचा को मेरी बात बिल्कुल समझ नहीं आई।
“दबंग? ये तो बकवास है। मुझे तो आपको पाकर खुशी होगी।”
क्या आंटी मोमोको भी सहमत थीं? मैंने यह सवाल पूछना शुरू किया, लेकिन तुरंत खुद को रोक लिया। जी हाँ। उनकी पत्नी मोमोको उन्हें कई साल पहले छोड़कर चली गई थीं। हमारे परिवार में यह एक बहुत बड़ी बात थी। जब वह भाग गई थीं, तो वह इतने उदास लग रहे थे कि मेरी माँ को उनकी सेहत की भी चिंता सताने लगी थी। मुझे याद है कि खबर सुनकर मुझे अपने चाचा के लिए बहुत दुख हुआ था, लेकिन साथ ही एक अजीब सी बेचैनी भी हुई। यह बात समझ में नहीं आ रही थी। उनकी शादी में, वे दोनों एक-दूसरे से बहुत प्यार करते हुए लग रहे थे। आंटी मोमोको बहुत दयालु और नेक दिल थीं। वह ऐसी इंसान बिल्कुल नहीं थीं जो भागकर चली जाएँ।
मैं ये सब याद करते हुए बड़बड़ाते हुए बातचीत कर रहा था। वहीं मेरे चाचा योजना को जल्दी से आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहे थे। "बहुत बढ़िया। तो फिर फैसला हो गया।"

मैंने उसे रोकने की फिर कोशिश की। “लेकिन मेरे सामान का क्या होगा?” मैंने कहा, लेकिन उसने बताया कि कुनिताची में उसके घर में मेरे सारे सामान के लिए जगह है। मैं सारा सामान वहाँ भेज सकती हूँ और दुकान पर बस कुछ छोटे बैग लेकर जा सकती हूँ।
ऐसा लग रहा था मानो मुझे हर मोर्चे पर मात दे दी गई हो।
“मुझ पर भरोसा रखो, ताकाको। यह तुम्हारे लिए भी बेहतर होगा।”
लेकिन मैं उस व्यक्ति पर कैसे भरोसा कर सकता था जिसे मैंने एक दशक से नहीं देखा था?
“ठीक है, मैं यहाँ तैयारी शुरू कर देता हूँ,” मेरे चाचा ने कहा, और फिर बिना किसी जवाब का इंतज़ार किए, उन्होंने मुझे बताया कि एक ग्राहक अभी-अभी आया है और हमें बाद में बात करनी होगी। फिर उन्होंने फोन काट दिया।
मैं कुछ देर तक वहीं बैठा रहा, जैसे किसी स्तब्धता में, डायल टोन सुनता हुआ।

2

दो हफ्ते बाद, मैं जिम्बोचो स्टेशन पर खड़ा था। यह सब कैसे हो गया? पल भर में मेरी जिंदगी इतनी तेजी से बदल गई थी कि मैं अब भी उससे उबर नहीं पाया था।
अपने चाचा से बात करने के बाद, मेरी माँ से फोन पर बात हुई। उन्होंने पूछा, “क्या फैसला है? क्यूशू वापस आऊँ या साटोरू के घर जाऊँ?” मैंने अनिच्छा से अपने चाचा का घर चुना। मुझे पता था कि अगर मैं घर वापस गई, तो शायद मेरी जबरन शादी कर दी जाएगी और मैं फिर कभी यहाँ वापस नहीं आ पाऊँगी। टोक्यो आने के लिए मैंने जितनी भी परेशानियाँ झेली थीं, उसके बाद इस तरह वापस जाने और यह स्वीकार करने का ख्याल भी मुझे बर्दाश्त नहीं हो रहा था कि सब कुछ पूरी तरह से असफल रहा।
बहुत दिनों बाद पहली बार बाहर निकलने पर मुझे अपने पैरों पर लड़खड़ाने जैसा महसूस हुआ। लेकिन किसी तरह ट्रेन से जिम्बोचो पहुँच गया। फिर भी, जैसे ही मैं सबवे से बाहर निकला, मुझे तेज़ धूप का सामना करना पड़ा। जब मैं सो रहा था, बारिश का मौसम पूरी तरह से गर्मी में बदल गया था। मेरे सिर के ऊपर सूरज किसी किशोर लड़के की तरह मुझे घूर रहा था। जब मैंने नौकरी छोड़ी थी, तब गर्मी की असली तपिश अभी दूर लग रही थी। इससे मुझे थोड़ा दुख हुआ— यहाँ तक कि मौसम भी मुझे धोखा दे रहे थे।
मैं पहली बार जिम्बोचो आया था। मेरे दादाजी का घर कुनिताची में था, जो यहाँ से पश्चिम की ओर एक घंटे की दूरी पर है, इसलिए हमारे यहाँ आने का कोई खास कारण नहीं था।
एक पल के लिए, मैं एक चौराहे पर ट्रैफिक सिग्नल पर खड़ा रहा, चारों ओर घूमता रहा, सब कुछ समझने की कोशिश करता रहा।
यह सब बहुत अजीब लग रहा था।
मैंने एक मुख्य सड़क देखी (जिसे मेरे चाचा ने यासुकुनी स्ट्रीट बताया था), और उसके दोनों ओर किताबों की दुकानों की कतारें थीं। जिधर भी मुड़ो, दूसरी किताब की दुकान मिल ही जाती थी।
वैसे तो आम तौर पर एक गली में एक ही दुकान काफी होती है। लेकिन यहाँ ज़्यादातर दुकानें किताबों की थीं। हालाँकि आपकी नज़र सबसे पहले संसेइदो और शोसेन जैसी बड़ी दुकानों पर पड़ी होगी, लेकिन असल में छोटी-छोटी पुरानी

किताबों की दुकानें सबसे अलग थीं। उन्हें एक कतार में देखना अपने आप में एक अनोखा अनुभव था। गली के दूसरी तरफ, सुइदोबाशी की ओर, कुछ बड़ी-बड़ी दफ्तरों की इमारतें थीं, लेकिन उनसे यह जगह और भी अजीब लगने लगी।
अभी भी असमंजस में, मैं दोपहर के भोजन के लिए आए वेतनभोगी कर्मचारियों से भरे एक चौराहे को पार करके किताबों की दुकानों वाली गली में चल पड़ा। अपने चाचा के निर्देशों का पालन करते हुए, मैंने मुख्य सड़क छोड़ दी और साकुरा नामक एक छोटी सी गली में मुड़ गया। इससे मैं पुरानी किताबों की दुकानों वाले इलाके में पहुँच गया।
मैंने मन ही मन बुदबुदाया, "यह तो पुरानी किताबों की जादुई दुनिया है।" मैं वहां तेज धूप में तपते हुए खड़ा था और सोच रहा था कि अपने चाचा की दुकान कैसे ढूंढूं। तभी मेरी नज़र एक आदमी पर पड़ी जो मेरी तरफ देख रहा था और हवा में हाथ हिला रहा था। उसके बाल बिखरे हुए थे; उसने मोटे फ्रेम वाला काला चश्मा पहना हुआ था और वह इतना दुबला-पतला था कि लड़का लग रहा था। उसने आधी बाजू की चेक वाली कमीज़, ढीली सूती पैंट और चप्पलें पहन रखी थीं। मैंने उसे पहचान लिया। वह मेरे चाचा सटोरू थे।
यह कहते हुए उसका पूरा चेहरा चमक उठा, "अरे, ताकाको, आखिरकार तुम ही हो।" नज़दीक से देखने पर मुझे पता चल गया कि मेरे चाचा काफी बूढ़े हो गए थे। उनकी आँखों के आसपास की गहरी झुर्रियाँ साफ दिख रही थीं। उनकी त्वचा, जो कभी किसी परीकथा की राजकुमारी की तरह सफेद थी, अब अनगिनत धूप के धब्बों से भरी हुई थी। लेकिन उनके चश्मे के पीछे, उनकी आँखों में एक अजीब सी मासूमियत झलक रही थी।
"क्या तुम इतनी देर से दुकान के सामने मेरा इंतजार कर रहे थे?"
मुझे लगा था कि तुम इसी समय आओगी। तुम्हें पता है, इस पूरे इलाके में एक के बाद एक पुरानी किताबों की दुकानें ही हैं, और मैंने सोचा कि तुम कहीं खो न जाओ, है ना? इसलिए मैं तुम्हारा इंतज़ार करने के लिए बाहर आ गई। इतने समय से मैं स्कूल की वर्दी में किसी स्कूली छात्रा की उम्मीद कर रही थी, लेकिन लगता है कि कभी न कभी तुम बड़ी हो ही गई होगी।
यह बात समझ में आती है। आखिरी बार जब मैंने उन्हें देखा था, तब मैं हाई स्कूल के पहले साल में थी। हम मेरे दादाजी की पुण्यतिथि मनाने टोक्यो आए थे। तब से लगभग दस साल बीत चुके थे। लेकिन वो अब भी वैसे ही थे। उनकी उम्र चालीस से ज़्यादा हो गई होगी, लेकिन उनका वही सहज और बिंदास अंदाज़ अब भी

बरकरार था। वो किसी भी सभ्य पुरुष की धारणा के बिलकुल विपरीत थे। और यही बात मुझे किशोरावस्था में बिल्कुल भी पसंद नहीं आती थी। उस समय मैं दूसरों और अपने बीच की दूरी को लेकर बहुत संवेदनशील थी।
अपने चाचा को घूरना बंद करने के बाद, मैंने दुकान के सामने की ओर देखा। "तो यह वह दुकान है जिसे मेरे परदादा ने शुरू किया था।"
मैंने उस दुकान को देखा जिस पर लिखा था "मोरिसाकी बुकशॉप: आधुनिक युग के साहित्य में विशेषज्ञता प्राप्त" और उसे देखकर मैं थोड़ा भावुक हो गया। हालाँकि मैं अपने परदादा से कभी नहीं मिला था, फिर भी मुझे यह बहुत बड़ी बात लगी कि मेरे चाचा हमारे परिवार की तीसरी पीढ़ी थे जो इस परंपरा को आगे बढ़ा रहे थे।
यह दुकान लगभग तीस साल पुरानी थी, लेकिन देखने में किसी पुराने ज़माने की लगती थी। दो मंज़िला लकड़ी की छोटी सी इमारत के काँच के दरवाज़ों से किताबों का ठसाठस भरा होना साफ़ दिखाई देता था।
“मूल दुकान ताइशो काल में सुज़ुरान स्ट्रीट पर थी। बेशक, अब वह दुकान नहीं है, इसलिए मुझे लगता है कि यह एक तरह से दूसरी मोरिसाकी बुकशॉप है।”
"बहुत खूब।"
"ठीक है, अंदर आ जाओ, अंदर आ जाओ।"
मेरे चाचा ने लगभग मेरे हाथों से मेरा सामान छीन लिया और मुझे दुकान के अंदर ले गए। अंदर कदम रखते ही मुझे एक अजीब सी बदबू महसूस हुई।
मैंने गलती से "बासी" शब्द जोर से बोल दिया।
मेरे चाचा हँसे और मुझे सुधारते हुए बोले, "मेरी एक बात मानो और इसे सुबह की बारिश के बाद की नमी की तरह समझने की कोशिश करो।"
जिधर भी देखो, किताबें ही किताबें थीं। इस छोटे से कमरे में, जहाँ सूरज की रोशनी मुश्किल से ही पहुँचती थी, ऐसा लगता था मानो शोवा युग की महक हर जगह फैली हुई हो। करीने से सजी अलमारियों पर पेपरबैक और हार्डकवर किताबें ठसाठस भरी हुई थीं। संपूर्ण रचनाओं के बड़े संग्रह दीवार के किनारे ढेरों में रखे हुए थे। यहाँ तक कि कैश रजिस्टर वाले छोटे से काउंटर के पीछे का हिस्सा भी किताबों से भरा हुआ था। अगर कभी कोई बड़ा भूकंप आया, तो निस्संदेह सब कुछ गिर जाएगा और आप किताबों के ढेर के नीचे दब जाएँगे। मैंने आधे आश्चर्य से पूछा, "आपके पास यहां कितनी किताबें हैं?"
"मेरा अनुमान है कि लगभग छह हजार।"

“छह हजार!” मैं चीख पड़ी।
"यह जगह छोटी है, इसलिए यहाँ बस इतनी ही जगह है।"
“आधुनिक युग के साहित्य में विशेषज्ञता हासिल करने का क्या अर्थ है?”
“हम आधुनिक जापानी लेखकों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यहाँ आइए। देखिए।” मेरे चाचा के कहने पर, मैंने अलमारियों पर सजी किताबों की जिल्दों पर नज़र डाली। कुछ लेखकों के नाम मुझे जाने-पहचाने लगे, जैसे रयुनोसुके अकुतागावा, सोसेकी नात्सुमे, ओगई मोरी, लेकिन ज़्यादातर लेखक ऐसे थे जिनके बारे में मैंने पहले कभी नहीं सुना था। और जिनके बारे में मैंने सुना था, उन्हें भी मैंने हाई स्कूल में कक्षा में पढ़ा था।
“तो, आप इन सभी लेखकों की किताबें इकट्ठा करते हैं?” मैंने कहा।
मेरे चाचा हँसे। “यहाँ की ज़्यादातर किताबों की दुकानें मुख्य रूप से किसी एक विशेष क्षेत्र या प्रकार की किताबें ही बेचती हैं। यहाँ विद्वानों की किताबें बेचने वाली दुकानें हैं। कुछ दुकानें सिर्फ़ नाटकों की पटकथाएँ बेचती हैं। कुछ और भी अनोखी दुकानें हैं जो सिर्फ़ पुरानी पोस्टकार्ड और फ़ोटोग्राफ़ जैसी चीज़ें बेचती हैं। इस इलाके में दुनिया भर में सबसे ज़्यादा पुरानी किताबों की दुकानें हैं।”
"इस दुनिया में?"
“हाँ। क्योंकि उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी की शुरुआत में मेइजी युग के दौरान, यह इलाका संस्कृति का केंद्र था और सुसंस्कृत लोगों और लेखकों के बीच बहुत लोकप्रिय था। यहाँ इतनी सारी किताबों की दुकानें होने का कारण यह है कि उस दौर में इस इलाके में बहुत सारे स्कूल बनाए गए थे, जिसका मतलब था कि अचानक यहाँ विद्वानों की किताबें बेचने वाली कई दुकानें खुल गईं।”
“क्या यह इतना पुराना मामला है?”
“हाँ, और यहाँ का इतिहास आज तक निर्बाध रूप से जारी है। ओगई मोरी और जुनइचिरो तानिज़ाकी जैसे लेखकों ने यहीं पर आधारित उपन्यास लिखे हैं। अब, विदेशों से बहुत सारे पर्यटक आते हैं।”
वह इसके बारे में इतने गर्व से बात कर रहा था मानो यह सब उसी का हो।
“मैं टोक्यो में रह रहा हूँ, लेकिन मुझे इस जगह के बारे में ज़रा भी जानकारी नहीं थी,” मैंने सचमुच प्रभावित होकर कहा। सच कहूँ तो, मेरे चाचा के मेरे छोटे से सवाल के उस जवाब ने मुझे भी प्रभावित किया। मेरे परिवार

में सभी लोग उन्हें बस यूँ ही भटकते हुए, बिना किसी मकसद के नौकरी ढूंढे हुए समझते थे, लेकिन वे इतना कुछ जानते थे। इससे मुझे वो दिन याद आ गए जब मैं छोटा था और उनसे मिलने जाता था, उनका कमरा हमेशा इतिहास और दर्शन की मुश्किल किताबों से भरा रहता था।
“अगली बार, आपको थोड़ा घूमना-फिरना चाहिए, आस-पास का इलाका देखना चाहिए। यहाँ बहुत सारी दिलचस्प जगहें हैं। लेकिन चलिए इसे किसी और दिन के लिए छोड़ देते हैं। पहले मैं आपको आपके कमरे तक ले चलता हूँ। दूसरी मंज़िल बाकी संग्रह की किताबों से भरी पड़ी है, लेकिन कमरा बड़ा है।”
जब हमने दूसरी मंज़िल के कमरे में झाँका, तो मैं लगभग बेहोश हो गई। जिस "संग्रह" का उन्होंने ज़िक्र किया था, वह तो कमरे में चारों ओर किताबों के ऊँचे-ऊँचे ढेर निकले। अंदर कदम रखने की भी जगह नहीं थी। यह किसी साइंस फिक्शन फिल्म के दृश्य जैसा था, जो भविष्य के किसी शहर में फिल्माया गया हो। एक पुराना एयर कंडीशनर पूरी तेज़ी से चल रहा था, लेकिन मेरे शरीर पर पसीने की बूँदें धीरे-धीरे आने लगीं। मुझे दूर कहीं से झींगुर की तीखी आवाज़ सुनाई दे रही थी।
मैंने बगल में खड़े अपने चाचा की ओर मुड़कर उन्हें गुस्से से घूरा। जब उन्होंने कहा कि वे मेरे लिए तैयारी कर रहे हैं, तो उनका क्या मतलब था? उस कमरे में तो एक चूहे के पैर फैलाने की भी जगह नहीं थी।
“अरे यार, तुम्हारे आने से पहले मैं वहाँ सब कुछ व्यवस्थित करना चाहता था, पर…” उसने माफी मांगते हुए सिर के पीछे हाथ फेरते हुए कहा। “देखो, तीन दिन पहले मेरी कमर में मोच आ गई। लगता है, यही तो किताब बेचने वाले की किस्मत होती है। लेकिन मैंने आधी किताबें बगल वाले खाली कमरे में रख दी हैं। तो अगर तुम बाकी बची किताबें भी वहीं रख दो, तो तुम्हें घर जैसा महसूस होगा।” उसी क्षण, हमने नीचे कांच के दरवाजे के खुलने की आवाज सुनी, और मेरे चाचा ने कहा, "उसके लिए क्षमा करें," और वापस नीचे भाग गए।
मैंने कमरे में चारों ओर देखा और आह भरी। "इन्हें वहीं फेंक दो," उसने कहा। उसके लिए कहना आसान था। मुझे लगा जैसे मुझे धोखा दिया गया हो। लेकिन मैंने अपने अपार्टमेंट का किरायानामा तोड़ा ही था, और मेरे पास रहने के लिए कोई और जगह नहीं थी। मैंने सबसे बुरे हालात के लिए खुद को तैयार किया और कमरा साफ करना शुरू कर दिया।

पूरे दिन मैं उन किताबों से जंग लड़ता रहा। पसीने से तरबतर होकर मैं किताबों के बड़े-बड़े ढेर बगल वाले कमरे में धकेल रहा था। ज़रा सी भी लापरवाही हुई तो मानो मेरी बाबेल की मीनारें ढह जाएँगी, मानो किसी क्रोधित ईश्वर ने उन्हें नष्ट कर दिया हो। धीरे-धीरे उन किताबों के प्रति मेरी घृणा बढ़ती ही गई। फिर भी, शाम तक किसी तरह मैंने ज़्यादातर किताबें खाली कमरे में रख दीं। मैंने उस छोटी मेज़ को भी बचा लिया जो किताबों के ढेर में दब गई थी। बगल वाले कमरे में किताबें छत तक ढेर हो गई थीं। मुझे थोड़ी चिंता हुई कि कहीं ज़मीन ही न गिर जाए। लेकिन वह इमारत काफ़ी मज़बूत लग रही थी, इसलिए मैंने खुद को समझाया कि सब ठीक हो जाएगा। फिर मैंने वैक्यूम क्लीनर निकाला और ज़मीन पर मंडरा रही धूल और कचरे के टुकड़ों को, जो किसी बुरी आत्मा की तरह हवा में तैर रहे थे, साफ़ कर दिया। जब मैंने दीवारों और चटाई को कपड़े से पोंछ दिया, तो कमरा कुछ ऐसा लगने लगा जैसे कोई इंसान वहाँ रह सकता हो।
मैं कमरे के प्रवेश द्वार पर कमर पर हाथ रखकर खड़ा था और कुछ हद तक संतुष्टि के साथ अपने काम का जायजा ले रहा था, तभी मेरे चाचा ने दुकान बंद की और मुझसे मिलने ऊपर आए।
“वाह, तुमने तो कमाल कर दिया! बहुत बढ़िया,” उसने कहा। “ताकाको, कसम से, अगर तुम उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में इंग्लैंड में पैदा हुई होती, तो एक शानदार नौकरानी बन सकती थी।” वह मुझसे इसी तरह की और भी बेतुकी बातें कहता रहा।
हे भगवान! मैंने सोचा, मुझे इस व्यक्ति के साथ तालमेल बिठाना ही पड़ेगा। मैंने कहा, "मैं थक गया हूँ और सोने जा रहा हूँ।"
“बिल्कुल, आराम करो, जितना आराम चाहिए उतना करो। कल सुबह तुम मेरी मदद कर सकते हो ना?”
मेरे चाचा के दुकान से चले जाने के बाद, मैं तुरंत नहाने चला गया, और फिर अपने बालों को सुखाए बिना ही अपनी बदबूदार गद्दे पर लेट गया।
जब मैंने बत्तियाँ बंद कीं, तो कमरा अचानक पूरी तरह शांत हो गया। ऐसा लगा जैसे सारी किताबें आवाज़ को सोख रही हों।
मैं मंद-मंद छत की ओर देखता रहा और निराशा से भर गया। क्या मैं सचमुच यहाँ कुछ देर रह सकता हूँ? मुझे नहीं लगता कि मैं कभी इस माहौल का आदी हो

पाऊँगा। लेकिन यह भावना बस एक पल के लिए ही रही। एक सेकंड बाद ही मैं खर्राटे लेने लगा।
मेरे सपने में, मैं एक एंड्रॉइड नौकरानी थी जो निकट भविष्य के एक शहर में रहती थी। उस मोहल्ले में, सभी इमारतें पुरानी किताबों से बनी थीं।

अगली सुबह जब मैंने आंखें खोलीं, तो मुझे बिलकुल भी पता नहीं था कि मैं कहां हूं। मैंने अपने बगल में रखी अलार्म घड़ी पर नजर डाली। समय 10:22 था।
अचानक ही मैं होश में आ गई। "आह!" मैं चिल्लाई और बिस्तर से कूद पड़ी। दुकान दस बजे खुलती है। सोने से पहले मैंने अलार्म आठ बजे का लगाया था, लेकिन किसी समय वह बंद हो गया होगा। आखिर किसने मेरे साथ यह क्रूर मज़ाक किया? ज़ाहिर है, कसूरवार मैं ही थी।
क्या हालत हो गई! मैं हमेशा समय पर उठने में माहिर थी। मुझे इस बात पर गर्व था कि कंपनी में अपने तीन साल के कार्यकाल में मैं कभी देर से नहीं उठी। लेकिन यहाँ मैं पायजामे में थी, बिखरे बालों के साथ, सीढ़ियों से नीचे भाग रही थी, और सामने लगे भारी धातु के शटर को धक्का देने के लिए दौड़ रही थी। जैसे ही मैंने ऐसा किया, गर्मी की रोशनी कमरे में भर गई। सड़क की ओर खुलने वाली सभी दुकानें पहले ही खुल चुकी थीं। साफ था कि मैं देर से शुरुआत कर रही थी।
मैं क्या कर सकती थी? लगभग आधे घंटे तक मैं घबराई हुई सी, पायजामे में ही काउंटर पर बेवकूफी से बैठी रही। लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि कोई अंदर नहीं आया।
बाद में, ऐसा लगा कि कोई आने वाला नहीं है। कुछ लोग सड़क पर चल रहे थे, लेकिन वे मेरे पास से सीधे निकल गए। खुद को बेवकूफ समझते हुए, मैं यूं ही ऊपर चली गई और कपड़े बदले, बाल संवारे, थोड़ा मेकअप भी किया और फिर नीचे आ गई।
दोपहर के करीब लोग धीरे-धीरे आने लगे। लेकिन अधिकतर लोग केवल पचास येन या सौ येन वाली सस्ती पेपरबैक किताबें ही खरीद रहे थे। मुझे चिंता होने लगी कि दुकान चल पाएगी या नहीं। लगभग तीस जम्हाई रोकने के बाद, मुझे दो-तीन बार नींद आ गई।
लगभग एक बजे एक अधेड़ उम्र का आदमी आया। वह कद में छोटा, मोटा और पूरी तरह से गंजा था। जैसे ही उसने मुझे काउंटर के पीछे बैठे देखा, वह चौंक गया।

"क्या? सटोरू कहाँ है? और उससे भी ज़रूरी, तुम कौन हो? क्या उन्होंने किसी लड़की को पार्ट-टाइम काम पर रख लिया है? लेकिन यह जगह किसी को भी काम पर रखने का खर्च तो नहीं उठा सकती, है ना?"
उन्होंने मुझसे एक के बाद एक कई सवाल पूछे। मैं उनका वर्णन कैसे करूँ? वे एक ऐसे अधेड़ उम्र के व्यक्ति थे जो कुछ भी छिपाते नहीं थे।
“उम, मेरे चाचा लगभग दो बजे आएंगे। मैं उनकी भतीजी, ताकाको हूँ। मैं एक तरह से अंशकालिक काम करती हूँ। मुझे रहने और खाने के बदले काम करना पड़ता है। दुकान की आर्थिक स्थिति के बारे में मुझे ज्यादा जानकारी नहीं है।”
जैसे ही मैंने अपने जवाबों को पढ़ा, वह व्यक्ति गहरी रुचि की दृष्टि से मुझे ध्यान से देखने लगा।
“अरे वाह,” उसने कहा। “मुझे कैसे पता नहीं चला कि इतने समय से सटोरू की एक प्यारी, छोटी भतीजी है।”
मैंने प्यारी सी मुस्कान दी। सौभाग्य से उसने आज सुबह मेरी शर्मनाक हालत नहीं देखी थी। शायद वो सच में एक नेक दिल बूढ़ा आदमी था। वो काफी मिलनसार लग रहा था, और उससे भी अच्छी बात ये थी कि उसकी पसंद भी अच्छी थी।
“तो मैं नाओया शिगा को फिर से पढ़ने के बारे में सोच रहा था। काफी समय हो गया है। आपको पता ही है कि मेरी पत्नी ने कुछ समय पहले मेरी अधिकांश किताबें फेंक दी थीं।”
वह बातें करते हुए किताबों की अलमारियों के आसपास घूम रहा था। मुझे कैसे पता चलेगा कि उसकी पत्नी के साथ क्या हुआ? मैं तो उससे आज ही मिला हूँ।
वे आखिर कहाँ हैं?
“क्या कहाँ है?”
“नाओया शिगा की पुस्तकें।”
"अच्छा, ठीक है, वे शायद वहीं कहीं आसपास होंगे।"
उस आदमी ने अचानक मुझे एक तीखी नजर से देखा, मानो वह मेरा आकलन करने की कोशिश कर रहा हो।
क्या आप पाठक हैं?
"निश्चित रूप से नहीं।"
जैसे ही मैंने जवाब दिया, मेरा अधेड़ साथी एक राक्षस में बदल गया। उसकी आँखें चमक उठीं और उसने मुझे घूरकर देखा।

तभी उनका तीखा भाषण शुरू हुआ। हे भगवान! “आजकल के युवा किताबें नहीं पढ़ते। वे बस कंप्यूटर गेम खेलते हैं। यह निराशाजनक है। और अगर वे किताबें पढ़ते भी हैं, तो बस मंगा या अपने मोबाइल फोन पर ये सतही कहानियां पढ़ते हैं। मेरा बेटा भी, जो लगभग तीस साल का है, अब भी हर समय वीडियो गेम ही खेलता रहता है। क्या यह ठीक है? आपको ऐसा लगता है? बिलकुल नहीं। वे सिर्फ सतही बातें देख रहे हैं। और अगर आप सतही इंसान नहीं बनना चाहते, तो आपको यहां की कुछ बेहतरीन किताबें पढ़नी चाहिए।”
वह आदमी लगातार बोलता ही रहा। जब वह आखिरकार घर लौटा, तब तक लगभग एक घंटा बीत चुका था। अंत में, उसका भाषण इतना लंबा चला कि वह बिना कुछ खरीदे ही चला गया। मैं भी थकने लगा था। जब आधे घंटे बाद मेरे चाचा आए, तो एक पल के लिए मुझे लगा जैसे वे मेरे उद्धारकर्ता हों।
“तुम्हारा पहला दिन कैसा रहा? कोई परेशानी तो नहीं हुई?” उसने पूछा। सवाल पूछते ही वह सीधे उस दिन के हिसाब-किताब की बही देखने चला गया।
“नहीं,” मैंने थके हुए स्वर में कहा। “लेकिन दोपहर के कुछ देर बाद एक आदमी अंदर आया। ऐसा लग रहा था जैसे उसका सिर एक सिंहपर्णी फूल हो और उसके किनारों को छोड़कर बाकी सारे रोएँ उड़ गए हों। वह बहुत बातें कर रहा था।” “अरे, ये तो साबू है। ये करीब बीस साल से यहाँ नियमित रूप से आता रहा है।” मैं खुद पर काबू न रख पाने के बावजूद हंस पड़ा। साबू नाम उस पर बिलकुल फिट बैठता था।
“वो आदमी, मैं क्या कहूँ, वो जापानी साहित्य के महान लेखकों से दिल से प्यार करता है। लेकिन वो बहुत बोलता है। मैं भी कभी-कभी उसकी बातों में फंस जाता हूँ। पर अगर आप थोड़ी सी चाय बना दें, सिर हिलाएँ और थोड़ा सा ‘ओह’ और ‘आह’ कहें, तो वो घर चला जाता है।”
आह, मैंने सोचा, सेवा उद्योग में बहुत कुछ है। आजकल तो नियमित ग्राहक का विचार भी दुर्लभ सा लगता है।
“वैसे, अंकल…” मैंने कहा, मुझे आज का अपना सबसे महत्वपूर्ण सवाल याद आ गया।
"यह क्या है?"
“क्या दुकान ठीक है? यहाँ ज्यादा ग्राहक नहीं आते। और जो लोग किताबें खरीदते हैं, वे सिर्फ सस्ती वाली ही खरीदते हैं…”
मेरे चाचा हँसे, उनकी हँसी से स्पष्ट लग रहा था कि वे खुश थे।

“यह सच है। आजकल पुरानी किताबें ज़्यादा नहीं बिकतीं। मेरे पिताजी के ज़माने में पुरानी किताबों की दुकानें खूब चलती थीं। लेकिन अब हालात अलग हैं। मेरा मतलब है कि प्रकाशन उद्योग तब वैसा नहीं था जैसा अब है, और टेलीविजन भी नहीं था। फिर भी, हमने छह साल पहले ऑनलाइन बिक्री शुरू की। और कभी-कभी हम कोई ऐसी किताब बेच देते हैं जिसकी बहुत मांग होती है और वह काफी महंगी बिकती है। हम किसी तरह काम चला रहे हैं। और हमारे पास साबू जैसे कई नियमित ग्राहक हैं, जो मेरे पिताजी के ज़माने से हमारे साथ हैं। ताकाको, क्या तुम पुरानी किताबों की दुकानों पर नहीं जाती?”
मैं कभी-कभी बुकऑफ जाता हूँ। वहाँ मैं मंगा पढ़ सकता हूँ।
“आजकल तो बस ऐसी ही बड़ी-बड़ी चेन वाली दुकानें ही हैं। लेकिन उन जगहों पर आपको दशकों पुराने लेखक की लिखी कोई किताब नहीं मिलेगी। उसकी कोई मांग ही नहीं है। फिर भी, इस दुनिया में बहुत से लोग हैं जिन्हें पुरानी किताबें पसंद हैं। यहाँ तक कि तुम्हारी उम्र की कुछ लड़कियाँ भी हैं। ऐसे लोगों के लिए यह जगह जन्नत है। और मैं भी उन्हीं लोगों में से एक हूँ।”
मुझे याद है कि आपका कमरा किताबों से भरा रहता था। आपने यह दुकान कब संभाली थी?
“मेरे पिता की मृत्यु के ठीक बाद की बात है। यानी लगभग दस साल? लेकिन यहाँ के बाकी दुकानदारों की तुलना में तो मैं अभी नया ही हूँ। वे सब तीस-चालीस साल से अपनी किताबों की दुकानें चला रहे हैं।”
वाह! यह तो अद्भुत है। यह लगभग समझ से परे है।
“ताकाको, तुम्हें कुछ किताबें पढ़नी चाहिए। तुम यहाँ रखी कोई भी किताब पढ़ सकती हो,” उसने मुस्कुराते हुए कहा।
मैं बस हंस पड़ा।

3

उस दिन के बाद मैं फिर कभी देर तक नहीं सोया, और किसी तरह दुकान में क्या करना है, यह समझ गया। सौभाग्य से, दोपहर तक कारोबार लगभग धीमा ही रहता था। मैं पीछे काउंटर पर बैठ जाता और खो जाता। एक बार जब मैं वहाँ सेट हो गया, तो मेरी दिनचर्या में ज़्यादा बदलाव नहीं आया। मैं सुबह सबसे पहले दुकान खोलता, अपने चाचा के आने और मुझे ड्यूटी से मुक्त करने तक दुकान संभालता। फिर मैं धीरे-धीरे ऊपर जाता, अपने गद्दे में खुद को लपेट लेता और सो जाता। मेरे कमरे में केवल बुनियादी ज़रूरत की चीज़ें ही थीं। मुझे यकीन है कि किसी और को यह कोई खास ज़िंदगी नहीं लगती, लेकिन मुझे इससे कोई दिक्कत नहीं थी। सच कहूँ तो, उस समय मैं इस दुनिया की चीज़ों को पीछे छोड़ने के लिए तैयार था।
मेरे चाचा सटोरू दोपहर बाद आते थे, ढीले-ढाले कपड़ों में, जो किसी सामान्य कंपनी में कभी स्वीकार्य नहीं होते। आते ही वे सबसे पहले खाता बही देखते, फिर ऑनलाइन ऑर्डर चेक करते, और उसके बाद काम से संबंधित किसी बात पर फोन पर चर्चा करने लगते।
मैं उसे फोन के दूसरी तरफ मौजूद व्यक्ति से शिकायत करते हुए सुन सकता था, जैसे वह कह रहा हो, "नहीं, बिलकुल नहीं" या "यह तो बहुत कठोर है, है ना?" या "अगर हम इससे उबर नहीं पाए तो..." हो सकता है कि वह व्यवसाय की मौजूदा स्थिति के बारे में शिकायत कर रहा हो, फिर भी उसकी आवाज़ में हमेशा कुछ न कुछ खुशी झलकती थी।
मुझे पुराने किताबों के कारोबार के बारे में जो बात पता नहीं थी, वह थी इसका इतना बड़ा नेटवर्क। मेरे चाचा के अनुसार, किताबों के विक्रेताओं का नेटवर्क और आपके निजी संबंध, नई किताबें लाने और दुकान में किताबों की कमी न होने देने में अहम भूमिका निभाते थे। मोरिसाकी बुकशॉप जैसी विशेष दुकान सिर्फ ग्राहकों द्वारा बेची जाने वाली किताबें खरीदकर अपना स्टॉक बनाए नहीं रख सकती थी। किताबों की दुकानों के संघ द्वारा आयोजित नियमित नीलामी, दुकानों के लिए अधिक पुरानी किताबें प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी।

“भले ही हम इसे एक स्वतंत्र व्यवसाय मानते हैं, लेकिन इस उद्योग में सबसे महत्वपूर्ण बात लोगों के साथ आपके संबंध हैं। मुझे लगता है कि यह बात शायद पूरी दुनिया पर लागू होती है,” उन्होंने खुद पर काफी गर्व जताते हुए कहा। फिर भी, मुझसे यह कहने वाले व्यक्ति और मेरे दादाजी द्वारा मेरे मन में बनी पुरानी किताबों की दुकान के मालिक की छवि में काफी अंतर था। मेरे दादाजी जिद्दी और अड़ियल थे, कम बोलने वाले इंसान थे। पारिवारिक समारोहों में, वे सभी रिश्तेदारों से घिरे हुए, समूह के केंद्र में शान से बैठते थे। बचपन में मैं उनसे मन ही मन डरता था, और मेरी दादी हमेशा हंसकर कहती थीं, "ये तो पुराने किताबों के विक्रेता हैं। बस ऐसे ही हैं।"
लेकिन उनकी तुलना में, मेरे चाचा जेलीफ़िश की तरह अस्थिर और अनिर्णायक थे। मैंने उनके साथ इतना समय पहले कभी नहीं बिताया था, लेकिन जितना ज़्यादा समय मैंने उनके साथ बिताया, उतना ही मैं उनके ढुलमुल स्वभाव से हैरान होता गया। मुझे तो यह भी ख्याल आया कि मेरी चाची मोमोको शायद तंग आकर भाग गई हों। और इन सबके बावजूद, नियमित ग्राहक आते रहे, गपशप करने के लिए तैयार।

हम दोनों काम के अलावा ज़्यादा बात नहीं करते थे, लेकिन लगभग एक हफ़्ता बीतने के बाद, मेरे चाचा का सब्र टूट गया। उन्होंने हैरानी भरे चेहरे से कहा, "ताकाको, तुम बस सोती ही रहती हो। तुम तो नींद की राक्षसी हो।"
“लगता है मैं सुस्ती के दौर से गुज़र रही हूँ,” मैंने ठंडे लहजे में जवाब दिया। मेरे चाचा मेरी निजी ज़िंदगी में दखल देने के लिए बेताब थे, लेकिन मैंने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया।
“पच्चीस साल की उम्र में?”
“बिल्कुल सही। जैसा कि वे कहते हैं, ‘सोता हुआ बच्चा बढ़ता हुआ बच्चा होता है।’”
“लेकिन आपके पास तो बहुत समय है। क्यों न आप टहलने चलें? यहाँ बहुत सारी दिलचस्प जगहें हैं। सुनिए, मैं बचपन से यहाँ आता रहा हूँ और मैं कभी इससे ऊबा नहीं हूँ।”
मैं ठीक हूँ। मुझे सोना ज़्यादा अच्छा लगेगा।
मुझे समझ आ गया था कि मेरे चाचा की बात अभी खत्म नहीं हुई है, लेकिन मैंने बातचीत रोक दी। उसके बाद, चाहे वो कुछ भी कहें, मैंने जवाब नहीं देने का फैसला किया। मैं एकदम चुप हो गया। अंदर ही अंदर मैं रूठ गया था।

बेशक, मेरे चाचा ने मेरी माँ से सब कुछ सुना होगा, इसलिए उन्हें मेरी ज़िंदगी में क्या चल रहा है, इसकी थोड़ी-बहुत जानकारी तो थी ही। फिर भी, उन्होंने बिना सोचे-समझे यूँ ही इस विषय को उठा दिया। मुझे गुस्सा आ गया। हमारे नियमित ग्राहक साबू को भी मेरी जिंदगी के बारे में सब कुछ पता था। एक दिन वह आया और बोला, "अरे, ये तो नींद का राक्षस है, ताकाको!"
“तुम्हें यह किसने बताया?” मैंने गुस्से से कहा। लेकिन ज़ाहिर है, यह सिर्फ मेरे चाचा ही बता सकते थे, जिनसे मैं वास्तव में नाराज़ था।
"क्या आप नियमित रूप से पंद्रह घंटे सोते हैं और फिर भी आपको नींद आती है?" मैं पंद्रह घंटे नहीं सोता। बल्कि तेरह घंटे ही सोता हूँ।
जब मैंने उसे सुधारा, तो साबू ने आश्चर्य से अपना सिर हिलाया।
"जब मैं बीस साल का था, तो मुझे सोने के लिए ज्यादा समय नहीं मिल पाता था।
मैं हमेशा पढ़ता रहता था।"
जब मैं सोने का फैसला करता हूं, तो मैं सो जाता हूं।
तुम जिद्दी हो, बिलकुल अपने चाचा की तरह।
“यह तो सरासर बेतुका है। आप मेरी तुलना उस मूर्ख से कैसे कर सकते हैं?” "तुम्हारे पास भी उसकी तरह ही अनोखा हास्यबोध है," साबू ने कहा और हंस पड़ी।
मैं उसके जैसा नहीं हूँ। कृपया हम दोनों को एक ही श्रेणी में न रखें। “नहीं, नहीं। उसे कम मत समझो,” साबू ने अचानक गंभीर होते हुए कहा। “वह आदमी भले ही मूर्ख हो, लेकिन वह इस दुकान का रक्षक भी है।”
“उद्धारकर्ता?” मैंने आँखें चौड़ी करते हुए जवाब दिया।
“हाँ, सही है। कभी उससे पूछ लेना।” बोलते हुए साबू ने मुझे एक समझदारी भरी नज़र से देखा। फिर थोड़ा दिखावा करते हुए उसने कहा, “अलविदा,” हाथ हिलाकर अलविदा कहा और दुकान से चला गया।
मुझे क्या फर्क पड़ता है, मैंने सोचा। मुझे इस बात में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं है कि मेरे चाचा खुद को उद्धारकर्ता समझते हैं या नहीं। मैं बस ऊपर जाकर कंबल ओढ़कर सोना चाहती हूँ।
फिर भी, मैं खुद हैरान थी कि मुझे कितनी नींद आ रही थी। मैंने साबू को बताया कि मैं दिन में तेरह घंटे सोती हूँ, लेकिन जिन दिनों दुकान बंद रहती थी, मैं दिन भर सोती रहती थी। मैं सोती ही रहती थी और काश मैं हमेशा सोती रह पाती। सपनों में मुझे उन भयानक बातों के बारे में सोचना नहीं पड़ता था।

मेरे सपने सबसे बेहतरीन, सबसे मीठे शहद जैसे थे। और मैं एक मधुमक्खी की तरह थी, जो और अधिक की तलाश में उड़ रही थी।
इसके विपरीत, जागते रहने के घंटों में कुछ भी अच्छा नहीं था। हालाँकि मैं उससे नफ़रत करती थी, फिर भी मैं लगातार हिदेकी के बारे में सोचती रहती थी। उसके हँसने का तरीका। उसके मेरे बालों को छूने का तरीका। मुझे उसकी हर बात पसंद थी: उसका थोड़ा आत्ममुग्ध होना, सुर न समझने की उसकी झिझक, और आसानी से रो पड़ना। मुझे पता था कि मैं बेवकूफ़ बन रही हूँ, लेकिन जब हम दोनों साथ होते थे, तो मैं सचमुच खुश होती थी, और वो यादें मेरे दिमाग की कोशिकाओं में इतनी गहराई से बस गई थीं कि मैं उन्हें मिटा नहीं सकती थी। कभी-कभी तो मुझे ये भी लगता था कि पिछली बार उसने मुझसे जो कुछ कहा था, वो सब झूठ था। कि वो बस मुझे चिढ़ा रहा था। “ये सब दिखावा है,” वो मुझसे कहता था। वो बस मेरे साथ थोड़ा मज़ाक करना चाहता था। और, ज़ाहिर है, ये सच नहीं था। अगर ये सच होता, तो मैं आज यहाँ नहीं होती।
इसलिए उस घटना को अपने दिमाग से निकालने और उसे याद करना बंद करने के लिए, मैं सोता रहा, शायद जिद्दीपन के कारण, शायद किसी और कारण से।
समय इतनी तेजी से बीत गया कि मैं कभी भी उसके साथ तालमेल नहीं बिठा पाया।

4

"ताकाको, क्या तुम अभी भी जाग रही हो?"
गर्मी के आखिरी दिनों में एक रात, मेरे चाचा ने स्लाइडिंग दरवाजे के दूसरी तरफ से मुझे आवाज़ दी। जब मैंने घड़ी देखी तो पता चला कि आठ बज रहे थे— किताबों की दुकान बंद होने का समय।
मैंने कंबल के नीचे से कहा, "मैं सो रहा हूँ।"
"अरे, सो रहे लोग इस तरह जवाब नहीं दे सकते।"
लेकिन मैं सो रहा हूँ। क्योंकि मैं—मुझे क्या कहते थे?—नींद का राक्षस हूँ, याद है ना?
मैंने दरवाजे के बाहर से उसकी हंसी सुनी।
“क्या तुम नाराज़ हो?” उसने कहा। “मैंने साबू से बात की।”
मुझे गुस्सा आ रहा है। तुमने कहा था कि मैं एक राक्षस की तरह हूँ।
“अच्छा, मुझे तुम्हारी चिंता थी, इसलिए मैंने उससे बात की। उसे भी तुम्हारी चिंता है। चलो, बाहर नहीं चलना चाहते? एक जगह है जहाँ मैं तुम्हें ले जाना चाहता हूँ। कैसा रहेगा?”
मैंने स्लाइडिंग दरवाजे की ओर मुंह करके जवाब दिया, "मैं ठीक हूँ।"
लेकिन मेरे चाचा अड़े रहे। “मुझ पर भरोसा रखो, तुम्हें पछतावा नहीं होगा। और फिर मैं वादा करता हूँ कि मैं तुम्हारी नींद में अब और दखल नहीं दूंगा।” “सचमुच?” मैंने संशय से पूछा।
"पक्का वादा करो। अगर मैं झूठ बोल रहा हूँ, तो तुम मुझे तीन सौ बार मार सकते हो।"
“यह मेरा वादा है।” जब मैंने स्लाइडिंग दरवाजे के छोटे से गैप से उसे घूरकर देखा, तो मैंने उसे मुस्कुराते और सिर हिलाते हुए देखा।
"मैं वादा करता हूँ।"
वह मुझे जिस जगह ले जाना चाहता था, वह मोरिसाकी बुकशॉप से बस कुछ ही दूरी पर थी।
“हम यहाँ पहुँच गए!” उसने एक छोटी सी गली में एक दुकान के सामने रुकते हुए कहा। यह एक पुरानी लकड़ी की कॉफी की दुकान थी जिसे मैंने शायद पहले कभी नहीं देखा था। मूंछों वाला एक बेहद सलीकेदार, अधेड़ उम्र का आदमी वहाँ का मालिक लग रहा था।

कॉफी शॉप का नाम, सेवूर, साइनबोर्ड की रोशनी में जगमगा रहा था और ऐसा लग रहा था मानो अंधेरे धुंध के ऊपर तैर रहा हो।
“यह मेरी पसंदीदा जगह है,” उन्होंने कहा। जैसे ही मेरे चाचा ने भारी दरवाजा खोला, हमें कॉफी की मनमोहक खुशबू महसूस हुई।
काउंटर पर रखे एक विशेष साइफन में उबलता पानी डाल रहे व्यक्ति ने हमारे अंदर आते ही हमारा अभिवादन किया।
"अरे, ये मेरी भतीजी ताकाको है।"
मैंने छोटे से काउंटर पर अपने चाचा के बगल में एक सीट ले ली और जल्दी से झुककर अभिवादन किया।
मूंछों के बिना भी, मालिक का पतला, सुशोभित चेहरा काफी गरिमापूर्ण होता। उनकी उम्र शायद चालीस के आसपास रही होगी। काश मेरे चाचा, जो उम्र के बावजूद बच्चे जैसे दिखते थे, उनका अनुसरण करते।
“मुझे तो मिक्स पसंद है। तुम्हारा क्या ख्याल है, ताकाको?”
"उम, मैं भी।"
मैंने मुड़कर अंदर चारों ओर देखा। वहाँ बहुत शांति का अनुभव हो रहा था। अंदर का हिस्सा हल्की लालटेन की रोशनी से जगमगा रहा था। मधुर पियानो संगीत बज रहा था। काली ईंट की दीवार पर पुराने ग्राहकों द्वारा बनाए गए चित्र और ग्राफ़िटी बनी हुई थी। ये सब मिलकर एक खूबसूरत माहौल बना रहे थे और कॉफी शॉप के गर्मजोशी भरे, सुकून भरे वातावरण से मेल खा रहे थे। मुझे लगा, यहाँ कितना अच्छा है! बहुत समय बाद, मेरे अंदर खुशी उमड़ रही थी। और मुझे थोड़ा बेहतर, थोड़ी कम थकान महसूस हो रही थी।
“यह जगह पचास साल से है,” मेरे चाचा ने समझाया। “पुराने समय में, बहुत से प्रसिद्ध लोग यहाँ आया करते थे।”
“वाह! मुझे यकीन है कि ऐसा माहौल बनाना आसान नहीं रहा होगा,” मैंने सिर हिलाते हुए कहा। “यह बहुत सुकून देने वाला है।”
लगभग पांच मिनट बाद, एक वेट्रेस हमारे लिए कॉफी लेकर आई।
"शुभ संध्या, श्री मोरिसाकी।"
"हे टोमो, ये मेरी भतीजी ताकाको है।"
मैंने झुककर कहा, "आपसे मिलकर अच्छा लगा।"
टोमो मुस्कुराया और उसने नमस्ते कहा।

मेरे चाचा ने कहा, "टोमो हमारी नियमित ग्राहकों में से एक है। वह पढ़ने की बहुत शौकीन है।"
“अरे, मैं कोई खास नहीं हूँ,” उसने शर्माते हुए मुस्कुराते हुए कहा। वह लगभग मेरी ही उम्र की थी, शायद मुझसे थोड़ी छोटी। उसकी त्वचा गोरी थी और गाल गोल-मटोल और भरे हुए थे। उसके बोलने के अंदाज़ में एक अलग ही कोमलता थी। और वह अपने काले एप्रन में बहुत प्यारी लग रही थी। मुझे लगा कि हमारी अच्छी दोस्ती हो सकती है। मेरा मूड अच्छा हो गया।
“क्या बात है, ताकाको? तुम्हें लड़कियाँ पसंद हैं? यहाँ लड़के भी तो हैं।” मेरे चाचा ने काउंटर के दूसरे छोर की ओर इशारा करते हुए कहा, “हे, ताकानो!” एक लंबा, पतला युवक रसोई के पर्दे में बने एक छेद से अपना सिर बाहर निकाल लाया।
“ताकानो! क्या तुम कभी मेरी भतीजी को डेट पर नहीं ले जाओगे?”
“अरे!” मैंने चिल्लाकर अपने चाचा के हाथ पर थप्पड़ मारा।
ताकानो काफी शर्मीला लग रहा था। बस यही देखकर उसका चेहरा एकदम लाल हो गया। “ताकानो यहाँ इसलिए ट्रेनिंग ले रहा है ताकि वो एक दिन अपना खुद का कैफे खोल सके। लेकिन वो हमेशा गड़बड़ ही करता है, इसलिए मालिक उसे लगातार डांटता रहता है।” डांट पड़ने वाली बात कहते हुए मेरे चाचा सचमुच खुश लग रहे थे।
"आइए, उसकी प्रतिष्ठा को धूमिल करना शुरू न करें," मालिक ने बीच में ही कहा।
मुझे ताकानो पर तरस आया, लेकिन वह इतना लड़खड़ा रहा था कि ज़रा सा धक्का देने पर ही गिर सकता था। अंततः उसने अनजाने में ही मेरे चाचा की बात को सच साबित कर दिया।
मेरे चाचा का मूड बाद में भी अच्छा था। पास में बैठी एक अधेड़ उम्र की महिला ने पुकारा, "अरे, सटोरू!"
“ओह, श्रीमती शिबामोतो!” उसने कहा और पूंछ हिलाते हुए उनके पास चला गया। तभी दूसरी मेज पर बैठे किसी और ने उसका नाम पुकारा, और वह झट से उनके पास चला गया।
किताबों की दुकान पर मेरे चाचा ज़्यादातर चीज़ों को नियंत्रण में रखते थे, लेकिन जैसे ही वह दुकान से बाहर कदम रखते, उनका व्यवहार बिलकुल बदल जाता था। मैंने गहरी साँस ली, मानो कोई पालतू कुत्ता उसे घसीट रहा हो।

“सटोरू यहाँ काफी लोकप्रिय है।” कैफे के मालिक ने व्यंग्यात्मक हंसी हंसते हुए कहा। जब वह मुस्कुराया, तो उसकी आंखों के आसपास की झुर्रियों ने उसे दयालु बना दिया।
मैंने व्यंग्य भरे लहजे में कहा, "कम से कम, वो बहुत मिलनसार तो है ही। लेकिन सच में, मैंने पहली बार इतनी बढ़िया कॉफ़ी पी है। और मुझे इस जगह का माहौल बहुत पसंद आया। ये बहुत ही शानदार है।"
मालिक ने हल्की सी हंसी हंसते हुए कहा, "बहुत-बहुत धन्यवाद। जब युवा पहली बार यहां आते हैं, तो वे इसे एक नए नजरिए से देखते हैं। यह मेरे लिए बहुत मायने रखता है। आपका नाम ताकाको है, है ना? क्या आप इस इलाके में नए हैं?" “यह मेरा पहला अनुभव है। मैंने अभी-अभी अपने चाचा की दुकान में रहना शुरू किया है।”
“मोरिसाकी बुकशॉप में? वह तो बहुत बढ़िया जगह है। मुझे उम्मीद है कि आप जिम्बोचो में जीवन का आनंद लेंगे।”
मैंने मुंह बनाया और हल्की सी आह भरी।
"क्या गलत?"
मेरे चाचा भी यही बात कहते हैं।
“यह बात समझ में आती है। इस मोहल्ले को तुम्हारे चाचा से ज्यादा कोई प्यार नहीं करता।”
मैंने फिर आह भरी। “मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा। लेकिन जब मैंने कहा था कि आपका कैफे शानदार है, तो मैं झूठ नहीं बोल रही थी। मैं निश्चित रूप से वापस आना चाहूंगी।”
“कभी भी,” उसने कहा और मुझे एक बड़ी सी मुस्कान दी।

हम कैफे में इतनी देर तक रुके रहे कि जब हम निकले तो काफी शाम हो चुकी थी। मैं और मेरे चाचा आस-पड़ोस में यूं ही घूमने निकल पड़े। रात की ठंडी हवा मेरे चेहरे पर लग रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे पतझड़ का मौसम आ गया हो। मेरे चाचा ने जो एक बियर मंगाई थी, उससे ही उन्हें नशा सा हो गया था। वे मेरे आगे-आगे चल रहे थे, थोड़ा लड़खड़ाते हुए और बड़बड़ाते हुए कह रहे थे कि रात कितनी अच्छी थी।
तब मुझे एहसास हुआ कि बचपन के बाद यह पहली बार था जब हम इस तरह साथ में सैर पर निकले थे। उस समय हम दादाजी के घर के पास दिनभर हाथ में हाथ डालकर घूमते

रहते थे, मानो कोई नई जगह खोज रहे हों। आखिर उसमें इतना मज़ा क्यों आता था? मैं हमेशा उत्साह से खिलखिलाती रहती थी।
उन दिनों मेरे चाचाजी एक प्यारे बड़े भाई की तरह लगते थे। मुझे लगता है कि इकलौती संतान के लिए, खासकर मेरे जैसी, जो अपनी ही सोच में डूबी रहती है, ऐसे किसी व्यक्ति के साथ समय बिताने को लेकर इतना उत्साहित होना स्वाभाविक है।
जैसे ही मेरा मन उस समय की यादों में खो गया, जीवंत यादें मेरे सामने लौट आईं... हम दोनों उसके छोटे से अस्त-व्यस्त कमरे में थे, वह गिटार पर बेतरतीब ढंग से बीटल्स के गाने बजा रहा था, और हम दोनों गा रहे थे... या फिर घंटों ओसामु तेजुका और शोटारो इशीनोमोरी की मंगा पढ़ते हुए, पूरी तरह से मग्न रहते थे।
इन यादों ने मुझे अपने चाचा के प्रति फिर से वही आत्मीयता का एहसास कराने लगा, जब वह मेरे आगे चल रहे थे।
“अंकल सटोरू?” जब मैंने उन्हें पुकारा तो उनकी पीठ मेरी तरफ थी।
“हाँ?” मेरे चाचा मुड़े और अपनी उन मासूम आँखों से मुझे घूरने लगे।
"जब तुम मेरी उम्र के थे तब क्या कर रहे थे?"
मुझे लगता है कि मैं बस हर समय पढ़ता रहता हूँ।
“बस इतना ही?” मुझे थोड़ी निराशा हुई। “यह तो अभी से कुछ खास अलग नहीं लगता।”
"इसके अलावा यात्रा भी।"
“यात्रा कर रहे हो?”
“हां, मैं जापान में थोड़ा-बहुत काम करता था, कुछ पैसे बचाता था, इस तरह से। फिर मैं बैकपैकिंग करता था। मैं कई जगहों पर गया—थाईलैंड, लाओस, वियतनाम, भारत, नेपाल। मैंने यूरोप की भी सैर की।”
मेरे चाचा इतने साहसी थे, यह सोचकर मैं आश्चर्यचकित रह गया।
“ऐसा करने की इच्छा आपको क्यों हुई? क्या आपने कोई नियमित नौकरी करने के बारे में नहीं सोचा?”
“हम्म…” उन्होंने अपनी बाहें मोड़ीं और धीरे-धीरे बोले, मानो वे अपने जीवन के उस दौर को याद कर रहे हों। “संक्षेप में कहूँ तो, मैं पूरी दुनिया को खुद देखना चाहता था। मैं संभावनाओं की हर सीमा को देखना चाहता था। आपका

जीवन आपका है। यह किसी और का नहीं है। मैं जानना चाहता था कि अपने हिसाब से जीवन जीने का क्या अर्थ होता है।”
मैंने खुद को सहमति में सिर हिलाते हुए पाया, लेकिन जापान से भागकर अपने जीवन की संभावनाओं की तलाश में निकलना और अंत में किताबों की दुकान चलाना, कुछ हद तक विरोधाभासी लग रहा था।
फिर भी, उनकी बातें सुनकर मुझे एहसास हुआ कि बचपन से मेरे मन में उनके बारे में जो धारणा थी, उससे वे कितने अलग थे। अब जब मैं वयस्क हो गई हूँ, तो मुझे लगता है कि मैं उनकी भावनाओं को थोड़ा-बहुत समझ सकती हूँ। कॉलेज में, मैं एक ऐसा जीवन जीने का सपना देखती थी जो मेरे अपने मूल्यों और मेरी अपनी समझ के अनुरूप हो। बेशक, जब वास्तविक दुनिया में उस सपने को साकार करने का समय आया, तो मैंने पाया कि मुझमें वह साहस ही नहीं था।
शायद यही वह रहस्य था जिसकी वजह से वह इतना बेफिक्र और स्वतंत्र रह पाता था।
मुझे उससे थोड़ी जलन महसूस हुई।
“खैर, मुझे लगता है कि मैंने अपनी जवानी के बीस साल इसी तरह भटकते हुए बिताए। मेरे पिता हमेशा मुझसे नाराज़ रहते थे। और फिर एक दिन, इन सबके बीच, उनका अचानक निधन हो गया। और अंततः मैंने उनकी दुकान संभाल ली।”
"आपको इसका पछतावा है?"
“बिल्कुल नहीं,” उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा। “इस नौकरी से बेहतर मेरे लिए कोई और नौकरी नहीं है। किताबों से प्यार करने वाले व्यक्ति के लिए इससे बेहतर जगह कोई नहीं हो सकती। मुझे यहाँ दुकान होने पर गर्व है। मैं अपने पिता और दादाजी का जितना भी धन्यवाद करूं, कम है।”
"यह बहुत अच्छा है।"
“क्या है?” मेरे चाचा ने उलझन भरे भाव से मेरी ओर देखा।
"इसका मतलब है कि आप वही कर रहे हैं जो आप चाहते हैं, और आप उसी से अपनी जीविका कमा रहे हैं।"
“यह पूरी तरह सच नहीं है। शुरुआत में मैंने इसका बहुत विरोध किया था। मतलब, अपने पिता से दुकान संभालना वो सपना नहीं था जो मैंने बचपन में देखा था। आज भी मैं इस बारे में सोचती रहती हूँ। लेकिन, मुझे नहीं पता, शायद अपनी असली तलाश को समझने में लंबा समय लगता है। शायद आप पूरी जिंदगी बस उसके एक छोटे से हिस्से को समझने में ही बिता देते हैं।”

मुझे नहीं पता। मुझे लगता है कि शायद मैं अपना समय यूं ही बर्बाद कर रहा हूं, कुछ नहीं कर रहा हूं।
“मुझे ऐसा नहीं लगता। कभी-कभी ठहरना ज़रूरी होता है। इसे अपने जीवन की लंबी यात्रा में एक छोटा सा विश्राम समझें। यह आपका बंदरगाह है। और आपकी नाव यहाँ कुछ देर के लिए लंगर डाल रही है। और जब आप अच्छी तरह से आराम कर लेंगे, तो आप फिर से यात्रा शुरू कर सकते हैं।”
मैंने चिढ़कर कहा, "तुम अभी तो ऐसा कह रहे हो, लेकिन जब मैं सो रहा होता हूँ तब शिकायत करते हो।"
वह हँसा। "मनुष्य विरोधाभासों से भरा हुआ है।"
मुझे पता ही नहीं चला कि मैं मुंह फुला रही थी। खासकर इस लड़के के लिए, मैंने सोचा।
"तो, जब आप यात्रा कर रहे थे और उन सभी किताबों को पढ़ रहे थे, तो आपने बहुत कुछ सीखा होगा, है ना?"
“यह अजीब बात है। आप कहीं भी चले जाएं, या कितनी भी किताबें पढ़ लें, फिर भी आप कुछ नहीं जानते, आपने कुछ नहीं देखा। और यही जीवन है। हम अपना जीवन अपना रास्ता खोजने की कोशिश में बिताते हैं। यह संतोका तानेदा की उस कविता की तरह है, जिसमें कहा गया है, 'आगे बढ़ते रहो, अंदर जाते रहो, और फिर भी नीले- हरे पहाड़ ही दिखते हैं।'”
“अंकल?” मैंने सोचा कि शायद यही वह मौका है जब मैं उनसे वह सवाल पूछ सकता हूँ जो मैं उनसे हमेशा से पूछना चाहता था।
"हाँ?"
“मौसी मोमोको क्यों चली गईं?”
हम्म... चीजों को देखने का हमारा नजरिया एक जैसा है। इसी वजह से हम एक-दूसरे के करीब आए थे, और मुझे लगता है कि यही हमारे अलग होने का कारण भी है। हम सफर के बीच में मिले और हमें प्यार हो गया। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम हमेशा साथ-साथ सफर करेंगे। एक मोड़ पर, हर किसी को अपना ठिकाना ढूंढना पड़ता है। मैंने हमेशा सोचा था कि हम अंत तक साथ रहेंगे। दुर्भाग्य से, ऐसा नहीं हो पाया।
“जब ऐसा हुआ तो कैसा लगा...? क्या आपको दुख हुआ था?”
उसने आसमान को ढकने वाले घने बादलों की ओर देखा। “बेशक, यह दुखद था, लेकिन…”

"लेकिन?"
लेकिन, वह अभी जहां भी हो और जो भी कर रही हो, मैं चाहती हूं कि वह खुश रहे। “फिर भी…” मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वह ऐसा कैसे महसूस कर सकता है। “क्या उसने तुम्हें छोड़कर नहीं चली गई थी?”
लेकिन मोमोको ही वो अकेली महिला है जिसे मैंने सच्चे दिल से प्यार किया है। ये बात कभी नहीं बदलेगी। और हमारे साथ बिताए पलों की सारी यादें आज भी मेरे दिल में बसी हैं। इसलिए, इस लिहाज से मैं आज भी उससे प्यार करता हूँ। मैं उससे पूछना चाहता था कि क्यों, लेकिन पीछे से उसका चेहरा इतना उदास लग रहा था, स्ट्रीटलाइट में वह इतना छोटा दिख रहा था, कि मैंने फैसला किया कि मैं और कुछ नहीं कह सकता।

उस रात, न जाने क्यों, मुझे नींद नहीं आई। मैं अजीब तरह से बेचैन था। आधी रात को भी मैं करवटें बदलता रहा। काफी देर तक मैं अपने गद्दे पर पड़ा रहा, संघर्ष करता रहा। ये सारे विचार मेरे दिमाग में उमड़ रहे थे, उसे इस कदर भर रहे थे कि मुझे लगा जैसे वो फट जाएगा। ये दर्द भरी यादें, मेरे पुराने जीवन की यादें, बार-बार मेरे दिमाग में घूमती रहीं। उन्होंने मेरे मन पर कब्ज़ा कर लिया था।
ये तो बहुत बुरा है, मैंने सोचा। मैं अचानक उठ बैठी। मैंने मन ही मन कहा, अगर मैंने कुछ नहीं किया तो मैं यहाँ दम घुटकर मर जाऊँगी। मैंने सोचा कि शायद टीवी देख लूँ, लेकिन फिर मुझे याद आया कि इसके लिए मुझे पहले किताबों के उन ढेरों को फिर से व्यवस्थित करना पड़ेगा। सुबह के तीन बज रहे थे। बाहर कहीं भी जाने पर कुछ भी खुला नहीं था।
जब मैं अंधेरे में घूर रहा था, तो मेरी इच्छा हुई कि काश मेरे पास पढ़ने के लिए कोई किताब होती... कम से कम समय तो बीत जाता।
तभी मुझे अचानक समझ आया। क्या यह किताबों की दुकान नहीं है? मैं सचमुच किताबों के बीच डूब रहा था। मैं उनका असली मकसद पूरी तरह भूल चुका था क्योंकि तब तक मैं उन्हें कमरे में एक शत्रुतापूर्ण उपस्थिति के रूप में ही देख रहा था।
मैंने बत्ती जलाई और कोई दिलचस्प किताब ढूंढने के लिए इधर-उधर देखने लगा। लेकिन मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि कौन सी किताब दिलचस्प हो सकती है। सारी किताबें पुरानी और धूल से भरी हुई लग रही थीं। हालांकि, मुझे पूरा

यकीन था कि मेरे चाचा आसानी से उनमें से कुछ ऐसी किताबें चुन सकते थे जो उन्हें बहुत पसंद हों।
मैं असमंजस में पड़ गया और किताबों के पहाड़ जैसे विशाल ढेर के सामने खड़ा होकर अपनी आँखें बंद कर लीं। फिर मैंने हाथ बढ़ाया और जो पहली किताब मेरे हाथ लगी, उसे उठा लिया। उसका शीर्षक था 'लड़की की मृत्यु तक'। लेखक थे साइसेई मुरो। मैंने हाई स्कूल में आधुनिक साहित्य की कक्षा में उनका नाम पहले सुना था, लेकिन बस इतना ही।
तो उस धुंधले कमरे में, तकिए के पास रखे एक छोटे से दीपक की हल्की रोशनी में, मैं कंबल ओढ़कर पढ़ने लगा। मेरी उम्मीद थी कि किताब इतनी उबाऊ होगी कि मुझे तुरंत नींद आ जाएगी। लेकिन एक अजीब बात हुई। एक घंटे बाद, मैं पूरी तरह से उसमें डूब गया था। हाँ, कुछ अंश थोड़े कठिन थे, लेकिन किताब का विषय मानव मनोविज्ञान था, जो सार्वभौमिक है।
कहानी नेज़ू में अपना जीवन शुरू करने की कोशिश कर रहे एक व्यक्ति के इर्द-गिर्द घूमती है। कनाज़ावा में अपना बचपन बिताने के बाद, वह कवि बनने के अपने सपने को पूरा करने के लिए टोक्यो चला जाता है। वहाँ उसका एक ऐसी महिला से रिश्ता बन जाता है जो उसके एक दोस्त और उसकी सौतेली बहन की प्रेमिका है। टोक्यो में गरीबी से जूझते हुए, जब उसका गुजारा करना नामुमकिन होता है, तभी संयोग से उसकी मुलाकात कहानी की नायिका से होती है। उसी से रिश्ते के ज़रिए उसका टूटा हुआ दिल कुछ समय के लिए ही सही, ठीक होने लगता है।
मुख्य पात्र कठिन परिस्थितियों में पला-बढ़ा है और उसने एक निराशाजनक युवावस्था से उबर लिया है, लेकिन किसी तरह पूरी कहानी एक शांत कोमलता से ओतप्रोत है।
धीरे-धीरे, मुझ पर एक ऐसी शांति का अहसास छा गया जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। अगर मुझे इसे समझाना हो, तो मैं यही कहूंगा कि यह केवल लेखक के जीवन के प्रति अटूट प्रेम से ही उत्पन्न हो सकता था।
जब मैंने ऊपर देखा, तो मुझे एहसास हुआ कि रात ढल रही है और दिन निकलने लगा है। मैं एक-एक पन्ने पलटते हुए पढ़ता रहा।

उस दिन जब अंकल सटोरू आए, तब भी मैं बहुत उत्साहित महसूस कर रहा था।
आम तौर पर मैं मुश्किल से ही उसे नमस्कार करता था, इसलिए जब मैं अचानक खड़ा हुआ, तो उसने आश्चर्य से मेरी ओर देखा।

मेरे हाथ में 'अंटिल द डेथ ऑफ द गर्ल' किताब थी। मैंने उससे कहा, "यह किताब अच्छी थी।"
उनकी प्रतिक्रिया कैसी रही? अचानक, मेरे चाचा का चेहरा खुशी से चमक उठा— बिल्कुल उस बच्चे की तरह जिसे जन्मदिन का शानदार तोहफा मिला हो।
“सच में? आपको पसंद आया?” मेरे चाचा इतने उत्साहित थे मानो यह घटना उनके साथ ही घटी हो।
“हाँ, यह अद्भुत था,” मैंने कहा। “मैं इसे शब्दों में बयान नहीं कर सकती। इसने मेरे दिल को छू लिया।” मैं निराश थी कि मुझे इससे बेहतर शब्द नहीं सूझ रहा था। “इसने मेरे दिल को छू लिया” शब्द मेरे भीतर चल रही जटिल भावनाओं को पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकता था।
“बिल्कुल नहीं! यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैं बेहद प्रसन्न हूँ। लेकिन सीधे मुरो साइसेई जाना, यह तो सीधे गहरे पानी में कूदने जैसा है।”
मेरे चाचा इतने खुश थे कि उनकी खुशी देखकर मुझे भी कहीं न कहीं खुशी मिल गई।
हमने कुछ देर किताब के बारे में बात की। किसी ऐसे व्यक्ति से जुड़ाव महसूस करना बेहद सुखद था, जिसके साथ मुझे लगता था कि मेरी कोई समानता नहीं है। यह रोमांचकारी था, भले ही यह मेरे चाचा जैसे किसी व्यक्ति से ही क्यों न हो— नहीं, यह रोमांचकारी था क्योंकि यह उनके जैसा व्यक्ति था।

ऐसा लगा मानो अनजाने में ही मैंने एक ऐसा दरवाजा खोल दिया हो जिसके अस्तित्व के बारे में मुझे कभी पता ही नहीं था। बिल्कुल यही एहसास हुआ। उस पल से मैंने लगातार एक के बाद एक किताबें पढ़ना शुरू कर दिया। ऐसा लगा मानो पढ़ने का शौक मेरे भीतर कहीं गहरे में सोया हुआ था और अचानक जाग उठा हो।
मैं धीरे-धीरे पढ़ता था, हर किताब का एक-एक करके आनंद लेता था। उस समय मेरे पास दुनिया का सारा समय था। और चाहे मैं कितना भी पढ़ लूँ, किताबों की कमी होने का कोई खतरा नहीं था।
काफू नागाई, जुनइचिरो तानिज़ाकी, ओसामु दाज़ाई, हारुओ सातो, रयुनोसुके अकुतागावा, कोजी उनो... मैंने इन लेखकों की रचनाएँ बड़े चाव से पढ़ीं, जिनके नाम तो मुझे पता थे लेकिन मैंने उनकी रचनाएँ पढ़ी नहीं थीं, जिनके नाम मैंने कभी सुने तक नहीं थे, कोई भी किताब जो मुझे दिलचस्प लगी। और फिर

भी, इतनी सारी किताबें पढ़ने के बावजूद, मुझे ऐसी कई किताबें मिलीं जिन्हें मैं अभी भी पढ़ना चाहता था।
मैंने इससे पहले कभी ऐसा कुछ अनुभव नहीं किया था। इसने मुझे ऐसा महसूस कराया जैसे मैं अब तक अपना जीवन व्यर्थ ही व्यतीत कर रहा था।
मैंने हर समय सोने की आदत छोड़ देने का फैसला किया। अब इसकी कोई ज़रूरत नहीं रह गई थी। जब मेरे चाचा ने किताबों की दुकान का काम संभाल लिया, तो सोने में पनाह लेने के बजाय, मैं अपने कमरे में या किसी कैफे में जाकर पढ़ने लगा।
इन पुरानी किताबों में मेरी कल्पना से कहीं अधिक इतिहास समाहित था। यह केवल किताबों की विषयवस्तु तक ही सीमित नहीं था। प्रत्येक खंड में मुझे बीते वर्षों के निशान मिले।
उदाहरण के लिए, मोटोजीरो काजी की पुस्तक 'लैंडस्केप्स ऑफ द हार्ट' के एक पृष्ठ पर मुझे यह अंश मिला:
देखने की क्रिया कोई छोटी बात नहीं है। किसी चीज को देखना उसके द्वारा मोहित हो जाना है। कभी-कभी यह आपके एक हिस्से को अपने साथ ले जाता है, कभी- कभी यह आपकी पूरी आत्मा को।
अतीत में कभी न कभी, इस पुस्तक को पढ़ने वाले किसी व्यक्ति को इन शब्दों के नीचे कलम खींचने की प्रेरणा मिली होगी। यह सोचकर मुझे खुशी हुई कि चूंकि मुझे भी उसी अंश से प्रेरणा मिली थी, इसलिए अब मैं उस अजनबी से जुड़ गया हूँ।
एक बार मुझे संयोगवश एक सूखा फूल मिला जिसे किसी ने बुकमार्क के रूप में छोड़ दिया था। उस मुरझाए हुए फूल की खुशबू सूंघते हुए, मैं उस व्यक्ति के बारे में सोचने लगी जिसने उसे वहाँ रखा था। आखिर वह कौन थी? वह कब जीवित थी? वह क्या महसूस कर रही होगी?
पुरानी किताबों में ही ऐसे सुखद अनुभव मिलते हैं, समय से परे के जुड़ाव का आनंद मिलता है। और इसी तरह मुझे उस पुरानी किताबों की दुकान से प्यार हो गया, जहाँ ये किताबें मिलती थीं - हमारी मोरिसाकी बुकशॉप। मुझे एहसास हुआ कि मुझे कितना अनमोल अवसर मिला है, उस छोटी सी जगह का हिस्सा बनने का, जहाँ समय का शांत प्रवाह महसूस किया जा सकता है।
नतीजतन, मुझे उन लेखकों के बारे में काफी जानकारी हो गई जिनकी किताबें हम बेचते थे। देखते ही देखते, मैं अपने नियमित पाठकों के भी करीब आ गई। जब

साबू ने महसूस किया कि मुझमें कुछ बदलाव आया है, तो उसने मेरे बारे में अपनी पुरानी राय बदल दी। उसने कहा, "अरे, ताकाको, तुम तो इसमें दिलचस्पी लेने लगी हो, है ना?"
एक और बदलाव आया: मैंने आस-पड़ोस में टहलना शुरू कर दिया। यह लगभग वही समय था जब मौसम पूरी तरह से ठंडा हो गया था, जो घूमने-फिरने के लिए एकदम सही मौसम था।
दिन-ब-दिन सड़कों के किनारे लगे पेड़ों के पत्ते सुनहरे रंग के होते गए। यह देखकर मुझे बहुत खुशी हुई कि बदलते रंग मेरे अंदर हो रहे धीमे परिवर्तन से कितनी खूबसूरती से मेल खा रहे थे।
जैसे-जैसे मैं घूमता गया, मुझे जिम्बोचो में अपने पहले आगमन के समय से यह इलाका बिल्कुल अलग लगा। अब, पूरा इलाका किसी रोमांचक साहसिक यात्रा के लिए उपयुक्त लग रहा था। यह वाकई रोमांचक था। वैसे भी, सड़कों और गलियों में इतनी सारी जगहें थीं जहाँ मैं रुककर देखना चाहता था। इस छोटे से इलाके में, जहाँ पुरानी किताबों की दुकानें, कॉफी शॉप और विदेशी बार थे, शहर के केंद्र जैसा माहौल था। और इन सबके बावजूद, यहाँ का वातावरण इतना अराजक नहीं था कि मुझे असहज लगे। पूरा इलाका एकदम शांत था।
यहीं पर मुझे आखिरकार एहसास हुआ कि भले ही हम उन सभी को "किताबों की दुकानें" कहते हैं, लेकिन हर दुकान की अपनी एक अलग ही खासियत होती है।
वे अपनी-अपनी खासियतों के आधार पर बंटे हुए थे: कुछ सिर्फ उपन्यास बेचते थे, कुछ सिर्फ विदेशी साहित्य, या ऐतिहासिक उपन्यास। कुछ दुकानें तो सिर्फ फिल्म पत्रिकाएँ, बच्चों की किताबें, या पारंपरिक शैली में जिल्दबंद एदो युग के ग्रंथ भी बेचती थीं। यहाँ हर तरह के दुकानदार भी थे। कुछ मेरे चाचा जैसे जिद्दी बूढ़े थे, लेकिन कुछ युवा और नरम स्वभाव के भी थे। एक दिन मैं स्वागत केंद्र पर रुका, और उन्होंने मुझे बताया कि यहाँ वास्तव में 170 से भी ज़्यादा किताबों की दुकानें हैं। जैसा कि मेरे चाचा ने कहा था, यह सचमुच किताबों की दुकानों के लिए दुनिया का सबसे बेहतरीन इलाका था।
जब चलते-चलते मैं थक जाता, तो आराम करने के लिए किसी कॉफी शॉप पर रुक जाता। गर्म कॉफी इस ठंडे मौसम के लिए एकदम सही थी। सैर के अंत में एक कप कॉफी पीकर मुझे अंदर तक सुकून मिलता था।

जैसे-जैसे पतझड़ का मौसम गहराता गया, मैंने दिन-ब-दिन इसी तरह बिताए। मुझे पूरा यकीन है कि मेरी इस नई दिनचर्या ने मेरे मूड को बेहतर बनाने में मदद की। मेरे अंदर अभी भी कुछ उलझनें थीं, लेकिन ऐसा लग रहा था कि जितना ज़्यादा मैं चलती थी, उतनी ही वो कम होती जा रही थीं।
शायद इसी वजह से उस समय से मेरी आस-पड़ोस के लोगों से जान-पहचान बढ़ने लगी। मैं सेवूर कॉफी शॉप का नियमित ग्राहक बन गया और मालिक व कर्मचारियों, खासकर वेट्रेस टोमो के साथ मेरी अच्छी दोस्ती हो गई।
तोमो जापानी साहित्य में प्रथम वर्ष की स्नातकोत्तर छात्रा थी और अपने खाली समय में सेवूर में काम करती थी। कभी-कभी वह मोरिसाकी बुकशॉप में ग्राहक बनकर आती थी। मुझसे दो साल छोटी, वह शांत और संकोची दिखती थी, लेकिन भीतर से वह बेहद भावुक थी। साहित्य की स्नातकोत्तर छात्रा से जैसी उम्मीद की जा सकती है, लेखकों के प्रति उसका प्रेम अतुलनीय था। ज्ञान का यह भंडार उन चीजों में से एक था जिसकी मैं उसकी प्रशंसा करता था।
इसी समय के आसपास, टोमो काम से घर लौटते समय दुकान पर आने लगी, भले ही वह कुछ खरीदने के इरादे से न भी हो, और हम दोनों दूसरी मंजिल पर मेरे कमरे में जाते और किताबों से घिरे हुए एक साथ चाय पीते।
जब वह पहली बार मेरे कमरे में आई, तो उसका चेहरा चमक उठा। "यह जगह अद्भुत है। यह किसी सपने जैसी है।"
“सच में? ये तो बहुत छोटा है—और इसमें गैस स्टोव भी नहीं है।” चूंकि मैं खुद वहां रहती थी, इसलिए मैंने उसे अपनी खरी राय दी। कम से कम सुविधा के मामले में तो उस जगह की कोई तारीफ करने लायक बात ही नहीं थी।
“क्या ये चीज़ें वाकई इतनी ज़रूरी हैं?” टोमो ने ऐसे कहा जैसे मुझे ही बात समझ नहीं आ रही हो। “यहाँ एक भी चीज़ फालतू नहीं है। आप हाथ बढ़ाते हैं और किताबें वहीं होती हैं। है ना कमाल की बात?”
"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"
“यह सच है,” उसने अपना चेहरा मेरे करीब लाते हुए कहा। उसकी आँखें चमक उठीं। मैंने कमरे में एक बार फिर नज़र घुमाई। यह अजीब था—पता नहीं कैसे मेरे कमरे को लेकर उसकी उत्सुकता ने उस जगह को नीरस से खूबसूरत बना दिया था। उसने सुझाव दिया कि हम कोने वाली फूलों की दुकान से कुछ फूल खरीदकर कमरे को और भी सुंदर बना सकते हैं। हमने कॉसमॉस की कलियों को एक फूलदान में सजाया

और उसे छोटी मेज पर रख दिया। उसके बाद कमरा बहुत ज़्यादा रोशन लगने लगा। उस पल से, मैं हमेशा उस जगह को मौसमी फूलों से सजाती हूँ।
एक दिन जब हम काफी करीब आ रहे थे, हम साथ में चाय पी रहे थे और अचानक मैंने उससे कुछ पूछने का फैसला किया।
"टोमो, तुम्हें किताबों में इतनी दिलचस्पी कैसे हो गई?"
उन्होंने उसी कोमल स्वर में मुझे उत्तर दिया। “यह एक अच्छा प्रश्न है। जब मैं माध्यमिक विद्यालय में थी, तब मैं बेहद शर्मीली थी। मुझे लोगों को अपने विचार बताने में डर लगता था। और इसी वजह से मेरे अंदर कई तरह की दबी हुई भावनाएँ उमड़ रही थीं। मैं एक भयानक शर्मिंदगी ढो रही थी। तभी मैंने ओसामु दाज़ाई की किताब 'स्कूलगर्ल' पढ़ी। यहीं से मेरी शुरुआत हुई। अब तो मुझे पढ़ने की पूरी तरह से लत लग गई है।”
मैंने प्रशंसा करते हुए कहा, "मुझे लगता है कि हर गंभीर पाठक अपने जीवन में कभी न कभी ऐसी किताब पढ़ता है। और वे उस अनुभव को कभी नहीं भूलते।" "उम्मीद है कि भविष्य में हम दोनों को कुछ बेहतरीन किताबें पढ़ने को मिलेंगी," टोमो ने मुस्कुराते हुए कहा।
मैंने पूरे मन से सहमति जताते हुए कहा, "मुझे उम्मीद है ऐसा ही होगा।" उसके बाद, टोमो से जुड़ी एक और घटना घटी।
एक दोपहर जब मैं अकेले दुकान संभाल रहा था, तभी सेवूर में काम करने वाला ताकानो आया। रसोई में काम करने के कारण मुझे उससे ज्यादा बात करने का मौका नहीं मिला था, लेकिन दुकान के अंदर उसकी दुबली-पतली काया को नजरअंदाज करना मुश्किल था।
मैंने उसे तुरंत पहचान लिया और नमस्ते कहा।
ताकानो ने झुककर मेरा अभिवादन किया, लेकिन वह दुकान में इधर-उधर देखते हुए बेचैन लग रहा था।
मैंने सोचा, ये कितना अजीब आदमी है। मैंने पूछा, "आज आपको खास तौर पर क्या चाहिए?"
“नहीं, मैं, उम... नहीं...” उसने अस्पष्ट स्वर में कहा।
ये लड़का क्या कर रहा है? मैंने सोचा। उसका चेहरा पूरा लाल था। वो जिस लड़की पर फिदा था, उसके सामने बिल्कुल एक छोटे बच्चे की तरह बर्ताव कर रहा था। तभी मुझे ये ख्याल आया। क्या पता उसे मुझमें दिलचस्पी हो? मुझे याद आया कि जब मेरे चाचा ने उसे मुझे डेट पर ले जाने के लिए कहा था, तो वो बहुत

शर्मिंदा हो गया था। जैसे-जैसे मैं ये सोचती गई, मुझे भी अचानक घबराहट होने लगी।
दुकान के अंदर की अजीब सी खामोशी कुछ देर तक बनी रही। हवा में इतनी खामोशी छा गई थी कि सांस लेना मुश्किल होता जा रहा था।
जब मुझसे और बर्दाश्त नहीं हुआ, तो मैंने कुछ कहने के लिए अपना मुंह खोला, लेकिन ठीक उसी क्षण उसने ऊँची आवाज़ में कहा, "उम!"
मैंने खुद को सहजता से तैयार कर लिया। मुझे लगा कि वह मुझसे अपने प्यार का इज़हार करने वाला है, इसलिए मेरा दिमाग तेज़ी से सोचने लगा कि मैं उसे विनम्रता से कैसे मना करूँ।
लेकिन इसके बाद उन्होंने जो कहा, वह मेरी उम्मीद से बिल्कुल अलग था। “क्या मिस ऐहारा यहाँ अक्सर आती हैं?” यह कहते हुए ताकानो का चेहरा एकदम लाल हो गया।
"मिस ऐहारा से आपका मतलब टोमो से है?"
"यह सही है।"
वह अक्सर कॉफी शॉप से लंच ब्रेक के दौरान यहाँ आती है।
आप दोनों किस बारे में बात करते हैं?
इसी समय मेरा बुखार उतर गया और मेरी चिंता कम हो गई।
“रुको, क्या तुम्हें टोमो पर क्रश है?” मैंने पूछा।
नहीं, ऐसा नहीं है। बस...
"कोई बात नहीं। मतलब टोमो बहुत प्यारी है। लेकिन चूंकि आप दोनों साथ काम करते हैं, तो मुझे लगता है कि आप उसे मुझसे बेहतर जानते होंगे।"
“नहीं। मैं रसोई में हूँ। वह भोजन कक्ष में है। और मुझे लोगों से बात करना बिल्कुल नहीं आता।”
“ऐसा लगता है। तुम वाकई शर्मीले हो, है ना?”
क्या उसका कोई बॉयफ्रेंड है?
जब ताकानो ने सवाल पूछा तो उसकी आवाज का लहजा यह दर्शाता था कि यह मामला अत्यंत अत्यावश्यक है।
“अच्छा, अब जब तुमने यह बात कही है, तो मैंने उससे कभी पूछा नहीं। लेकिन टोमो सच में बहुत प्यारी और मिलनसार लड़की है। अगर उसका कोई बॉयफ्रेंड हो तो मुझे हैरानी नहीं होगी।”
"क्या आप मेरी तरफ से उससे casually पूछ सकते हैं?"

मैं उससे यह सवाल क्यों पूछूँ? तुम खुद उससे क्यों नहीं पूछ लेते?
“तुम दोनों अच्छी दोस्त हो, ताकाको। तुम उससे स्वाभाविक तरीके से पूछ सकती हो, है ना? और वैसे भी, मैंने पहले कभी किसी लड़की से इस तरह बात नहीं की है।”
“आप अभी मुझसे बात कर रहे हैं,” मैंने थोड़ा अचंभित होकर कहा। क्या मैं एक महिला नहीं थी? लेकिन ताकानो ने मेरी प्रतिक्रिया पर ध्यान नहीं दिया। “मैं आपसे यह मुफ्त में करने के लिए नहीं कह रहा हूँ। अगर आप मदद करने के लिए सहमत होते हैं, तो जब भी आप कॉफी शॉप में आएंगे, मैं आपकी कॉफी के रिफिल का भुगतान कर दूंगा।”
और इसी के साथ मैंने उसके सारे गुनाहों को माफ कर दिया। मेरा चेहरा खुशी से चमक उठा। "सच में?" मैंने पूछा। "तो फिर मैं हर दिन आऊँगी।"
“हर दिन? ये तो कुछ ज़्यादा ही हो जाएगा…”
“तुम इतने कंजूस क्यों लग रहे हो? तुम जिस औरत के लिए तरस रहे हो, उसके करीब तो पहुँच ही जाओगे, वो भी सिर्फ एक कप कॉफी के दाम में!”
“आह…” ताकानो ने अनिच्छा से सहमति में सिर हिलाया। “लेकिन कृपया मुझसे वादा करो कि तुम इस बारे में उससे एक शब्द भी नहीं कहोगे।”
मैंने अपनी छाती पीटते हुए उससे कहा, "समझ गया।"
और इस तरह ताकानो और मैंने अपना गुप्त समझौता किया। मुझे पता चला कि वह पिछले छह महीनों से उससे चुपके से प्यार करता था। लेकिन इतने समय में, उसने उससे सिर्फ़ नमस्ते करने से ज़्यादा कुछ नहीं किया था। उसने सारा समय छिपकर बिताया और मन ही मन सोचता रहा कि वह कितनी प्यारी है। यह सुनने में अजीब लग सकता है, लेकिन इसे मासूमियत भी माना जा सकता है।
यह ज़िम्मेदारी लेने के बाद, मैं हर संभव कोशिश करना चाहता था कि उनके बीच सब ठीक हो जाए। टोमो को शायद लगे कि इसमें मेरा कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन ताकानो एक सभ्य नौजवान लग रहा था, हालाँकि वह थोड़ा शर्मीला और झिझकने वाला था। मैंने सोचा, अगर मैं उन्हें एक मौका दूं, तो शायद सब कुछ पूरी तरह से खराब न हो।
इसलिए मैंने कड़ी मेहनत की, मुफ्त कॉफी के लिए नहीं, बल्कि उन दोनों युवाओं की भलाई के लिए। पहला कदम चुपके से कुछ जानकारी जुटाना था। मुझे पता चला कि फिलहाल उसका कोई बॉयफ्रेंड नहीं था, और ऐसा लग रहा था कि उसके मन में कोई खास व्यक्ति नहीं था। उसका पसंदीदा रंग प्रशियन ब्लू था। उसका पसंदीदा

जानवर गिलहरी था। और उसका पसंदीदा इलाका, ज़ाहिर है, जिम्बोचो था। यह सब कुछ मेरे द्वारा उसके बारे में जानी गई बातों से बिल्कुल मेल खाता था, लेकिन यह थोड़ा अजीब लगा कि टोमो को असलियत का पता नहीं था।
यह नई जानकारी मिलने पर मैं सेवूर (Saveur) गया, जहाँ मैंने मुफ्त कॉफी पीते हुए ताकानो को इसके बारे में बताया। मैंने काउंटर पर झुककर फुसफुसाते हुए कहा, "लगता है टोमो का पसंदीदा जानवर गिलहरी है।" “वाह...वाह, कमाल है,” ताकानो ने फुसफुसाते हुए जवाब दिया। दुर्भाग्यवश, इसी वजह से उत्सुक दुकानदार ने नियमित ग्राहकों के बीच यह झूठी अफवाह फैला दी कि ताकानो और मैं साथ हैं।
इतना ही नहीं, उस युवा जोड़े के लिए मेरी सारी मेहनत बेकार साबित हुई। ताकानो, जिसकी भूमिका अहम थी, टोमो से बातचीत शुरू करने की ज़रा भी कोशिश नहीं कर रहा था, जिसका मतलब था कि हम ज़रा भी आगे नहीं बढ़ पा रहे थे। जब उसे पता चला कि टोमो का कोई बॉयफ्रेंड नहीं है, तो वह खुशी से झूम उठा था, लेकिन इस रफ्तार से तो उससे हल्की-फुल्की बातचीत शुरू करने में भी उसे दस साल लग जाएंगे। सब कुछ व्यर्थ हो जाएगा।
मैं खुद भी अधीर हो रहा था। इन दोनों को बात करवाने का कोई न कोई तरीका तो होना ही चाहिए था। मैंने हर संभव कोशिश की।
और फिर एक अप्रत्याशित स्रोत से अच्छी खबर आई।
एक दोपहर, जब टोमो और मैं शांति से चाय की चुस्की ले रहे थे, तब उसने मुझे प्रयुक्त पुस्तकों के महोत्सव के बारे में बताया।
“पुरानी किताबों का महोत्सव? वो क्या होता है?” मैंने अचंभित होकर कहा। “ताकाको, क्या तुम्हें इस उत्सव के बारे में नहीं पता? हर साल पतझड़ के मौसम में, इस इलाके की सभी पुरानी किताबों की दुकानें एक खुली जगह पर सस्ते दामों पर किताबों का बाज़ार लगाती हैं। इतने सारे लोग आते हैं कि पूरा मोहल्ला चहल-पहल से भर जाता है। यह अद्भुत होता है।”
वाह! यह तो मजेदार लग रहा है।
"तुम्हारे चाचा भी तो यही कर रहे हैं, बिल्कुल।"
"वास्तव में?"
"हां, सभी दुकानें इसमें शामिल होती हैं।"

मुझे इस बात का बहुत दुख हुआ कि मेरे चाचा ने इस महत्वपूर्ण घटना के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। मैंने उनसे बाद में बदला लेने का पक्का इरादा कर लिया।
“मैं इस साल जाने के बारे में सोच रही हूँ,” उसने कहा। “क्या आप मेरे साथ घूमना चाहेंगे?”
उसी क्षण मुझे एक विचार आया। “हाँ। चलो चलते हैं। चलो चलते हैं,” मैंने उसकी पेशकश को तुरंत स्वीकार करते हुए कहा। शायद इसका फायदा उठाने का कोई तरीका हो। मुझे ताकानो को बताना चाहिए।

5

कांडा यूज्ड बुक फेस्टिवल अक्टूबर के अंत में एक सप्ताह तक चला। उस पूरे सप्ताह के दौरान, खुली हवा में लगने वाले एक बाज़ार में, पुरानी किताबों से भरी गाड़ियाँ और किताबों की अलमारियाँ सड़कों पर उमड़ पड़ीं।
यह उत्सव इतना सफल रहा कि मुझे आश्चर्य हुआ। हर उम्र के पुस्तक प्रेमी बड़ी संख्या में आस-पास के इलाके में उमड़ पड़े। शायद इसलिए कि यह साल में एक बार होने वाला आयोजन था, लेकिन लोगों की उपस्थिति मेरी उम्मीदों से कहीं अधिक थी। यासुकुनी और सकुरा सड़कों पर उत्साह साफ महसूस किया जा सकता था। पुरानी किताबों की दुकानों वाला यह पुराना, भूरे रंग का इलाका दोपहर से पहले ही चहल-पहल से भर गया था। यह एक अद्भुत नजारा था।
हमारी मोरिसाकी बुकशॉप भी इसमें शामिल हो गई। मेरे चाचा और मैं पिछले कुछ दिनों में अलग रखी हुई सभी पुरानी किताबों से भरी गाड़ी लेकर निकले। हमें यह देखकर बहुत खुशी हुई कि दुकान पर हमेशा की तुलना में दोगुने ग्राहक आए। एक साहसी व्यक्ति तो इतना डरा हुआ था कि उसे डर था कि कहीं वह छूट का फायदा न उठा पाए, इसलिए उसने हमारी सस्ती किताबों का पूरा एक डिब्बा ही खरीद लिया।
जैसा कि उम्मीद थी, त्योहारों के शौकीन मेरे चाचा पूरी तरह से अपने रंग में थे। जाहिर है, वे बचपन से ही लगभग हर साल इस त्योहार में आते रहे थे। इसी वजह से, साल का वो समय आते ही उनका शरीर उत्साह से तनने लगता था।
“इसके बाद ठंड बढ़ जाएगी और दुकान पर आने वाले लोगों की संख्या काफी कम हो जाएगी,” उन्होंने कहा। “हमें अभी इतना पैसा कमाना होगा जिससे हमारा काम चल सके।” मेरे चाचा का इस तरह से व्यापारी की तरह बात करना दुर्लभ था, लेकिन उनकी बातों के बावजूद, जब एक पल के लिए मेरी नजरें उनसे ओझल हुईं, तो वे दूसरी दुकानों पर चले गए। ज़ाहिर है, उन्हें वापस लाना मेरी ज़िम्मेदारी थी।
तीसरे दिन शाम को, मैंने अपने चाचा की अनुमति से काम जल्दी खत्म कर दिया और टोमो के साथ बाकी उत्सव देखने के लिए निकल गया। और तभी अचानक, संयोग से, ताकानो वहाँ आ गया—ठीक वैसे ही जैसे हमने योजना बनाई थी।
“ओह, यह तो बहुत बड़ा आश्चर्य है,” उन्होंने कहा।

“ओह, वाह, यह सचमुच ऐसा ही है,” मैंने जवाब दिया। हम घटिया अभिनेता थे जो एक स्पष्ट नाटक कर रहे थे, लेकिन टोमो इतनी भोली थी कि उसे इसका बिल्कुल भी पता नहीं चला।
और, इसके साथ ही, हममें से एक ने कहा, "हम तीनों को एक साथ घूमना चाहिए।" तोमो के सामने, ताकानो पहले तो एकदम अकड़ा हुआ और तनाव में था। मैंने दबे स्वर में उससे कहा, "तुम क्या कर रहे हो? तुम रोबोकॉप जैसे दिख रहे हो।" “मैं चलना भूल गया हूँ,” उसने जवाब दिया। उसकी आवाज़ भी रोबोट जैसी लग रही थी। टोमो ने उसकी बात सुनी और ज़ोर से हंस पड़ा।
आस-पड़ोस की चहल-पहल देखकर हमारा मन क्यों प्रसन्न हो रहा था? वे दोनों इतने जोश से झूम रहे थे कि मानो कोई जोड़ा हों। हालांकि, ताकानो के मामले में इसका एक और बड़ा कारण था। जब तोमो ने उससे बात की, तो वह इतना खुश हो गया मानो फूलों के खेत में दौड़ रहा हो। उसके चेहरे का भाव इतना मजेदार था कि मुझे अपनी हंसी रोकने में काफी मशक्कत करनी पड़ी।
जिम्बोचो के मुख्य चौराहे पर बने विशेष स्टॉल पर किताबें देखते हुए हमारी मुलाकात साबू से हुई। साबू अपनी पत्नी के साथ थे और उनके हाथों में इतने सारे कागज़ के थैले थे कि उन्हें संभालना मुश्किल हो रहा था। साबू की पत्नी अपने एकदम मेल खाते किमोनो में इतनी खूबसूरत लग रही थीं कि मुझे लगा कि शायद वो उनके लिए ठीक नहीं हैं। लेकिन उन दोनों को साथ-साथ देखकर मुझे एहसास हुआ कि उनके बीच ऐसा गहरा रिश्ता है जो सालों तक सुख-दुख में साथ रहने से ही बनता है। यह एहसास बेहद भावुक कर देने वाला था।
जब मैंने साबू के हाथ में इतने सारे बैग देखे तो मैंने उससे कहा, "लगता है तुमने फिर से काफी कुछ खरीद लिया है।"
“हाँ,” उसकी पत्नी ने उदास स्वर में कहा और साबू को बगल से हल्का सा धक्का दिया। “वो किताबें खरीदते ही जा रहे हैं। हमारा घर अभी किताबों से भरा पड़ा है। क्या आप एक दिन आकर ये सारी किताबें खरीद लेंगे?”
“अरे नहीं, ऐसा मत करो,” साबू घबराते हुए बोला। “क्या मैंने कुछ दिन पहले थोड़ा वजन कम नहीं किया था?” उसने हाथ जोड़कर उससे विनती की।
उनके चले जाने के बाद भी हम हंसना बंद नहीं कर पाए।
यासुकुनी स्ट्रीट पर अंधेरा होने के बाद भी भीड़ कम नहीं हुई। हम अभी भी खुशी-खुशी घूम रहे थे। हम जमकर खरीदारी कर रहे थे, जितनी भी किताबें मिल सकती थीं, सब खरीद रहे थे। "यहाँ एक दिलचस्प दुकान है," तोमो ने कहा और हमें

किंटोतो बुक्स ले गया, जहाँ बीसवीं सदी की शुरुआत के ताइशो काल की प्राथमिक विद्यालय की पाठ्यपुस्तकें बिकती थीं। मैंने यूं ही दो हज़ार येन की एक जापानी पाठ्यपुस्तक खरीद ली। उसकी भाषा इतनी पुरानी थी कि वह आश्चर्यजनक रूप से ताज़ा महसूस हुई।
शाम को जब सारी दुकानें बंद होने लगीं, तो हम सैनसेइडो के अंदर बने पश्चिमी शैली के रेस्तरां में गए और रात का खाना खाया। तब तक ताकानो काफी सहज हो चुका था। अब उसे ऐसा नहीं लगता था कि वह टोमो के सामने हर बार फूलों के खेत में खड़ा है। पता चला कि उसे विदेशी साहित्य का काफी ज्ञान था। खाना खाते समय वह फॉकनर, कैपोटी और अपडाइक की खूबियों के बारे में इतनी सहजता से बातें कर रहा था कि आप विश्वास ही नहीं कर सकते थे कि वह पहले कितना असहज था। टोमो और मैं दोनों उससे बहुत प्रभावित हुए।
अंत में, यह एक सुखद और रोमांचक दिन साबित हुआ। बाद में, ताकानो ने मुझे धन्यवाद दिया और कहा कि वह कितना आभारी है, लेकिन मुझे खुद को धन्यवाद देने का कोई कारण नहीं दिखा, क्योंकि सबसे ज़्यादा आनंद तो मुझे ही आया था।

6

त्यौहार की आखिरी रात, दुकान बंद करने के बाद, मैं अपने कमरे में अकेला बैठा था, जैसे किसी ख्यालों में खोया हुआ हो। खिड़की के बाहर सड़कें इतनी शांत थीं कि पिछले हफ्ते की भीड़भाड़ मानो किसी सपने जैसी लग रही थी। मैं अपने गद्दे पर लेटा हुआ था, अलार्म घड़ी की टिक-टिक मुझे बहुत तेज़ लग रही थी। मैं छत को घूर रहा था, तभी मुझे वह अजीब सी बेचैनी फिर से महसूस हुई, वही अकेलापन जो मुझे यहाँ आने पर पहली बार महसूस हुआ था।
अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई। मेरे कंधे कांपने लगे। जैसे ही मैं डरते हुए उसकी तरफ मुड़ी, मुझे स्लाइडिंग दरवाजे के किनारे की संकरी सी जगह में एक आंख मेरी तरफ घूरती हुई दिखाई दी।
“आह्ह्ह्ह!” मेरा चेहरा पीला पड़ गया और मैं किसी हॉरर फिल्म की नायिका की तरह चीख पड़ी।
“ओह, क्या मैंने तुम्हें चौंका दिया?” एक अजीब, तीखी आवाज़ ने कहा। और फिर एक झबरा सा सिर नज़र आया।
मैंने राहत की सांस ली।
"चाचा जी, मुझे इस तरह से आश्चर्यचकित मत कीजिए।"
“माफ़ कीजिए, माफ़ कीजिए।” उसने दोनों हाथों में पकड़ी प्लास्टिक की थैली नीचे रख दी और कमरे में जाते हुए बोला, “क्या मैं एक पल के लिए अंदर आ सकता हूँ?” उसने शराब और जूस की कुछ बोतलें निकालीं और उन्हें छोटी सी खाने की मेज पर रख दिया। वह आलू के चिप्स और कटे हुए स्क्विड के स्नैक्स भी लाया था।
मैंने पूछा, "क्या आप फेस्टिवल के समापन समारोह में नहीं गए थे?"
“मैं तो बस हालचाल पूछने गया था और फिर वापस आ गया। वैसे भी, मैं तो बस हम दोनों के साथ ही रैप पार्टी करना पसंद करूंगा,” उसने एक शरारती बच्चे जैसी मुस्कान के साथ कहा।
"अब जब तुमने इस बारे में बात की है, तो मुझे याद है कि हमने कभी साथ में ड्रिंक नहीं की है।"
“ठीक है, तो चलिए शुरू करते हैं।” मेरे चाचा ने अपने प्लास्टिक बैग का सारा सामान फैला दिया और हमने अपनी छोटी सी रैप पार्टी शुरू कर दी। हम अपनी साके की चुस्कियाँ लेते हुए खुली खिड़की से झींगुरों की हल्की आवाज़ सुन रहे

थे। शांत रात ने हमें घेर लिया। समय इतनी धीमी गति से बीत रहा था कि मानो रुक गया हो।
मेरे चाचा ने आराम से अपने पैर फैलाए और किताबों की अलमारी से टेक लगाकर बैठ गए।
“ताकाको, ऐसा लगता है कि तुम यहां के जीवन की पूरी तरह से आदी हो गई हो,” उसने कहा।
“मुझे भी ऐसा ही लगता है। पहले तो मुझे यकीन नहीं था कि यह सब ठीक से हो पाएगा, लेकिन किसी तरह हो गया। मैं अपनी जिंदगी से मिले इस छोटे से ब्रेक का पूरा आनंद ले रही हूँ,” मैंने थोड़ा हंसते हुए कहा।
"मैं ये सुनकर खुश हूँ।"
लेकिन मैं भी निराश हूं।
"किस बारे मेँ?"
"आपको शुरू से ही पता था कि मुझे यहां रहना बहुत पसंद आएगा।"
“इस बात का बुरा मत मानो। मुझे बहुत खुशी है कि तुम्हें यह जगह पसंद आई। अगर तुम चाहो तो हमेशा के लिए यहीं रह सकते हो।”
अपने चाचा के दयालु शब्दों को सुनकर मेरे दिल में एक हल्की सी झनझनाहट सी महसूस हुई।
"आप मेरे साथ इतने अच्छे क्यों हैं? मुझे पता है कि मैं आपकी भतीजी हूँ, लेकिन हम इतने लंबे समय से एक-दूसरे से नहीं मिले थे।"
“क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता हूँ, ताकाको।” उसने बिना किसी झिझक के कहा। वह मानो खोया हुआ सा लग रहा था। “मुझे पता है, तुम्हारे लिए मैं शायद कोई रिश्तेदार हूँ जिसे तुम अच्छी तरह नहीं जानती, लेकिन मेरे लिए यह अलग बात है। मेरे लिए तुम एक फरिश्ता हो।”
मैं लगभग अपनी बियर थूकने ही वाला था।
इससे पहले किसी ने भी मुझसे ऐसी बात नहीं कही थी—न किसी पुरुष ने, न किसी महिला ने मुझसे कभी इस तरह बात की थी।
“हाँ, बिल्कुल सही। एक फरिश्ता। आप ही वो इंसान हैं जिन्होंने मेरी जान बचाई।”
"तुम्हें बचाया?" मैंने पूछा, मेरी समझ धीरे-धीरे कम होती जा रही थी।
मुझे याद नहीं था कि मैंने कभी उसके लिए कुछ किया हो।

“हाँ, सही कहा। तुमने मुझे बचाया। मैं तो बस यही सोचता हूँ। लेकिन मुझे यकीन है कि तुम्हें यह कहानी दिलचस्प नहीं लगेगी। चलो इस विषय को यहीं खत्म करते हैं।”
“नहीं, मैं इसे सुनना चाहता हूँ,” मैंने पूरी ईमानदारी से कहा।
मेरे चाचा ने कुछ देर तक मुझे घूरकर देखा और फिर पूछा कि क्या मैंने वादा किया है कि मैं नहीं हँसूँगा।
मैंने सहमति में सिर हिलाया, और मेरे चाचा धीरे-धीरे बोलने लगे, मानो उन्हें बहुत पहले की कोई बात याद आ रही हो।
“यह सब मेरी किशोरावस्था के आखिरी दिनों में शुरू हुआ। मैं उदास महसूस कर रही थी। मुझे जीवन का कोई मूल्य नज़र नहीं आ रहा था। मैं घर या स्कूल, कहीं भी सहज महसूस नहीं कर पा रही थी। मैं बस अपने आप में सिमट गई और बाकी सब से खुद को अलग कर लिया। मैं हद से ज़्यादा आत्म-सचेत थी, मेरे मन में बहुत सारे आदर्श और महत्वाकांक्षाएँ थीं, और इसी वजह से अंत में मेरे पास एक भी ऐसी नहीं बची जिस पर मैं टिक सकूँ। मैं एक खोखली इंसान थी। बस यही थी मैं। ऐसा लगता था जैसे इस दुनिया में मेरी कोई जगह ही नहीं है।”
मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि मेरे चाचा ऐसा महसूस करते थे। लेकिन मुझे यह भी बिल्कुल समझ नहीं आ रहा था कि इसका मेरे देवदूत होने से क्या संबंध है।
“तुम्हारा जन्म लगभग उसी समय हुआ था। तुमसे मेरी पहली मुलाकात तब हुई जब मेरी बहन तुम्हें घर लेकर आई थी ताकि मेरे पिता और सबको उनकी नई पोती से मिलवा सके। तुम्हें देखते ही, कंबल में लिपटी हुई इतनी छोटी सी बच्ची, इतनी शांति से सो रही थी, मुझे लगा कि मैं रो दूंगी। मैं इसे कैसे बयां करूं? मुझे लगा जैसे जीवन का रहस्य मेरे हृदय में भर गया हो। इस बच्ची को बड़ा होते हुए देखना, इतनी सारी चीजों का पहली बार अनुभव करना, इतना कुछ आत्मसात करना—यह सब मुझे उतनी ही खुशी दे रहा था मानो यह सब मेरे साथ हो रहा हो।” अचानक, मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा उलझा हुआ दिल गर्म रोशनी से भर गया हो। सब कुछ धुंधला सा था, लेकिन मुझे अपने अंदर एक मकसद पनपता हुआ महसूस हुआ। तभी मैंने फैसला किया। अब खुद को पिंजरे में बंद करना बंद करने का समय आ गया था। अब आगे बढ़ने, चारों ओर देखने और हर चीज से सीखने का समय था। अब उस जगह की तलाश में निकलने का समय था जहाँ मैं खुद को जुड़ा हुआ महसूस कर सकूँ, जहाँ मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकूँ कि मैं सही जगह पर हूँ। मेरी सारी

यात्राएँ, सारी किताबें जो मैंने पढ़ीं, सब उसी फैसले का नतीजा थीं। दूसरे शब्दों में, ताकाको, तुमसे मिलने से मुझे एक तरह का ज्ञानोदय हुआ।
“एक अद्भुत अनुभव... यह तो कमाल है।”
“तो, मेरा यही मतलब है जब मैं कहता हूं कि तुमने ही मुझे बचाया है। इसीलिए मैं तुम्हारे लिए कुछ भी करूंगा।”
मेरे चाचा ने यह बात इतनी गंभीरता से कही कि मुझे समझ नहीं आया कि क्या जवाब दूं। मुझे अपनी बचकानी हरकत पर शर्म आ रही थी, उन पर गुस्सा करने पर और खुद पर तरस खाने पर। ये सोचकर कि इतने समय तक उन्होंने मेरी इतनी परवाह की। मुझे लगा जैसे आखिरकार मुझे समझ आ गया कि बचपन में वो मेरे साथ इतने दयालु क्यों थे। मैं बेवकूफ था। उस समय मुझे लगता था कि इस तरह का प्यार पाना मेरा स्वाभाविक अधिकार है।
यह जानकर कि कोई मुझसे इतना प्यार करता है, मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैंने आँखों में उमड़ते आँसुओं को रोकने के लिए एक मज़ाक करने की कोशिश की। मैंने कहा, "अंकल, कटी हुई स्क्विड खाते समय आपको इस तरह की बातें नहीं करनी चाहिए।"
मेरे चाचा जोर से हंस पड़े।
"तो क्या आपको आखिरकार वह जगह मिल गई जहां आप रहना चाहते थे?"
“खैर, आप ऐसा कह सकते हैं। लेकिन यहाँ तक पहुँचने में मुझे कई साल लग गए।” मेरे चाचा ने चुपचाप सिर हिलाया। “यही है। हमारी छोटी, खस्ताहाल मोरिसाकी किताबों की दुकान। मेरी बहुत सारी आकांक्षाएँ थीं। मैं पूरी दुनिया घूमा, लेकिन अंत में उसी जगह लौट आया जिसे मैं बचपन से अच्छी तरह जानता था। अजीब बात है, है ना? इतने समय बाद, मैं यहाँ वापस आया। तभी मुझे एहसास हुआ कि यह सिर्फ़ इस बात का सवाल नहीं था कि मैं कहाँ हूँ। यह मेरे अंदर की किसी चीज़ से जुड़ा था। मैं जहाँ भी जाता, मैं जिसके साथ भी होता, अगर मैं खुद से ईमानदार होता, तो यही मेरी असली जगह थी। जब तक मुझे यह एहसास हुआ, मेरी आधी ज़िंदगी बीत चुकी थी। इसलिए मैं अपने पसंदीदा बंदरगाह पर वापस गया, और मैंने यहीं लंगर डालने का फ़ैसला किया। मेरे लिए, यह एक पवित्र स्थान है। यहीं मुझे सबसे ज़्यादा सुकून मिलता है।”
“यह मुझे याद दिलाता है,” मैंने कहा। “बहुत समय पहले, साबू ने मुझे बताया था कि आप ही इस दुकान के रक्षक थे।”

वह हँसे। “इसे बचाने वाला? यह तो बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया है। असल में, जब मेरे पिताजी बीमार पड़े, तो कारोबार ठप होने की कगार पर था—मैंने बस दुकान संभाली और उसे चलाए रखा। पहले तो मेरे पिताजी दुकान संभालने के मेरे फैसले के सख्त खिलाफ थे। आखिर, पुरानी किताबों के कारोबार में वो मुश्किल दौर था, और मैं तो एक गैर-जिम्मेदार आदमी था। लेकिन मैंने उनके सामने घुटने टेक दिए और उनसे दुकान मुझे सौंपने की विनती की।”
तो इस तरह से यह सब हुआ।
“मेरा मतलब है, मैं चुपचाप बैठकर सब कुछ बिखरते हुए नहीं देख सकती थी, है ना? यहीं तो मैंने अपना ज़्यादातर बचपन बिताया था। मैं अपने पिता के बगल में काउंटर पर बैठकर चुपचाप हैंस क्रिश्चियन एंडरसन की परियों की कहानियाँ जैसी किताबें पढ़ती थी, और कभी-कभी वो अपने विशाल हाथ से मेरे सिर पर प्यार से हाथ फेरते थे। तब मैं सचमुच बहुत खुश होती थी। ऐसा लगता था जैसे अगर ये जगह चली गई, तो मेरी सारी यादें भी गायब हो जाएँगी। मैं ये बर्दाश्त नहीं कर सकती थी।”
मेरे चाचा जो कुछ मुझे बता रहे थे, उससे मैं पूरी तरह से अभिभूत हो गया। मुझे लगा था कि मैं जानती हूँ—या कम से कम जानने की कोशिश तो की थी—कि मेरे चाचा के साथ मेरा रिश्ता किस बारे में है। क्या मुझे यह एहसास नहीं था कि उनकी अपनी निजी चिंताएँ और पीड़ाएँ थीं? क्या मैंने यह नहीं देखा कि उनका दिल मुझसे कहीं ज़्यादा समय से तड़प रहा था? मैं यह क्यों नहीं समझ पाई कि उनके अंदर कितना कुछ चल रहा था?
शायद मेरे चाचा लोगों के सामने हमेशा मज़ाक-मस्ती इसलिए करते थे ताकि वे अपने अंदर की भावनाओं को उनसे छिपा सकें। यह प्रयास उनके लिए बहुत कष्टदायक रहा होगा। उन्हें देखकर कोई यह नहीं समझ पाता था कि वे अंदर से कैसा महसूस करते हैं...
यह सोचकर मेरा दिल दुखने लगा।
काश, मोमोको के लिए भी इस जगह का इतना ही महत्व होता। वह ठीक उसी समय चली गई जब मैं कारोबार को फिर से खड़ा करने की पूरी कोशिश कर रहा था। अंत तक, मुझे इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि वह अंदर ही अंदर क्या महसूस कर रही थी।
"चाचा।"
"हाँ?"

मुझे यह दुकान बहुत पसंद है। सचमुच।
मैं कुछ और चतुराई भरी बात कहना चाहता था, लेकिन मेरे मुंह से बस इतना ही निकला। हालांकि, यह सच था, और मैंने इसे दिल से महसूस किया।
“धन्यवाद। यह दुकान शायद अधिकांश लोगों के लिए अपरिहार्य न हो, लेकिन अगर यह किसी एक व्यक्ति के लिए भी इतनी मायने रखती है, तो मुझे लगता है कि मैं इसे दशकों तक चला सकता हूँ। यह नाओए किनोशिता की किताब 'कन्फेशन्स ऑफ अ हसबैंड' की पंक्ति की तरह है, 'मेरी नाव हल्की-फुल्की है, धारा के सहारे बिना किसी उद्देश्य के बहती जा रही है।' मैं इस दुकान के साथ अपना जीवन इसी तरह जीना चाहता हूँ,” मेरे चाचा ने कहा और फिर बिना कुछ और कहे मुस्कुरा दिए।

उस रात से मैंने अपने जीवन के बारे में गंभीरता से सोचना शुरू कर दिया। मुझे यहाँ रहने के लिए एक आरामदायक और शांत जगह मिल गई थी, लेकिन मैं हमेशा दूसरों पर निर्भर नहीं रह सकती थी। अगर मैं ऐसा करती, तो मैं कभी परिपक्व नहीं हो पाती। मेरा दिल हमेशा कमजोर रहता। मुझे यकीन हो गया था कि अगर मैं यहाँ से नहीं निकली, तो मैं कभी भी नए सिरे से शुरुआत नहीं कर पाऊँगी। लेकिन जैसे ही मैंने यह सोचा, मेरे सारे डर फिर से लौट आए। जाने का ख्याल ही मुझे डरा रहा था। बस मुझे थोड़ी देर और रुकने दो। दिल ही दिल में मैं अब भी दूसरों पर निर्भर थी।
अंततः, मैं हिचकिचाया, और उसके बाद लंबे समय तक मैं मोरिसाकी बुकशॉप की दूसरी मंजिल पर ही रहता रहा।
शायद मैं किसी संकेत का इंतजार कर रहा था। फिर एक दिन, अचानक, वह संकेत मिल गया।

7

यह कॉल 2 जनवरी को आया था।
छुट्टियों में घर जाने के बजाय, मैंने नए साल के आसपास का समय किताबों की दुकान पर ही बिताया। दुकान पाँच तारीख तक बंद थी और मेरे चाचा किताबों की दुकान के दोस्तों के साथ गर्म पानी के झरनों की सैर पर गए हुए थे, इसलिए मैं बिल्कुल अकेला था।
छुट्टियों के दौरान जिम्बोचो सुनसान पड़ा था। चूंकि इलाके में कोई घर नहीं थे, और रेस्तरां और कंपनियां भी छुट्टियों के कारण बंद थीं, इसलिए वहां सचमुच कोई नहीं था। यहां तक कि यासुकुनी स्ट्रीट पर भी बहुत कम कारें चल रही थीं।
नए साल की पूर्व संध्या पर, मैं और तोमो युशिमा तेनजिन मंदिर घूमने गए थे, लेकिन इसके अलावा मेरा कैलेंडर लगभग खाली था। इसलिए नए साल के दिन और उसके अगले दिन, मैं सुबह जल्दी उठकर आस-पड़ोस में घूमने निकल गया। सुनसान शहर में घूमना बहुत अच्छा लगा। हवा भी काफी साफ लग रही थी। हवा में लहराते अपने स्कार्फ के साथ, मैं बेतरतीब ढंग से चलता रहा, बार-बार रुककर गहरी सांस लेता रहा।
जब मैं दूसरी तारीख की शाम को घर लौटा, तो कमरे में छोड़े हुए मेरे मोबाइल फोन पर एक बत्ती जल-बुझ रही थी। मैंने वह नंबर अपने फोन से डिलीट कर दिया था, लेकिन मिस्ड कॉल में देखते ही मैंने उसे पहचान लिया। उसी क्षण, दिन भर की सारी खुशियाँ जादुई तरीके से गायब हो गईं। मुझे सीने में जकड़न महसूस हुई। मेरी उंगली कांप रही थी जब मैंने बटन दबाया और संदेश सुना।
“अरे, ताकाको, काफी दिनों बाद मिले। कैसी हो? फिलहाल मेरे पास कोई प्लान नहीं है। क्या तुम आना चाहोगी? अगर तुम मुझे कॉल करो, तो मैं तुरंत आ जाऊंगी।”
मैंने पूरा संदेश सुनने से पहले ही डिलीट बटन दबा दिया। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। वह भयानक एहसास मेरे दिल में तेज़ी से फैल रहा था। यह सब इतनी जल्दी हुआ। और अब मैं उस एहसास से कभी छुटकारा नहीं पा सकूंगी।
छुट्टियों के बाद जब दुकान दोबारा खुली, तो मेरे दिल का दर्द और भी बढ़ गया। मैं इसे शब्दों में ठीक से बयान नहीं कर सकती, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे कोई भारी और ठंडी सी चीज़ मेरे दिल को जकड़ रही हो। इससे मुझे एक बार

फिर एहसास हुआ कि इनमें से कोई भी समस्या हल नहीं हुई थी। मैंने बस सब कुछ भुला दिया था, और समय के साथ यादों के धुंधले पड़ने का इंतज़ार कर रही थी। लेकिन छह महीने बीत जाने के बाद भी, उसकी आवाज़ एक पल के लिए भी सुनने से मेरा दिल अंदर से मचल उठता था। आखिरकार मुझे समझ आया कि मेरी कोई भी समस्या हल नहीं हुई थी। परेशानी अभी भी बनी हुई थी।
“ताकाको, क्या कुछ ऐसा है जो तुम मुझसे साझा करना चाहती हो? अगर कुछ भी हो रहा है, तो मुझसे बात करो।” जनवरी के अंत में जब हम दुकान बंद कर रहे थे, अचानक मेरे चाचा ने मुझसे यह कहा।
मैं घबरा गया। "आपको कैसे पता चला?"
“तुम्हारा क्या मतलब है? तुम्हें देखकर ही पता चल जाता है। तुम्हारे चाचा अंधे नहीं हैं,” उसने लगभग रूठते हुए कहा।
यह सरासर बचकाना था। मैं ऐसे बर्ताव कर रहा था जैसे सब कुछ सामान्य हो, लेकिन मेरे चाचा ने सब कुछ भांप लिया था।
“पहले तो तुम काफी ठीक लग रहे थे, इसलिए मुझे तुम्हारी कोई चिंता नहीं थी। लेकिन आजकल तुम कुछ ज्यादा ही परेशान लग रहे हो। जब मैं तुमसे बात करने की कोशिश करता हूँ, तो ऐसा लगता है जैसे तुम वहाँ हो ही नहीं।”
“मुझे लगता है, यह सच है…”
"हां, यह सच है। वैसे, हो सकता है कि मैं इस चुनौती का सामना करने में सक्षम न होऊं, लेकिन अगर आप मुझसे बात करेंगे तो शायद आपको थोड़ा बेहतर महसूस होगा।"
मैंने इसके बारे में किसी को बताने का इरादा नहीं किया था, लेकिन अपने चाचा की बातें सुनकर मुझे एहसास हुआ कि मैं गलत थी। मैं चाहती थी कि कोई मुझसे इसके बारे में पूछे। मैं चाहती थी कि कोई मुझे सांत्वना दे। मैं चाहती थी कि कोई मेरा ख्याल रखे। मुझे यह देखकर हैरानी हुई कि मैं कितनी दयनीय थी, लेकिन मेरे चाचा के शब्दों ने मेरे सारे संकोच को तोड़ दिया।
जब हम मेरे कमरे में बैठकर शराब पी रहे थे, मैंने उसे पूरी कहानी सुनाई। बाहर कड़ाके की ठंड में बारिश शुरू हो गई। हमें खिड़की पर बारिश की बूंदों की आवाज सुनाई दे रही थी।
“कोई बड़ी बात नहीं,” मैंने कहानी शुरू करते हुए कहा, और जैसे-जैसे मैंने उसे सब कुछ बताया, मुझे एहसास हुआ कि सच में ये कोई बड़ी बात नहीं थी।
मैंने अपना बॉयफ्रेंड खो दिया था और अपनी नौकरी भी। बस इतना ही। कहानी के

बीच में आते-आते, ये सब इतना मामूली लगने लगा कि मुझे हँसी आ गई। मैंने हिम्मत जुटाई और कहानी पूरी की, और जैसे ही मैंने कहानी पूरी की, मुझे थोड़ा बेहतर महसूस हुआ।
पूरे समय मेरे चाचा चुपचाप सुनते रहे और असामान्य तेज़ी से अपनी व्हिस्की पीते रहे। यहाँ तक कि जब मैंने एक घंटे तक रुक-रुक कर और हकलाते हुए अपनी कहानी खत्म की, तब भी वे काफी देर तक चुप रहे। वे अपने हाथ में पकड़े गिलास को ऐसे घूरते रहे जैसे कुछ सोच रहे हों।
फिर अंत में, उसने अपने गिलास में बची हुई शराब पी ली और दृढ़ता से कहा, "ठीक है, चलो उससे माफी मंगवाते हैं। हम उससे कहलवाएंगे, 'मुझे खेद है कि मैंने तुम्हें चोट पहुंचाई। मैं एक बहुत बुरा इंसान हूं।'"
मैं अवाक रह गया। यह बिल्कुल अप्रत्याशित घटना थी।
“क्या? अभी? ग्यारह बज चुके हैं।”
“कोई फर्क नहीं पड़ता।” इतना कहते ही मेरे चाचा उठकर बाहर जाने लगे। मैं घबराकर उनका हाथ पकड़ लिया।
"कोई बात नहीं। मैं बेवकूफी कर रहा था। मैं बस किसी को बताना चाहता था कि क्या हुआ। तुम नशे में हो, है ना?"
“नहीं, मैं नशे में नहीं हूँ। खैर, शायद थोड़ा सा। लेकिन ये बात मायने नहीं रखती। ताकाको, क्या तुम नाराज़ नहीं हो? उसने तुम्हारा फ़ायदा उठाया।” “हां, मैं पागल हूं। मैं दिन-ब-दिन और भी पागल होता जा रहा हूं, और मैं अभी भी पागल हूं।”
“इसीलिए तो हम जा रहे हैं। तुम्हें अपने मन की बात कह देनी चाहिए। नहीं तो, इस बात का भूत तुम्हें हमेशा सताता रहेगा।”
"हां, लेकिन अगर लड़ाई के दौरान मैं अपने माता-पिता को बुलाने की कोशिश करने वाले छोटे बच्चे की तरह व्यवहार करने लगूं तो मुझे और भी ज्यादा शर्म आएगी," मैंने लगभग रोते हुए कहा।
“शर्मिंदा होने की कोई बात नहीं!” मेरे चाचा ने इतनी तेज़ आवाज़ में कहा कि इतनी छोटी सी बच्ची के मुंह से ऐसी आवाज़ सुनकर हैरानी हुई। उनकी आवाज़ उस छोटे से कमरे में गूंज उठी। “शर्मिंदा होने की कोई बात नहीं। तुम मेरी भतीजी हो, और तुम मेरे लिए बहुत मायने रखती हो। मैंने तुम्हें पहले भी बताया था, है ना? मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। इसलिए मैं इस आदमी को ऐसे

ही जाने नहीं दे सकता। ये मेरा अहंकार है। मैं इसे नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता।”
“आप खुद ही अपनी बात का खंडन करते रहते हैं। और अंत में, यह सब आपके अहंकार के कारण ही होता है।”
“इसीलिए मैं अपने मन की भड़ास निकाल रहा हूँ। भले ही तुम मेरे साथ न आओ, मैं फिर भी जाऊँगा। मुझे पता बताओ। मैं उसकी खूब पिटाई करूँगा।”
मारपीट? यह बातचीत अचानक एक खतरनाक मोड़ ले रही थी।
“अरे रुको। इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा। कोई पुलिस को बुला लेगा। और वो हाई स्कूल और कॉलेज में रग्बी टीम में था। अगर तुम्हारे जैसे दुबले-पतले ने उसे पीटने की कोशिश की, तो तुम्हारी दस गुना बुरी तरह पिटाई हो जाएगी।” “इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता,” मेरे चाचा ने कहा, लेकिन वह थोड़ा पीछे हटने लगे।
“चलो ना। कोई बेवकूफी भरी हरकत न करें। चलो वापस शराब पीते हैं,” मैंने मुस्कुराते हुए कहा और मामले को संभालने की कोशिश की।
“इससे भागो मत, ताकाको,” मेरे चाचा ने मेरी ओर मुड़ते हुए बेहद गंभीरता से कहा। “मैं तुम्हारे साथ हूँ। भागो मत।”
मेरे चाचा ने मुझे गुस्से से देखा। उनकी आँखों में तीव्रता साफ़ झलक रही थी। कुछ पलों के लिए हम एक-दूसरे को देखते रह गए।
वह सही था। मैं भाग नहीं सकती थी। अगर मैं भाग जाती, तो कुछ भी नहीं बदलता। क्या यह स्पष्ट नहीं था?
मैंने अपनी जीभ को जोर से काट लिया।
“ठीक है, मैं समझ गया। चलिए चलते हैं, अंकल।”
मेरे चाचा ने दृढ़ता से सिर हिलाया।

चालीस मिनट की टैक्सी यात्रा के बाद जब हम उसके अपार्टमेंट के सामने पहुँचे, तब तक बारिश और तेज़ हो चुकी थी। बिना छाते के प्रवेश द्वार की ओर भागते हुए हम पूरी तरह भीग गए।
"यह बात है?"
मेरे चाचा 204 नंबर वाले दरवाजे के सामने रुक गए थे।
“बिल्कुल,” मैंने जवाब दिया। पुरानी यादें मेरे अंदर उमड़ रही थीं।

मैं उन दोनों के बीच की नोकझोंक को बड़ी चिंता से देख रहा था। उस रात मेरे चाचा बेहद आक्रामक व्यवहार कर रहे थे।
“तुम जानना चाहते हो कि हम यहाँ क्यों हैं? हम यहाँ इसलिए हैं क्योंकि तुमने उसके साथ बहुत बुरा किया है। ऐसा मत दिखाओ कि तुम्हें कुछ पता ही नहीं कि मैं क्या कह रहा हूँ।”
“एह?” हिदेकी की आवाज़ थोड़ी तेज़ हो गई। लेकिन मेरे चाचा ज़रा भी नहीं डरे।
“तुमने उसकी भावनाओं के साथ इतनी बेरहमी से खिलवाड़ किया कि उसने नौकरी छोड़ दी। क्या तुम्हें कुछ भी महसूस नहीं होता? क्या तुम्हें किसी को इतना दुख पहुँचाने का ज़रा भी अफ़सोस नहीं है?”
"अरे, अरे। क्या मैंने उसे चोट पहुँचाई? क्या उसने यही कहा?"
"यह सही है।"
“क्या तुम बेवकूफ हो? शायद इसलिए कि तुम उसके चाचा हो, मुझे नहीं पता, लेकिन क्या तुम्हें लगता है कि तुम इस औरत की हर बात पर आँख बंद करके विश्वास कर लोगे? साफ है कि वो झूठ बोल रही है। उसी ने तो खुद को मुझ पर थोपा था!”
"झूठ बोलने से उसे क्या फायदा होगा? क्या यह तुम्हारी गलती नहीं है कि उसने नौकरी छोड़ दी और अब भी परेशान है?"
"शायद उसने इसलिए नौकरी छोड़ दी क्योंकि उसका मन था।"
हिदेकी की बात सुनकर मेरे चाचा ने गहरी आह भरी। “कोई फायदा नहीं, ताकाको। यह आदमी तो बिल्कुल ही भ्रष्ट है।”
"अरे बूढ़े आदमी, सोच समझकर बोलो।"
हिदेकी हॉल में आगे बढ़ा और मेरे चाचा को घूरने लगा। मेरे चाचा कद में छोटे थे और हिदेकी इतना लंबा था कि दोनों की लंबाई में लगभग बीस सेंटीमीटर का अंतर था। इसलिए भले ही मेरे चाचा भी हिदेकी को घूर रहे थे, लेकिन दुर्भाग्यवश उसका असर सीमित ही रहा।
"कुछ गड़बड़ है क्या?"
पायजामा पहने एक महिला ने अपार्टमेंट के अंदर से अपना सिर बाहर निकाला। वह उसकी मंगेतर मुरानो थी।
हालात बद से बदतर हो गए थे। वहाँ खड़े रहना शर्मनाक हो सकता था, असहनीय हो सकता था, लेकिन अब बचने का कोई रास्ता नहीं था।

“ताकाको?” मुरानो ने कहा। जब उसने मुझे देखा, तो उसने भौंहें चढ़ाकर कहा, “आखिर हुआ क्या? तुम तो पूरी तरह भीगी हुई हो।”
“वह अचानक कहीं से आ गई। है ना, ताकाको? क्या तुम पागल हो गई हो? आधी रात को इस बूढ़े आदमी के साथ आने के पीछे तुम्हारा क्या इरादा था?”
"उसे बताओ, ताकाको।"
“उम्म…”
मैं डर गई और मैंने देखा कि सब लोग मुझे घूर रहे थे।
मैं यहाँ कैसे पहुँच गया?
उनकी निगाहें मुझ पर चुभ रही थीं। मैं धुएं के एक झटके में गायब हो जाना चाहती थी। वे सब चुपचाप मेरे कुछ कहने का इंतज़ार कर रहे थे। मैंने अपने दिमाग में तरह-तरह के विचार ठूस दिए, जिनसे शायद इस स्थिति का शांतिपूर्ण अंत हो सके।
मैं बस आस-पास ही थी और सोचा कि थोड़ी देर रुक जाऊं... मुझे उम्मीद थी कि वो मेरी उधार दी हुई किताब लौटा देगा... मैं तुम्हें तुम्हारी सगाई की बधाई देना चाहती थी... नहीं। ये सब गलत था। मैं कुछ और ही कहना चाहती थी। मैं यहाँ क्यों आई थी? अपने मन का बोझ हल्का करने के लिए। अगर मैं उन्हें वही बता देती जो वे सुनना चाहते थे, तो उससे कुछ नहीं होता।
मैंने अपने दिल को खुद को तैयार करने के लिए कहा।
"मैं । । ।"
सबकी निगाहें मेरे होंठों पर टिकी थीं। मैंने गहरी सांस ली। मेरे चाचा मुझे हौसला देते हुए देख रहे थे। मेरी आँखों में आंसू आ गए। और उस पल मुझे अपने सीने में उमड़ रही सारी भावनाएं उमड़ती हुई महसूस हुईं। सोचने का समय ही नहीं था—अचानक, शब्द मेरे मुंह से झट से निकल पड़े।
मैं यहाँ इसलिए आई हूँ क्योंकि मैं चाहती हूँ कि तुम माफ़ी मांगो! हो सकता है कि तुम सिर्फ़ मज़ाक कर रहे हो, लेकिन मेरे लिए ऐसा नहीं था। मैं तुमसे सच में प्यार करती थी। मैं भी एक इंसान हूँ। मेरे भी एहसास हैं। तुम मुझे देखकर शायद सिर्फ़ एक ऐसी औरत समझते हो जिसका फ़ायदा उठा सको, लेकिन मैं भी सोचती हूँ, साँस लेती हूँ, रोती हूँ। क्या तुम्हें पता है तुमने मुझे कितना दुख पहुँचाया है? मैं... मैं...

उसके बाद, मैं कुछ बोल नहीं पा रही थी। बारिश, आंसुओं और बहती नाक की वजह से मैं सिर से पैर तक भीग चुकी थी। लेकिन इतने समय बाद, आखिरकार मैं वो शब्द कह पाई जो मैं उस रात रेस्टोरेंट में कहना चाहती थी।
“बहुत खूब कहा, ताकाको,” मेरे चाचा ने कहा और अपना हाथ मेरे कंधे पर रखकर मुझे अपने करीब खींच लिया।
“तुम क्या करोगे? उसने तुम्हें ईमानदारी से अपने दिल की बात बता दी है। तुम्हें जवाब देना ही होगा।”
हिदेकी काफी देर तक सिर झुकाए चुपचाप बैठा रहा। आखिर में उसने धीरे से कहा, “ये तो हद है। मेरे पास तुम्हारे जैसे बेकार लोगों के साथ समय बिताने का समय नहीं है। मैं सोने जा रहा हूँ। अगर तुम चाहते हो कि मैं पुलिस को बुलाऊँ, तो बेहतर होगा कि तुम घर चले जाओ।”
यह कहने के बाद, उसने चुपचाप दरवाजा बंद कर दिया। हमें दरवाजे के अंदर से ताले की आवाज सुनाई दी। फिर हॉल में सन्नाटा छा गया।
"अरे!"
मेरे चाचा ने एक पहलवान की तरह दरवाजे को घूरकर देखा। फिर उन्होंने मुट्ठियों से उस पर ज़ोर से प्रहार किया। मैंने पीछे से उन्हें कसकर पकड़ लिया।
बस करो, अंकल।
लेकिन ताकाको।
“बस बहुत हो गया। सचमुच। मैं बहुत अच्छा महसूस कर रही हूँ, शायद अपनी पूरी ज़िंदगी में अब तक जितना अच्छा महसूस नहीं किया, उतना अच्छा। यह अद्भुत है। शायद यह पहली बार है जब मैंने अपनी आवाज़ बुलंद की है और किसी दूसरे व्यक्ति को अपने दिल की बात बताई है,” मैंने कहा और फिर आँसू और नाक बहने से चेहरा भीगा हुआ था, फिर भी मैं अपने चाचा पर हंस पड़ी।
“अगर तुम ऐसा कहती हो, ताकाको…” मेरे चाचा ने थोड़ा असंतुष्ट होकर बुदबुदाया।
अब सब ठीक है।
तो चलिए घर चलते हैं, ठीक है? इस रफ्तार से तो हम दोनों को सर्दी लग जाएगी।
दरवाजे की ओर मुंह करके, मैंने उस जगह को अंतिम विदाई दी, और फिर मैं सब कुछ पीछे छोड़कर चला गया।

घर लौटते समय टैक्सी में हमने मुश्किल से ही कुछ कहा। मेरे चाचा, अपनी सारी ऊर्जा खो चुके थे, पिछली सीट पर बेसुध पड़े थे। मैं उनके बगल में बैठा, आखिरकार अपनी चिंताओं से मुक्त होकर, अपने ही विचारों में खोया हुआ था। यह पूरी तरह से हिदेकी की गलती नहीं थी। मुझे यह शुरू से ही पता था। जो कुछ भी हुआ, उसमें मेरी भी आधी गलती थी। मेरी लापरवाही और इच्छाशक्ति की कमी ने ही इस स्थिति को जन्म दिया।
लेकिन मुझे बस अपने मन की बात कहनी थी, चाहे कुछ भी हो जाए। भले ही कोई मुझे स्वार्थी कहे, मुझे अपने विचार साझा करने ही थे। मैं अपनी कमजोरी के कारण ही परेशान थी। शायद हिदेकी को कभी लगा ही नहीं कि उसे दोष देने की कोई वजह है, और मेरी प्रतिक्रिया से वह हैरान रह गया होगा, लेकिन फिर भी मुझे उससे अपने दिल की बात कहनी ही थी। अगर नहीं, तो मैं आगे नहीं बढ़ सकती थी। चाहे कितना भी समय बीत जाए, मैं वहीं अटकी रहती। अगर मेरे चाचा ने मुझे मौका न दिया होता, तो मैं हमेशा के लिए इन भावनाओं को अपने अंदर दबाए बैठी रहती। मैंने मन ही मन शब्दों को घुमा-फिराकर अपने चाचा के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने की कोशिश की। लेकिन कुछ भी मुंह से नहीं निकला। अंत में, मेरे पास केवल एक ही शब्द बचा था। इसलिए मैंने वही शब्द उनसे सच्चे मन से कह दिया।
"धन्यवाद । । ।"
मेरे चाचा मुस्कुराए और मुझे कंधे से पकड़कर अपने करीब खींच लिया। उनके शरीर की गर्माहट को अपने शरीर के पास महसूस करते ही, मुझे भीतरी हिस्से में राहत की लहर दौड़ गई।
मुझे सुरक्षा मिली हुई थी। कोई तो था जिसे मेरी चिंता थी, जो इस बात पर गुस्सा भी करता था कि मेरे साथ जो हुआ वह उतना ही मायने रखता था जितना कि उसके साथ हुआ होता।
लंबे समय तक मैंने खुद को इस विशाल दुनिया में बिल्कुल अकेला महसूस करने दिया, लेकिन हर पल कोई न कोई मेरे आस-पास ही था, जो मेरे बारे में सोचता था, मेरी देखभाल करता था। इससे मुझे बेहद खुशी मिली।
जिस टैक्सी में हम सवार थे, वह बारिश से जगमगाते, चमकीले रंगों से सजे शहर में चुपचाप आगे बढ़ती रही।

8

इसके ठीक बाद मैंने दुकान छोड़ने का फैसला किया। सुनने में भले ही अजीब लगे, लेकिन उस घटना ने मुझे वो हौसला दिया जिसकी मुझे ज़रूरत थी। मेरी सारी परेशानियाँ दूर हो गईं और मेरा शरीर हल्का महसूस हो रहा था। आखिरकार मैं जाने के लिए तैयार था।
मुझे मार्च से रहने के लिए एक नई जगह मिल गई है। यह दुकान से काफी दूर है, लेकिन यही मेरे लिए सबसे अच्छा विकल्प था। आगे क्या करना है, इस बारे में मेरे मन में अभी भी कई सवाल थे। फिलहाल, मैंने अपनी पुरानी नौकरी के ज़रिए एक छोटी डिज़ाइन कंपनी में पार्ट-टाइम काम शुरू कर दिया है।
जब मैंने अपने चाचा को बताया कि मैं जाने का इरादा रखता हूँ, तो वे काफी हैरान दिखे। उन्होंने घबराते हुए कहा, "तुम्हें कोई भी फैसला जल्दबाजी में लेने की जरूरत नहीं है।"
लेकिन मैंने अपना फैसला पहले ही कर लिया था।
“मैं काफी समय से अपने जीवन से मिली इस छोटी सी छुट्टी का आनंद ले रहा हूँ। अगर मैं अब अपनी असली जगह की तलाश में नहीं निकला, तो शायद मैं उसे कभी पा ही न पाऊँ।”
मेरे चाचा ने मेरी बात सुनी, लेकिन उन्होंने और कुछ नहीं कहा।
अपने नए घर में जाने से एक महीने पहले, मैंने मोरिसाकी बुकशॉप में अपने आखिरी दिनों का भरपूर आनंद लिया। मैंने लगन से काम किया और अपने खाली समय में खूब किताबें पढ़ीं। कृतज्ञता के भाव से, मैंने दुकान और दूसरी मंजिल की अच्छी तरह सफाई भी की। और यहाँ तक कि मैंने अपने आगमन के दिन खाली कमरे में बेतरतीब ढंग से ठूंस-ठूंस कर रखी किताबों के संग्रह को भी व्यवस्थित किया।
मैंने अपने नियमित ग्राहकों और सेवर के सभी कर्मचारियों को बता दिया कि मैं जा रही हूँ। वे सभी मुझे जाते देखकर दुखी थे। यह जानकर मेरी आँखों में लगभग आँसू आ गए कि वे मेरी इतनी परवाह करते हैं। साबू ने तो यहाँ तक कह दिया कि मुझे उनके बेटे से शादी कर लेनी चाहिए और उनके परिवार में शामिल हो जाना चाहिए। और ऐसा लग रहा था कि वह सचमुच उसे हमारे बीच रिश्ता तय करवाने के लिए लाने वाले थे।

ताकानो और टोमो ने मेरे लिए एक छोटी सी विदाई पार्टी रखी। हम दुकान की दूसरी मंजिल पर मेरे कमरे में गरमागरम सूप के चारों ओर इकट्ठा हुए और देर रात तक जश्न मनाया। टोमो ने मुझे बताया कि वह कितनी दुखी है कि उसकी किताब प्रेमी दोस्त अब उसके साथ नहीं रहेगी। उसने कहा, "अगले साल, चलो फिर से साथ में फेस्टिवल चलते हैं, ठीक है?"
उस रात ताकानो ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए बताया कि वह थोड़ी देर पहले तोमो को शिबुया में फिल्म दिखाने ले गया था। वे अभी तक कपल तो नहीं लग रहे थे, लेकिन ताकानो की शुरुआत को देखते हुए यह एक अच्छी शुरुआत थी। यह सुनकर मुझे इतनी खुशी हुई कि मैंने सचमुच कहा, "बुरा नहीं!" और उसकी पतली पीठ पर ज़ोर से थपथपा दिया।
इसके बाद अचानक हिदेकी की मंगेतर मुरानो ने मुझसे संपर्क किया और हम कॉफी शॉप में बातचीत करने के लिए मिले। उस रात मेरी सबसे बड़ी चिंता यह थी कि कहीं हम उसके साथ भी बहुत बुरा बर्ताव न कर बैठे हों। मैं उस जगह की ओर चल पड़ा जहाँ हम मिलने वाले थे, और मैंने उससे दिल से माफी मांगने का इरादा किया था। लेकिन जब हम आमने-सामने हुए, तो उसने झुककर मुझसे माफी मांगी। उसने कहा कि उसे पहले से ही उसके व्यवहार पर शक था, लेकिन उस रात मेरे अजीब तरह से दिखने के बाद उसे सब कुछ समझ आ गया। उसने उससे बार-बार सवाल किए, जब तक कि उसने आखिरकार कबूल नहीं कर लिया। उसने कहा कि उस रात तक, उसे कभी अंदाजा भी नहीं था कि मैं ही वह दूसरी औरत हूँ।
मैंने उससे बार-बार माफी मांगने की कोशिश की। मैंने कहा, "मेरी भी गलती है," लेकिन उसने बस अपना सिर हिला दिया। उसने कहा कि अब शादी रद्द हो गई है। यह सुनकर मैं तुरंत दोबारा माफी मांगने दौड़ी, लेकिन उसने दृढ़ता से कहा, "इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है, ताकाको।"
लेकिन वो अपराधबोध मेरे मन में बना रहा। अगले दिन जब मैंने अपने चाचा को सब कुछ बताया, तो उन्होंने कहा, “वो सही कह रही है। शादी के बाद पता चलने से पहले ही पता चल जाए तो बेहतर है ना?” हो सकता है मेरे चाचा का नज़रिया थोड़ा पक्षपातपूर्ण हो क्योंकि वो हिदेकी से नफरत करते थे, लेकिन जब मुझे उनकी बात समझ आई, तो मुझे लगा जैसे मेरे कंधों से बोझ उतर गया हो।
दुकान में अपनी आखिरी रात मैंने और मेरे चाचा ने दूसरी मंजिल पर बने बरामदे में एक साथ कॉफी पीते हुए, अंधेरे शीतकालीन आकाश को निहारते हुए बिताई।

उन्होंने मुझे किताबों की दुकान में बिताए दिनों की याद दिलाने के लिए पुरानी किताबों का एक बड़ा ढेर दिया। उन्होंने कहा कि ये सभी किताबें उनके बचपन में उन पर गहरा प्रभाव छोड़ गई थीं। भारी कागज़ के थैले में झाँककर मैंने देखा कि उन्होंने उसे ताकेहिको फुकुनागा और काज़ुओ ओज़ाकी जैसे कुछ गंभीर लेखकों की किताबों से भर रखा था।
हमने अपनी आखिरी रात एक-दूसरे के साथ बेहद सहज महसूस करते हुए बिताई। मेरे चाचा ने उस समय मुझसे जो कहा था, वह मैं कभी नहीं भूलूंगा।
“मैं तुमसे एक वादा चाहता हूँ,” उन्होंने पहले भूमिका बनाते हुए कहा। फिर उन्होंने कहा, “किसी से प्यार करने से मत डरो। जब तुम प्यार में पड़ो, तो मैं चाहता हूँ कि तुम पूरी तरह से प्यार करो। भले ही उसका अंत दिल टूटने में हो, कृपया प्यार के बिना अकेला जीवन मत जीना। मुझे बहुत चिंता है कि जो कुछ हुआ है, उसकी वजह से तुम प्यार करने से ही हार मान लोगी। प्यार अद्भुत है। मैं नहीं चाहता कि तुम इसे भूल जाओ। जिन लोगों से तुम प्यार करती हो, उनकी यादें कभी नहीं मिटतीं। वे जीवन भर तुम्हारे दिल को सुकून देती रहेंगी। जब तुम मेरी तरह बूढ़ी हो जाओगी, तब तुम समझोगी। कैसा रहेगा—क्या तुम मुझसे वादा कर सकती हो?”
“मैं समझ गया। मैं वादा करता हूँ,” मैंने कहा। “मुझे लगता है कि इस जगह ने मुझे यह सिखाया है। इसलिए आपको चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।”
"ऐसे में, आप जहां भी जाएंगे, ठीक रहेंगे।"
"धन्यवाद, अंकल।"

मेरे जाने के दिन, मैं सुबह की रोशनी में खड़ा होकर मोरिसाकी बुकशॉप को निहार रहा था। कितनी छोटी सी पुरानी लकड़ी की इमारत! मैंने सोचा, मैं यहीं रहता था, लेकिन मुझे इस बात पर मुश्किल से ही यकीन हो रहा था।
मैं कुछ देर वहीं खड़ा रहा, ठंडी हवा में मेरी सांसें सफेद हो रही थीं। सड़क पर सुबह की हल्की रोशनी फैली हुई थी। कोई भी दुकान अभी तक नहीं खुली थी, और चारों ओर सब कुछ बेहद शांत और सुकून भरा लग रहा था।
मैं सीधा खड़ा हुआ, दुकान की ओर मुँह करके, और मैंने झुककर प्रणाम किया।
मैंने प्रतिज्ञा की कि मैं कभी नहीं भूलूंगा कि किताबों की दुकान में बिताए जीवन ने मुझे क्या दिया है।

मेरे चाचा ने इतनी जल्दी होने के बावजूद मुझे छोड़ने की जहमत उठाई। मैंने उन्हें तहे दिल से धन्यवाद दिया।
वह मेरे जीवन का एक बेहद महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया था। यह अजीब बात है। जब मैं पहली बार यहाँ आया था, तब मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि चीजें इस तरह से होंगी।
जब हमने एक-दूसरे को अलविदा कहा, तो मेरे चाचा का पिछली रात वाला मर्दाना रवैया अचानक गायब हो गया और वह सबके सामने एक बच्चे की तरह रोने लगे।
“मैं इसे सहन नहीं कर सकता। कृपया मत जाओ, ताकाको,” उसने मेरा हाथ इतनी कसकर पकड़ रखा था कि मुझे लगा कि वह शायद कभी नहीं छोड़ेगा।
मैंने कहा, "मैं कभी भी वापस आकर तुमसे मिल सकता हूँ।" यह बात थोड़ी अटपटी लग रही थी, लेकिन असल में मैं उसे दिलासा दे रहा था।
"तुम अपना ख्याल रखना, ठीक है? और मैं दुकान की देखभाल कर लूंगा, चाहे कुछ भी हो जाए।"
मुझे ऐसा लगा कि अगर मैं वहाँ एक पल भी और रुकी तो मेरा जाने का साहस ही खत्म हो जाएगा। इसलिए मैंने जल्दी से अपने चाचा को अलविदा कहा, जो अभी भी मुझे पकड़े रहने की कोशिश कर रहे थे, और सड़क पर आगे बढ़ गई।
मैं बिना पीछे मुड़े लगातार चलती रही और साकुरा स्ट्रीट के अंत तक पहुँच गई। चलते-चलते पुरानी यादें उमड़ पड़ीं और मेरी आँखों में आँसू भर आए। लेकिन मैंने किसी तरह हिम्मत जुटाई और गली के अंत तक पहुँच गई।
फिर अचानक मुझे कुछ महसूस हुआ और मैंने पीछे मुड़कर देखा। मैंने देखा कि मेरे चाचा सड़क के बीचोंबीच खड़े होकर मुझे हाथ हिला रहे थे, दूर से वे बहुत छोटे दिख रहे थे। उन्हें उस हालत में देखकर मैं खुद को रोक नहीं पाई।
मैं फूट-फूट कर रोने लगी।
मैंने उदास चेहरे से उसे हाथ हिलाकर जवाब दिया और मेरी आंखों से आंसू बहने लगे।
इसके जवाब में मेरे चाचा ने और भी उत्साह से हाथ हिलाया। मैं उनके पीछे सुबह की रोशनी चमकती हुई देख सकता था।
मैंने चिल्लाकर कहा, "अपना ख्याल रखना!", फिर मुड़कर यासुकुनी स्ट्रीट की भीड़ में चला गया।
मुझे सड़क पर रोते हुए देखकर, आस-पास के लोगों ने ज़रूर सोचा होगा कि इस अजीब औरत में कुछ गड़बड़ है। लेकिन मुझे ज़रा भी परवाह नहीं थी। आख़िरकार,

मैं इसलिए रो रही थी क्योंकि मैं रोना चाहती थी, और ये मेरी ज़िंदगी के सबसे खुशी के आँसू थे।
सुबह की ठंडी हवा में, मुझे वसंत ऋतु के आने का हल्का सा आभास हुआ। मैंने सीधे आगे देखा और चलता रहा।

[illegible] [illegible]

मोमोको की वापसी

1

“ताकाको, कितना समय बीत गया! मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं सौ साल से दूर थी।”
मोरिसाकी बुकशॉप के सामने जब मेरी मौसी मोमोको ने मुझे देखा तो उन्होंने इसी तरह मेरा अभिवादन किया। वह ज़ोर से हंस पड़ीं। उनकी आवाज़ इतनी बुलंद थी कि किताबों की दुकानों वाली उस छोटी सी गली में उसकी गूंज सुनाई दे रही थी।
यह सच था। वह वापस आ गई थी। अब जब वह मेरे सामने खड़ी थी, तो मुझे आखिरकार यकीन हो गया। अंकल सटोरू ने मुझे बताया था कि वह वापस आ गई है, इसलिए कम से कम मन ही मन तो मुझे यह पता था। लेकिन जब तक मैंने उसे सचमुच नहीं देखा, तब तक मुझे इस पर यकीन नहीं हुआ। अगर किसी दोस्त ने मुझे बताया होता कि उसने भूत देखा है, तो मुझे भी ऐसा ही लगता।
लेकिन मोमोको सचमुच वहाँ थी। और वह बेहद खुश थी। आखिर वह इतनी खुश क्यों थी? क्या पाँच साल गायब रहने के बाद अचानक प्रकट होने वाले व्यक्ति का व्यवहार ऐसा ही था? दूसरी ओर, अंकल सटोरू वहाँ ऐसे खड़े थे जैसे किसी कुत्ते ने सड़ा हुआ मांस खा लिया हो। क्या ऐसा नहीं होना चाहिए था?
“ऐसा लग रहा है जैसे तुमने भूत देख लिया हो,” उसने नाराज़गी जताते हुए मुझसे कहा। “ये कुछ ज़्यादा ही कठोर है।” मैंने इस पूरे समय उससे एक शब्द भी नहीं कहा था।
मैंने लगभग उससे कह ही दिया था कि अगर मैंने भूत देखा होता तो मुझे इतनी हैरानी नहीं होती, लेकिन किसी तरह मैंने खुद को रोका और कहा, "तुम बहुत अच्छी लग रही हो।" दस साल से ज़्यादा समय से हम एक-दूसरे से नहीं मिले थे। जब मोमोको छोटी थी, तो वह काफी सुंदर थी। शायद बेहद खूबसूरत तो नहीं, लेकिन उसमें एक शांत सुंदरता थी जो अजीब तरीके से सबका ध्यान खींच लेती थी। जैसे समुद्र तट पर चमकता हुआ कोई पत्थर जिसकी बाज़ार में कोई खास कीमत नहीं होती, लेकिन फिर भी उसकी चमक में कुछ तो आकर्षण होता है। जब मैं बच्चा था और उसे पारिवारिक समारोहों में देखता था, तो मैं हमेशा इस बात से प्रभावित होता था कि वह कितनी शालीनता से, सबसे दूर कोने में बैठती थी, मानो वह सबसे अलग दिखना नहीं चाहती हो (मोमोको कद में काफी छोटी है)। उसमें कुछ रहस्यमयी सा आकर्षण था।

[illegible]
[illegible]
[illegible]

2

"वह वापस आ गयी।"
दो दिन पहले मेरे चाचा ने फोन किया था। उनकी आवाज़ में घबराहट झलक रही थी। मोरिसाकी बुकशॉप छोड़े हुए मुझे डेढ़ साल हो चुका था।
वहाँ मेरी लंबी छुट्टी खत्म होने के बाद, मैंने एक छोटी डिज़ाइन फर्म में काम करना शुरू किया। तीन महीने पहले, उन्होंने मुझे अंशकालिक से पूर्णकालिक पद पर पदोन्नत कर दिया था, जिसका मतलब था कि मेरे दिन थोड़े व्यस्त हो गए थे, इसलिए लगभग दो महीने हो गए थे जब मैं उनसे मिलने गया था। इसलिए जब मेरे चाचा ने मुझे फोन किया, तो मैंने सोचा कि वह बस मुझे मिलने के लिए बुलाएंगे। लेकिन उनकी घबराहट भरी आवाज़ सुनकर मैं समझ गया कि कुछ बड़ा हुआ है।
फोन पर मेरे चाचा ने स्थिति का इतना विस्तृत वर्णन किया कि मुझे अधीरता होने लगी। संक्षेप में, हमारी दो घंटे की बातचीत इस प्रकार हुई।
उस दिन, मेरे चाचा हमेशा की तरह सुबह से शाम तक जिम्बोचो स्थित अपनी दुकान में काम कर रहे थे। दोपहर के भोजन के समय, उन्होंने ओगई मोरी और साकुनोसुके ओडा की कुछ दुर्लभ पुस्तकें बेची थीं, जो उस दिन के हिसाब से काफी अच्छी कमाई थी, इसलिए शाम की शुरुआत में उनका मूड बहुत अच्छा था। दुकान बंद करते समय वे सीटी बजा रहे थे, तभी उन्होंने किसी को चुपके से सामने का दरवाजा खोलकर अंदर आते सुना।
उन्होंने सोचा, “अरे नहीं, इस समय कोई ग्राहक?” लेकिन उनकी पीठ दरवाजे की तरफ थी और वे दुकान बंद करने में व्यस्त थे। ग्राहक अंदर आने का नामोनिशान नहीं था। वे दरवाजे के सामने ही खड़े थे, मानो अपनी सांस रोके हुए हों। कितना अजीब! मेरे चाचा को शक हुआ और वे पीछे मुड़े। तभी उन्होंने ग्राहक को कुछ बुदबुदाते सुना। उस आवाज को सुनकर उन्हें इतना बड़ा झटका लगा कि उन्होंने कहा, “ऐसा लगा जैसे किसी ने उनके सिर पर दस हजार बार चोट मारी हो।”
पहले तो उसे लगा कि वह गलत हो सकता है, लेकिन वह जानता था कि ऐसा होना नामुमकिन था। उसके लिए उस आवाज़ को न पहचानना नामुमकिन था—ठीक वैसे ही जैसे मोरिसाकी बुकशॉप में सौ लोगों को ठूंसना नामुमकिन था।

जब मेरे चाचा अभी भी उसकी ओर पीठ करके जमे हुए थे, हिलने-डुलने में असमर्थ थे, तब ग्राहक ने उसके कहे हुए शब्दों को थोड़ा और स्पष्ट रूप से दोहराया, "सटोरू..."
उसने गहरी सांस ली और आखिरकार उस आवाज़ के मालिक को देखने के लिए मुड़ा। अचानक, दुकान का जाना-पहचाना अंदरूनी हिस्सा दूर होता चला गया, और उसकी नज़र के केंद्र में एक ही आकृति स्पष्ट रूप से दिखाई दी: उसकी पत्नी, जो पांच साल पहले बिना कुछ कहे उसे छोड़कर चली गई थी, इस पल तक। वह उससे नज़रें नहीं हटा पा रहा था। उसे लगा जैसे वह सपना देख रहा हो। उसने ऐसे सपने पहले भी सैकड़ों बार देखे थे। लेकिन उन सपनों में, उसकी पत्नी इतनी असली कभी नहीं लगी थी। यह निश्चित रूप से मोमोको ही थी जो वहाँ खड़ी थी, लगभग वैसी ही जैसी वह जाने से पहले दिखती थी।
काफी देर की चुप्पी के बाद, मोमोको ने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा, "मैं घर आ गई हूँ।"
उसने बिल्कुल ऐसे कहा जैसे वह अभी-अभी थोड़ी देर टहलकर लौटी हो। उसके पास बस एक छोटा सा थैला था जिसे उसने एक हाथ में पकड़ रखा था।
मेरे चाचा ने उसे काफी देर तक घूरते हुए देखा, फिर अंत में जवाब दिया, "वापस स्वागत है।"
मोमोको बिना कुछ और कहे चुपचाप दूसरी मंजिल पर स्थित कमरे में चली गई। वह तब से ही किताबों की दुकान की दूसरी मंजिल पर रह रही थी...

"रुको, रुको, एक मिनट रुको।" मैं फोन पर धैर्यपूर्वक सुन रहा था, लेकिन इस समय तक वह मेरी सहनशीलता की सीमा पार कर चुका था।
“क्या!? ये सब ‘मैं घर आ गई!’ ‘वापस स्वागत है!’ ये क्या है? तुम्हारा मतलब क्या है कि वो यहाँ रहने आ गई है? ये तो किसी भूतिया कहानी जैसी लग रही है।” "लेकिन यह सब सच है, ताकाको," मेरे चाचा ने गंभीरता से जवाब दिया।
“अगर यह सच है, तो तुम दोनों अजीब हो। मोमोको अचानक वापस क्यों आ गई? और तुमने बिना नाराज़ हुए उसका स्वागत क्यों कर लिया?”
“मुझे खुद भी समझ नहीं आ रहा,” मेरे चाचा ने हैरानी भरे लहजे में कहा। ऐसा लग रहा था कि उन्होंने जो मुझे बताया था, उससे वे काफी प्रभावित थे। “लेकिन यह सब इतनी सहजता से हुआ।”

मैं अब इतना स्तब्ध था कि कुछ बोल नहीं पा रहा था। बेशक, मेरे चाचा एक असाधारण व्यक्ति थे, लेकिन उन दोनों का व्यवहार सामान्य ज्ञान के बिल्कुल विपरीत था।
"और उसके बाद क्या उसने आपको कुछ और बताया?" मैंने उससे पूरी गंभीरता से पूछा।
मेरे चाचा ने बेपरवाही से जवाब दिया, "हाँ, मुझे नहीं पता। इसके बारे में पूछना थोड़ा मुश्किल है।"
"अच्छा, तो फिर आप उसे कुनिताची वाले घर वापस क्यों नहीं ले जाते और उससे इस बारे में सही तरीके से क्यों नहीं पूछते?"
“उसे वहाँ अच्छा नहीं लगता। वह कहती है कि वहाँ आराम करना मुश्किल है। उसे दुकान की दूसरी मंज़िल ज़्यादा पसंद है। सुनो, ताकाको, मुझे महिलाओं की भावनाओं के बारे में ज़रा भी जानकारी नहीं है। तुम्हें क्या लगता है कि वह वापस क्यों आई?”
मुझे रिसीवर के दूसरी तरफ से उसकी हैरानी साफ सुनाई दे रही थी। लेकिन मैंने ठंडे लहजे में जवाब दिया, "मुझे कैसे पता चलेगा? वह आपकी पत्नी है। क्या आपको उसे किसी और से बेहतर नहीं जानना चाहिए?"
“मुझे लगा कि मैं उसे किसी और से बेहतर जानती हूँ, लेकिन अब सब कुछ गड़बड़ हो गया है। मैं अंधेरे में टटोल रही हूँ। तुम एक लड़की हो। महिलाओं के बीच कुछ तो आपसी समझ होनी चाहिए, है ना?”
“हमारा लिंग एक ही है, लेकिन मुझे लगता है कि हम पूरी तरह से अलग प्रजाति के हो सकते हैं,” मैंने कहा। मेरे चाचा काफी देर तक चुप रहे, फिर उन्होंने कहा, “लेकिन, ताकाको... क्या तुम्हें लगता है... कि वह फिर से चली जाएगी?”
मेरे चाचा की आवाज़ में घबराहट सुनकर मेरा मन थोड़ा बदल गया। मुझे आज भी याद है कि उस रात जब मैंने उनसे मोमोको के बारे में पूछा था, तो वो थके-हारे सड़क पर चलते हुए कितने उदास और अकेले लग रहे थे। वो अब भी उससे बहुत प्यार करते थे, चाहे कुछ भी हो जाए। और वो अब भी दर्द में थे। अगर मेरे बस में कुछ होता, तो मैं उन्हें फिर कभी उस हालत में नहीं देखना चाहती थी।
“आप नहीं चाहते कि वह जाए?”
मुझे नहीं पता। पहले तो मुझे लगता था कि जब तक वह जहाँ है वहाँ खुश है, मुझे कोई दिक्कत नहीं है। लेकिन अब जब वह वापस आ गई है, तो मेरी भावनाएँ बदलने

लगी हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं उसे दुखी देखना चाहता हूँ। उफ़, मैं कितना बेवकूफ हूँ!
हे भगवान! इस तरह तो कोई प्रगति नहीं होने वाली थी। मैंने हार मान ली और उससे पूछा, "तो, तुम मुझसे क्या पूछना चाहते हो?"
"हं? आपको कैसे पता चला कि मैं आपसे कुछ पूछना चाहता था?"
मुझे पता है। हमने साथ में कितना समय बिताया है?
“आह, ताकाको, इस दुनिया में तुमसे ज्यादा प्यारी भतीजी कोई नहीं है। मैं तुम्हारी आभारी हूँ।”
यह लगभग वैसा ही था जैसा मैंने अनुमान लगाया था, लेकिन मेरे चाचा चाहते थे कि मैं पता लगाऊं कि मोमोको वास्तव में क्या सोच रही थी। वह अब वापस क्यों आई थी? और आगे उसकी क्या योजना थी? उन्होंने बताया कि पांच साल पहले वह एक दो लाइन का नोट छोड़ गई थी: "मैं ठीक हूँ। कृपया मुझे मत ढूंढो।" वह अपने साथ कोई बैग नहीं ले गई थी। चूंकि उन्हें इस घटना के कोई संकेत या पूर्व चेतावनी नहीं मिली थी, इसलिए उन्हें कोई अंदाजा नहीं था कि अब क्या होगा। उन्हें इस बारे में मिली-जुली भावनाएं थीं, लेकिन बहुत सोचने-विचारने के बाद आखिरकार उन्होंने उसके नोट में लिखे निर्देशों का पालन किया और उसकी तलाश नहीं की। उन्होंने कहा कि उन्होंने पुलिस में गुमशुदगी की रिपोर्ट भी दर्ज नहीं कराई। उन्होंने कहा, "हमें अपने बच्चे नहीं हुए, और ताकाको, उसे तुम पसंद आ गई थी। इसलिए मुझे लगता है कि वह तुमसे ही बात करेगी।" फोन रखने से पहले उन्होंने अंत में कहा, "पहले से ही धन्यवाद!"
क्या आंटी मोमोको मुझे पसंद करने लगी थीं? जबकि हमारी बातचीत लगभग न के बराबर ही हुई थी? यह बात कुछ संदिग्ध लग रही थी। लोग अक्सर अपने वैवाहिक मामलों में किसी बाहरी व्यक्ति के दखल को शर्मनाक समझते हैं। लेकिन उन्हें मुझसे विनती करते सुनने के बाद, मेरे पास अपने चाचा को मना करने का कोई रास्ता नहीं था। आखिर, मैं उनका बहुत ऋणी था।

3

“चलो अंदर चलते हैं,” मोमोको ने कहा। “हमें बहुत सारी बातें करनी हैं।” मोमोको के कहने पर हम तीनों दुकान के सामने खड़े रहना छोड़कर अंदर चले गए। मैंने दो महीने से दुकान के अंदर कदम नहीं रखा था।
हमेशा की तरह, दुकान किताबों से भरी हुई थी। चलते समय लकड़ी के फर्श से चरमराहट की आवाज़ आती थी। खिड़की से आती ढलते सूरज की हल्की रोशनी में धूल इधर-उधर उड़ रही थी। मैंने गहरी सांस ली और उस जानी-पहचानी खुशबू से अपने फेफड़ों को भर लिया।
मुझे याद है जब मैं पहली बार दुकान में दाखिल हुई थी—मेरे चाचा शर्म से हंस पड़े थे जब मैंने मुंह बनाकर कहा था, "इसमें सीलन की गंध आ रही है।" अजीब बात है कि अब मुझे पुरानी किताबों की वह सीलन भरी गंध इतनी पसंद आने लगी है कि मैं उससे कभी ऊब नहीं सकती।
हम तीनों काउंटर के चारों ओर इकट्ठा होकर मीठे ताइयाकी केक खा रहे थे। मैंने इन्हें रास्ते में एक छोटे से उपहार के रूप में खरीदा था। खाते-खाते दो बार ग्राहक दुकान में आए। हमें चूहों के झुंड की तरह एक साथ बैठे देखकर वे थोड़े चौंक गए और अपनी किताबें खरीद लीं। मोमोको मेरे चाचा के लिए ग्राहकों को संभाल रही थी और उनसे दोस्ताना अंदाज में बात कर रही थी। इतने सालों तक एक पुस्तक विक्रेता की पत्नी रहने के कारण उसे काफी अनुभव था। अंदर जाने के बाद भी मोमोको ही लगभग सारी बातें कर रही थी। लेकिन जिस तरह से वह एक बात से दूसरी बात पर भटक रही थी, उसे समझना नामुमकिन था। वह किसी ऐसे विमान की तरह थी जो चक्कर खा रहा हो।
“ताकाको, तुम भी कभी यहाँ रहती थी? बिल्कुल मेरी तरह, है ना? यहाँ तो एसी बिल्कुल नहीं चलता, तो यहाँ गर्मी बहुत तेज़ रही होगी। अरे वाह, इस ताइयाकी केक की मीठी फिलिंग तो पूरी तरह से भरी हुई है! ये तो बहुत ही स्वादिष्ट है। तुमने इसे कहाँ से खरीदा? ये इलाका तो पहले से बहुत बदल गया है। अब यहाँ ज़्यादा फैंसी दुकानें खुल गई हैं। उफ़, 'फैंसी' कहने से तो मैं अधेड़ उम्र की लगती हूँ, है ना?”
एक विषय से दूसरे विषय पर जाते हुए, मोमोको न जाने क्यों कभी-कभी मेरे चाचा के गालों को चुटकी काट लेती थी। उसने उन्हें इतनी बार चुटकी काटी थी कि उनके दोनों गाल एकदम लाल हो गए थे।

मुझे यह इतना अजीब और आश्चर्यजनक लगा कि मैंने उसे बीच में ही रोककर कहा, "उम, तुम अभी-अभी उसके गाल क्यों चुटकी काट रही थी?"
"ओह, क्या मैं उन्हें चुटकी काट रही थी?" मोमोको ने हैरानी से पूछा।
“तुम निश्चित रूप से थे।”
“लोगों को चुटकी काटना मेरी पुरानी आदत है। जब मुझे किसी के करीब महसूस होता है, तो मैं खुद को उन्हें चुटकी काटते हुए पाता हूँ। शायद यह स्नेह दिखाने का एक तरीका है। लेकिन जब मैं सटोरू को चुटकी काट रहा था, तो क्या उसका चेहरा प्यारा नहीं लग रहा था?”
यह कहते हुए मोमोको ने मेरे चाचा के दोनों गालों को कसकर चुटकी से दबाया और उन्हें ऊपर-नीचे और दाएं-बाएं हिलाया, मानो यह बच्चों के खेल में दी जाने वाली कोई सजा हो। मेरे चाचा का चेहरा बेहद दुखी लग रहा था। वह बिल्कुल भी प्यारा नहीं था।
“बस करो…” मेरे चाचा दर्द से चिल्लाए, लेकिन उन्होंने उसे ऐसा करने दिया। मानो उन्हें इसकी आदत हो गई हो। उनकी आवाज़ से पता चलता था कि उन्होंने इसे लगभग स्वीकार कर लिया था। उनकी इस प्रतिक्रिया पर मोमोको ज़ोर से हंस पड़ी। आखिरकार, उसने उन्हें छोड़ दिया। ऐसा लगता था जैसे मोमोको के अंदर एक छिपी हुई क्रूरता थी।
"क्या तुम्हें ताकाको के सामने ऐसा करने में शर्म नहीं आती?"
“इसमें बड़ी बात क्या है? वह कोई अजनबी तो नहीं है। वह हमारी भतीजी है।” “हम तो वयस्क हैं। हमारी गरिमा का क्या होगा?” मेरे चाचा ने पूछा।
“तुम्हारे अंदर इज्जत कब से आ गई?” मोमोको ने पलटवार किया।
अगर हम दोनों करीब आ गए, तो क्या मुझे भी चुटकी काटनी पड़ेगी? उनकी नोकझोंक देखते हुए, मैं इस विचार से कांप उठा।
फिर मोमोको ने अचानक दूसरा विषय शुरू कर दिया।
उसने अचानक मेरे दोनों हाथ पकड़ लिए और अपनी निगाहें मुझ पर टिका दीं। “लेकिन तुम्हें देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैं कभी-कभी तुम्हारे बारे में सोचती थी, तुम्हें पता है। मैं सोचती थी कि मेरी प्यारी भतीजी का क्या हुआ होगा। आखिर, जब तुम हाई स्कूल में थी, तो तुम कितनी प्यारी युवती लगती थी, इतनी शांत और संयमित। और पेज बॉय हेयरकट में तुम कितनी प्यारी लगती थी।” “क्या आप मेरे बारे में यही सोचते थे? मैं तो बिल्कुल भी ऐसी नहीं थी।” मेरे पास कहने के लिए शब्द नहीं थे। उस समय मैं किशोरावस्था के चरम पर थी;

मुझे हमेशा ऐसा लगता था कि मैं अपनी सारी निराशाओं, उन सभी भावनाओं के बोझ तले दबकर चूर-चूर हो जाऊंगी जिन्हें मैं दूसरों के सामने व्यक्त नहीं कर सकती थी या अपने भीतर ही संभाल नहीं सकती थी। मैं बहुत पीड़ा में थी। यह मानना मुश्किल है कि कोई मुझे इतना अलग कैसे देख सकता था। पारिवारिक समारोहों में इतना अच्छा व्यवहार करने का मेरा एकमात्र कारण यही था कि मैं किसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित न होने दूं।
लोगों की राय वाकई भरोसेमंद नहीं होती, है ना? यही बात मेरे मन में आई जब मोमोको मेरी तरफ़ शरारती मुस्कान के साथ देख रही थी। मेरे चाचा के बारे में भी मेरी कई धारणाएँ गलत थीं। आख़िरकार, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि आप खून के रिश्ते से जुड़े हैं या स्कूल में एक ही कक्षा में या एक ही दफ्तर में सालों साथ बिताए हैं; जब तक आप आमने-सामने नहीं मिलते, आप किसी को पूरी तरह से जान नहीं पाते। हिदेकी के साथ भी ऐसा ही था। मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकती थी कि जो कुछ हुआ, उसके लिए मैं काफ़ी हद तक ज़िम्मेदार थी। इसने मुझे उन सब बातों के बारे में फिर से सोचने पर मजबूर कर दिया। “तो, आंटी मोमोको, मुझे लगता है कि आपके बारे में मेरी पुरानी धारणा शायद काफी गलत थी,” मैंने व्यंग्य भरे लहजे में जवाब दिया। लेकिन मोमोको ने दिल खोलकर हँसी, मानो उन्हें कोई आपत्ति ही न हो।
“खैर, उन पारिवारिक समारोहों में मैं भी अच्छी लड़की होने का नाटक करती थी। क्या आपको नहीं लगता कि उस परिवार के बहुत से लोग थोड़े सख्त मिजाज के थे? मेरे ससुर तो उनमें से एक थे ही। सच में, उनके चेहरे के हाव-भाव कभी नहीं बदलते थे। ऐसा लगता था जैसे उन्होंने नोह का मुखौटा पहन रखा हो। ऊपर से, हम भागकर शादी भी कर चुके थे। वे पारिवारिक समारोह असहनीय हो जाते थे। जब हम वहाँ पहुँचते थे, तो माहौल बहुत तनावपूर्ण हो जाता था। इसीलिए मैं हमेशा एक कोने में दुबकी रहती थी, ताकि कोई मुझे देख न सके।”
तो ये सब था। और फिर भी आपने शादी कर ली?
“खैर, उस समय हम साथ रह रहे थे, इसलिए वे हमें संदिग्ध मानते थे। हम पेरिस में मिले और प्यार हो गया, और जैसे ही हम जापान वापस आए, उन्होंने मेरा नाम पारिवारिक रजिस्टर में जोड़ दिया। मुझे लगता है कि हम बस उस माहौल में बह गए।”
“पा-पेरिस?” मैं चिल्लाई। “पेरिस ही क्यों?”

“तुम्हें नहीं पता था? मैं उस समय पेरिस में रह रहा था। वह कम खर्च में घूम रहा था, और हम कभी-कभी पुराने किताबों के बाज़ार में एक-दूसरे से मिल जाते थे। आप सोचेंगे कि जिस परिवार की पुरानी किताबों की दुकान हो, उस परिवार के किसी आदमी को घूमने-फिरने के दौरान किताबों की दुकानों पर जाने की ज़रूरत नहीं होगी। लेकिन यह आदमी ऐसा नहीं था। ऊपर से उसकी घनी दाढ़ी थी और फटे- पुराने कपड़े पहने रहता था, इसलिए वह भिखारी जैसा दिखता था।”
"इस तरह तुम जेबकतरों और लुटेरों के निशाने पर नहीं आओगी," मेरे चाचा ने समझाने की कोशिश की, लेकिन मोमोको ने उनकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। “लेकिन जब मैंने उससे बात करना शुरू किया, तो वह काफी दिलचस्प इंसान निकला। शायद थोड़ा रहस्यमय, और यह तय नहीं कर पा रहा था कि उसे अपने जीवन में क्या करना है। ऐसा व्यक्ति जिसे देखभाल की ज़रूरत थी। फिर मैंने सोचा कि क्यों न मैं उसके साथ थोड़ा समय बिताऊं...”
"सच में?"
कुछ समय बाद, मुझे मोमोको के तेज़ी से बताने का अंदाज़ समझ आने लगा। तो उन दोनों की मुलाकात तब हुई जब मेरे चाचा अपनी समस्याओं से निपटने के लिए दुनिया भर की यात्रा कर रहे थे। फिर भी, पेरिस रोमांटिक था। लेकिन सबसे ज़्यादा जो बात मुझे समझ नहीं आ रही थी, वह यह थी कि मोमोको पेरिस में क्यों थी। मैंने उससे पूछने की कोशिश की, लेकिन उसने बस इतना कहा, "ओह, मैं जवान थी, तुम्हें पता है ना," और सवाल को टालने की पूरी कोशिश की।
मैंने सोचा, यह महिला रहस्यों से भरी हुई है।
खैर, इस तरह हमारी मुलाकात हुई। हम जापान वापस आए, शादी की, और सबने हमें ठुकरा दिया, लेकिन फिर उसके पिता बीमार पड़ गए, और सटोरू ने उनकी जगह लेने का फैसला किया। उसके बाद हमने उन सबको नीचा दिखाने के लिए जी-जान से मिलकर काम किया।
"मुझे उन्हें नीचा दिखाने का ख्याल कभी नहीं आया," मेरे चाचा ने बीच में कहा।
“झूठे! तुम्हें अपने पिता को लेकर तरह-तरह की समस्याएं थीं! मुझे इतना तो पता चल ही गया था।”
मेरे चाचा ने एक शब्द भी नहीं कहा। वे बस उदास बैठे रहे। वह उनकी पत्नी थीं, लेकिन ऐसा लग रहा था कि वे उनके लिए बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं थे।

मैंने उन्हें इस तरह पहली बार देखा था; यह इतना हास्यास्पद था कि मैं कई बार हंसते-हंसते लोटपोट हो गया।
लेकिन अगर निष्पक्ष रूप से देखा जाए तो वे सचमुच एक खुशहाल दंपत्ति लग रहे थे। सुनने में भले ही अजीब लगे, लेकिन मुझे उनके रिश्ते से थोड़ी जलन भी हुई। उनके बीच की आत्मीयता उन्हें विवाहित जोड़े से ज़्यादा पुराने दोस्तों या साथियों जैसा बना रही थी। इससे मुझे वाकई सुकून मिला।
कुछ देर बाद, मेरे चाचा दुकान में भीड़ होने का बहाना बनाते हुए चले गए, और मोमोको मुझे खींचकर दूसरी मंजिल पर बने कमरे में ले गई। अचानक वह मेरे करीब झुक गई, मानो वह मुझसे कुछ गुप्त बात साझा करना चाहती हो।
"इसीलिए मैं चाहती हूं कि हम दोस्त बनें, ताकाको।"
उसने मेरा हाथ पकड़ा और फिर से अपनी निगाहें मुझ पर टिका दीं। मुझे लगा, उसके हाथ कितने छोटे थे, किसी बच्चे के हाथों जैसे।
“आह…”
“यह ठीक नहीं है कि तुम सिर्फ सटोरू के ही करीब हो। मैं चाहता हूँ कि हम दोनों भी करीब हों। क्या यह तुम्हें ठीक लगता है?”
“आह… हाँ…” मैंने उसकी बात पर सिर हिलाया, लेकिन मन ही मन बड़बड़ाया, यह आसान नहीं होने वाला है।

4

जब रात हुई, तो मैंने मोमोको के मुझे और देर तक रोकने के प्रयासों का विरोध किया, अलविदा कहा और किताबों की दुकान से निकल गया।
मैं ट्रेन स्टेशन की ओर जाते हुए संकरी गलियों में घूम रहा था। रात ठंडी थी, हवा में हल्की सी ठंडक थी। जैसे ही मैं स्ट्रीटलाइट्स के नीचे से गुजरा, डामर पर मेरी परछाईं लंबी होती गई।
सेवर पहुंचते ही मेरे पैर अपने आप रुक गए। रात के सुनसान इलाके में उसके साइनबोर्ड की नारंगी रोशनी चमकती देख, मैं पावलोव के कुत्ते की तरह कॉफी पीने की तीव्र इच्छा से भर गया। जब मैंने घड़ी देखी, तो आठ बजने ही वाले थे। मैंने दरवाजा खोला। ऐसा लगा जैसे कोई चीज मुझे अंदर खींच रही हो।
रात के इस समय भी कॉफी शॉप में हमेशा की तरह चहल-पहल थी। प्रवेश द्वार से ही मुझे अन्य ग्राहकों की चहल-पहल भरी बातचीत के साथ पियानो की मधुर धुन सुनाई दे रही थी।
तभी मेरी नज़र काउंटर पर बैठे एक जाने-पहचाने चेहरे पर पड़ी। पीछे से उसका छोटा और मोटा शरीर और चिकना गंजा सिर देखकर मैं समझ गया कि यह साबू ही हो सकता है। वह दुकानदार से किसी बात पर गहरी बातचीत कर रहा था। जब उसने मुझे देखा, तो उसने हाथ हिलाकर मुझे अपने पास बैठने का इशारा किया।
जब मैं साबू के बगल में बैठी तो मालिक ने हमेशा की तरह मुस्कुराते हुए मेरा स्वागत किया। "अरे, ताकाको, तुम्हें वापस देखकर अच्छा लगा।"
जैसे ही मैं उसे देखकर मुस्कुराने ही वाली थी कि साबू ने बीच में टोकते हुए कहा, "ताकाको, तुम्हें थोड़ा और मुस्कुराना चाहिए। थोड़ी दोस्ताना बनने की कोशिश करो। इसीलिए तुम लड़कों के बीच लोकप्रिय नहीं हो।"
मैंने उससे कहा कि यह उसका मामला नहीं है।
साबु खिलखिलाकर हँस पड़ा मानो कोई बात हास्यास्पद हो। “लेकिन तुम बिल्कुल सही समय पर आए हो,” उसने कहा। “हम अभी तुम सबके बारे में ही बात कर रहे थे। मोमोको वापस आ गई है, है ना? सटोरू तो एकदम शांत है—उसने मुझे इसके बारे में क्यों नहीं बताया?” उसकी आवाज़ में जिज्ञासा साफ झलक रही थी।
“साबु, ज्यादा पूछताछ मत करो,” मालिक ने उसे डांटते हुए कहा।
“क्यों? इसमें बड़ी बात क्या है? वैसे भी, तुमने ही तो मुझे इसके बारे में बताया था? तुमने ही कहा था कि मोमोको वापस आ गई है,” साबू ने रूठने का नाटक

करते हुए कहा। एक बूढ़े आदमी का रूठने का नाटक करना बिल्कुल भी प्यारा नहीं लगता। सेवूर में एकमात्र प्यारी चीज़ मेरी दोस्त टोमो थी, जो यहाँ पार्ट-टाइम काम करती थी। दुर्भाग्य से, उसने अपनी पढ़ाई पूरी कर ली थी और उसे नौकरी मिल गई थी, इसलिए वह अब कॉफी शॉप में नहीं थी। लेकिन मैंने जो सुना है, उसके अनुसार वह और ताकानो अपनी “दोस्ती” निभा रहे थे।
जब मालिक ने धीरे से मेरी कॉफी मेरे सामने रखी, तब भी साबू शिकायत कर रहा था।
“कल रात साबू यूं ही अंदर आ गया था, और मैंने इस बात को नज़रअंदाज़ कर दिया,” मालिक ने माफी मांगते हुए कहा। हालांकि, उसकी आंखों में जिज्ञासा झलक रही थी।
“आप दोनों मोमोको को पहले से जानते थे, है ना?”
“बिल्कुल। आपको क्या लगता है कि मैं कितने सालों से इस मोहल्ले में घूम रहा हूँ?” साबू ने खुद पर काफी गर्व जताते हुए कहा।
“श्री मोरिसाकी की पहले शादी हो चुकी थी? यह मेरी उनके बारे में बनी धारणा से मेल नहीं खाता।” कुछ देर बाद, ताकानो रसोई से दोनों हाथों में प्लेटें और तौलिए लिए बाहर आया और उत्सुकता से बातचीत में शामिल हो गया।
“हाँ, बिल्कुल,” साबू ने कहा। “तुम्हें पता ही नहीं चला। वो सचमुच एक तरह से विधुर हैं, है ना? लेकिन जब वो जवान थे, तो वो दोनों सबके सामने रोमांस करते थे। ये तो एक तमाशा ही होता था, है ना?”
“हाँ, थोड़ा बहुत तो हुआ था,” मालिक ने कहा। “खैर, मोमोको अब भी खूबसूरत है, है ना? जब वह आई तो उसने कहा, ‘इतने समय बाद आपकी कॉफी पीकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।’ वह देखने में काफी स्वस्थ लग रही थी।”
“अरे, तुम तो बड़े भोले हो। वो तो बस तुम्हारी तारीफ करना चाहती थी। अगर मुझसे पूछो, तो सालों बाद अचानक घर लौटी हो तो उसके पास कुछ मज़ेदार चुटकुले तो होने ही चाहिए। सटोरू को उसे तुरंत भगा देना चाहिए। अगर मेरी पत्नी ऐसा करती, तो मैं उसे पीट देता।” ये सब कहते-कहते साबू इतना उत्तेजित हो गया कि उसका चेहरा ऑक्टोपस की तरह लाल हो गया।
“ज़रा रुकिए, साबू। आपकी आवाज़ में बहुत गुस्सा झलक रहा है। लेकिन जब भी आपकी पत्नी आपसे कुछ किताबें हटाने के लिए कहती है, तो क्या आप ही रोते हुए उससे मिन्नतें नहीं करते?”
यह सुनकर ताकानो और मैं दोनों जोर से हंस पड़े।

“अरे, चुप रहो! ताकानो, तुम किस बात पर हंस रहे हो? काम पर वापस जाओ!”
"माफ़ करना, माफ़ करना।" साबू द्वारा तौलिया फेंके जाने पर ताकानो जल्दी से पीछे की ओर भाग गया।
"अगर आप नाराज हैं, तो मेरे कर्मचारियों पर अपना गुस्सा मत निकालिए," मालिक ने अपने चेहरे पर झुंझलाहट का भाव लिए कहा।
"क्या तुम ही वो व्यक्ति नहीं हो जो आमतौर पर उसे तंग करते हो?"
“मैं यह सब प्यार से करता हूँ। प्यार से,” मालिक ने गंभीरता से कहा, “जबकि आपकी पत्नी आपके मन में जो भावना जगाती है वह... डर है।”
“तुम हमेशा से ही बड़े बदतमीज़ रहे हो, है ना? ठीक है। मैं गुस्से में हूँ। मैं बहुत नाराज़ हूँ। ठीक है। क्यों न मैं सटोरू की तरफ से मोमोको से कुछ सख्त बातें करूँ? हम जानते हैं कि वो बेवकूफ कभी कुछ नहीं कह पाएगा।” "अरे, दूसरों के मामलों में दखल देना बंद करो।"
मालिक साबू को डांट रहा था, जबकि असल में साबू को गुस्सा दिलाने वाला वही था।
वाह! इस मोहल्ले में तो वाकई अजीबोगरीब लोग भरे पड़े हैं। ये सोचकर मुझे हंसी आ गई, लेकिन तभी साबू ने मेरी तरफ इशारा करते हुए कहा, "ताकाको, अकेले में मुस्कुराना बंद करो। ये अच्छा नहीं लगता।"

इसके तुरंत बाद, सेवूर में एक और छोटी सी घटना घटी। करीब नौ बजे, साबू ने हंगामा करना बंद कर दिया और घर चला गया (शायद इसलिए कि अगर वह जल्दी वापस नहीं आता तो उसकी पत्नी उसे खूब खरी-खोटी सुनाती), इसलिए मैं एक मेज पर जाकर बैठ गया। जैसे-जैसे रात बढ़ती गई, वहाँ कुछ ही ग्राहक बचे थे। मैंने एक और कॉफ़ी मंगवाई और तुरंत अपने बैग से अपनी किताब निकाली और उसे अपने पन्ने पर खोला। तभी मेरी नज़र एक बात पर पड़ी। खिड़की के पास कोई जाना- पहचाना व्यक्ति बैठा था।
वह दुबला-पतला आदमी था, जिसकी उम्र लगभग तीस के आसपास थी। उसने हल्के नीले रंग की कमीज़ और भूरे रंग की पैंट पहनी हुई थी। उसके बाल छोटे और करीने से कटे हुए थे। दिखावटीपन तो नहीं था, लेकिन उसकी साफ-सफाई में कुछ आकर्षण था। वह खिड़की से बाहर अनमने ढंग से देख रहा था, और मेज पर एक आधी पढ़ी हुई किताब औंधे मुंह पड़ी थी। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी का इंतज़ार कर रहा हो।

वह कौन था? जब मैं उसे घूरते हुए इस बारे में सोच रहा था, तभी वह अचानक मेरी ओर मुड़ा, मानो उसने देख लिया हो कि मैं उसे देख रहा हूँ।
जब हमारी नज़रें मिलीं, तो हम दोनों हैरान रह गए। उन्होंने मेरी तरफ देखा, फिर मेरे हाथ में पकड़ी किताब की तरफ, फिर बार-बार दोनों को देखते रहे, मानो दोनों की तुलना कर रहे हों। फिर उन्होंने सिर हिलाया जैसे समझ गए हों, और धीरे से कहा, "हैलो।"
उनकी आवाज़ सुनकर मुझे आखिरकार याद आया कि मैं उनसे पहले कहाँ मिल चुका था। मैं कैसे भूल सकता था? मोरिसाकी बुकशॉप में उनसे मेरी कई बार मुलाक़ात हुई थी। क्योंकि हमारे यहाँ बेहद विचित्र ग्राहकों की भरमार रहती थी— जिनमें साबू प्रमुख थे—इसलिए उनके जैसे थोड़े अंतर्मुखी व्यक्ति के लिए अपनी छाप छोड़ना मुश्किल था। इसलिए मुझे उन्हें याद करने में बस एक पल लगा। उनकी अभिवादन का जवाब देते हुए मैं थोड़ा घबरा गया, उन्हें इतनी बेशर्मी से घूरने पर मुझे शर्म आ रही थी।
“आपको देखकर अच्छा लगा। काफी समय हो गया,” मैंने कहा और जल्दी से झुककर अभिवादन किया, लेकिन उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, “अरे, इतनी औपचारिक होने की कोई ज़रूरत नहीं है।” उनकी मुस्कान इतनी प्यारी थी कि मन को सुकून मिल जाता था।
ठीक उसी समय, वेट्रेस मेरी टेबल पर मेरी कॉफी ट्रे में लेकर आई। वह हम दोनों के ठीक बीच में खड़ी थी और स्थिति को लेकर असमंजस में लग रही थी। मैं भी इस उलझन में पड़ गया और घबरा गया।
यह देखकर उसने शर्माते हुए बैठने का निमंत्रण दिया। "क्या आप यहाँ बैठना चाहेंगे?"
मैंने हिचकिचाते हुए पूछा, "क्या आप किसी का इंतजार कर रहे होंगे?" उन्होंने जवाब दिया, "फिलहाल तो बिल्कुल नहीं।"
यह सुनकर वेट्रेस का आत्मविश्वास और मुस्कान वापस आ गई। "तो फिर, यह लीजिए," उसने कहा और झटपट मेरी कॉफी उसकी सीट के सामने रख दी।
जिस पर मैंने जवाब दिया, "मुझे लगता है कि मैं यहीं बैठूंगा," और मैं उसके सामने वाली सीट पर बैठ गया।
ऐसे समय में मैं अक्सर भावनाओं में बह जाती हूँ। उन्होंने मुझे अपने घर बुलाया था, यह उनकी बड़ी मेहरबानी थी। ऐसा नहीं था कि वे मुझसे बात करना

चाहते थे। अब मैं उनके अकेले समय में खलल डाल रही थी। जब मैंने इस तरह सोचना शुरू किया, तो मुझे लगा कि मुझे उनसे माफी मांगनी चाहिए।
जब मैं अपनी नई सीट पर पहुंचा, तो वेट्रेस ने हमसे कहा कि हम आराम से समय लें, फिर उसने झुककर अभिवादन किया और चली गई। हमने उसे जाते हुए देखा, फिर मुड़कर एक-दूसरे की ओर देखा।
मौन।
ये तो अजीब बात है, मैंने अपनी सीट पर थोड़ा हिलते हुए सोचा। फिर वो धीरे- धीरे खुद ही हंसने लगा। मैं उसे खाली निगाहों से देखती रही।
उन्होंने कहा, "माफ़ कीजिएगा, यह कुछ-कुछ अरेंज्ड मैरिज की तरह लग रहा है।" उसके चेहरे की मुस्कान ने मेरा दिल जीत लिया और मैं जोर से हंस पड़ी। “हमने अपना परिचय ठीक से नहीं दिया,” उन्होंने गला साफ करते हुए कहा। “मेरा नाम अकीरा है—अकीरा वाडा।” उन्होंने बताया कि वे पास ही स्थित एक प्रकाशन कंपनी में काम करते हैं जो मुख्य रूप से पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण सामग्री का कारोबार करती है।
जब मैंने अपना परिचय दिया, तो उन्होंने कहा, “जी हां, ताकाको! मुझे याद है कि दुकान का हंसमुख मालिक हमेशा जोर-जोर से ‘ताकाको! ताकाको!’ चिल्लाता रहता था।” हंसते हुए उन्होंने बार-बार सिर हिलाया।
मेरा चेहरा लाल हो गया। "अरे, वो तो मेरे चाचा होंगे," मैंने धीरे से कहा। “सच में, आपके चाचा? किसी रिश्तेदार का पुरानी किताबों की दुकान चलाना कितना बढ़िया होगा!” वाडा ने सचमुच ईर्ष्या भरे लहजे में कहा। “लेकिन आप अब दुकान में काम नहीं करते?”
"हाँ, किसी न किसी कारणवश, मैं वहाँ कुछ समय के लिए रुक गया और रहने-खाने के बदले दुकान में काम करने लगा। आप कह सकते हैं कि मैं वहाँ इतने समय तक रहा कि मेरी ऊर्जा फिर से भर गई।"
“अपनी बैटरी चार्ज करें? दुकान पर?”
"हाँ।"
“वाह, ये तो बढ़िया है, अपनी ऊर्जा फिर से भर लो,” वाडा ने फिर कहा। “लेकिन किसी पुरानी किताबों की दुकान पर ऐसा करने का मौका मिले, ये तो वाकई शानदार है। अरे यार, मुझे तो जलन हो रही है।” फिर उसने लगभग एक लंबा भाषण दिया कि अगर वो होता, तो वो कभी जाता ही नहीं, बस हमेशा के लिए अपनी ऊर्जा फिर से भरता रहता।

किसी तरह पुरानी किताबों की दुकान में रहने का विचार उसके अंदर कुछ जगाने लगा। वह आश्चर्यजनक रूप से विनोदी स्वभाव का व्यक्ति बनता जा रहा था। “ओह, तुम्हारी गर्लफ्रेंड कैसी है?” मैंने पूछा। “मैं तुम दोनों को अक्सर साथ देखता था।” वह अभी भी किताबों की दुकान में रहने के बारे में वाह-वाह कर रहा था, तभी मुझे उसकी याद आ गई।
वाडा अक्सर अकेले ही दुकान पर आता था, लेकिन कभी-कभी वह अपने साथ एक लड़की को ले आता था। वह भी वाडा की तरह दुबली-पतली और लंबी थी, और दोनों साथ में अच्छे लगते थे। लेकिन किताबों में उसकी कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखती थी। वाडा गंभीर भाव से किताबों को ध्यान से देखता रहता, जबकि वह लड़की ऊबकर कहीं और देखती रहती। जब आखिरकार वह उसका इंतज़ार करते-करते थक जाती, तो नाराज़ होकर कहती, "अभी तक खत्म नहीं हुआ?" और वाडा बड़ी मुश्किल से माफ़ी मांगते हुए कहता, "माफ़ कीजिए, बस थोड़ी देर और!" साबू अक्सर कहता था, "पुरानी किताबों की दुकान पर पति-पत्नी का जाना एक अजीबोगरीब विचार है," लेकिन उन दोनों के बीच की नोकझोंक देखकर उनके बीच की नज़दीकी का एहसास हो जाता था। मुझे यह बहुत प्यारा लगता था।
“ओह, मुझे वो दिन याद हैं।” मेरे सवाल के जवाब में उनकी आवाज़ का लहजा थोड़ा बदल गया। “मुझे अफसोस है कि मुझे छोड़ दिया गया है,” उन्होंने आगे कहा और बेजान हंसी हंसे। फिर उनकी आंखों में एक उदास सी उदासी छा गई। “मुझे माफ कर दीजिए!” मैंने तुरंत माफी मांग ली। मैं उनके पैरों में गिरकर माफी मांगने के लिए तैयार थी।
"नहीं, नहीं, मुझे बिल्कुल भी बुरा नहीं लगता," वाडा ने कहा, इस बात को ज्यादा तवज्जो न देते हुए, लेकिन फिर भी उसकी आंखों में वही दूर की नजर थी। तो हमारी पहली बातचीत में ही मैंने एक ऐसी गलती कर दी जिससे मुझे बहुत परेशानी हुई। मैं बुरी तरह घबरा गया था। मैं बातचीत के लिए एक नया विषय ढूंढने की पूरी कोशिश कर रहा था, तभी मेरी नज़र मेज पर पड़ी किताब पर पड़ी। आप वहां क्या पढ़ रहे हैं?
“अरे, ये तो ‘अप द हिल’ नाम की किताब है। असल में, मुझे लगता है मैंने इसे मोरिसाकी बुकशॉप के सौ येन वाले सेक्शन से खरीदा था।”
वाडा ने किताब उठाई और मुझे दिखाई। मैंने मन ही मन राहत की सांस ली कि हम पिछले विषय से आगे बढ़ गए हैं।
“ओह? मुझे तो इसके बारे में पता नहीं। क्या यह अच्छी किताब है?”

सच कहूँ तो, यह कहना मुश्किल है। यह एक तरह की दुखद प्रेम कहानी है। लेखक एक ऐसा व्यक्ति था जिसने सिर्फ एक किताब लिखी और गुमनामी में ही उसकी मृत्यु हो गई। जब आप इसे पढ़ते हैं, तो लेखन शैली थोड़ी अटपटी लग सकती है, और कई जगह ऐसा लगता है कि कुछ कमी रह गई है। लेकिन इसमें कुछ ऐसा है जो मुझे आकर्षित करता है। मैं इसे लगभग पाँच बार पढ़ चुका हूँ।
जब वह बात कर रहे थे, तो उनकी निगाहें किताब के कवर पर बनी पहाड़ियों की सड़क की तेल चित्रकला पर टिकी हुई थीं। जिस स्नेह से वह किताब को देख रहे थे, उसमें एक कोमलता थी जिसने मुझे भी उसे पढ़ने के लिए प्रेरित किया।
"सच में? पांच बार? शायद मुझे भी इसे आजमा कर देखना चाहिए।"
“मुझे नहीं लगता कि मैं इसकी सिफारिश कर सकती हूँ। ताकाको, तुम क्या पढ़ रही हो?”
जब मैंने अपने बैग से किताब निकाली, तो उसने कहा, "ओह, तारुहो इनागाकी? वह तो कमाल के लेखक हैं।" उसने मेरी ओर एक शरारती चमक के साथ देखा।
मुझे लगता है कि मुझे इस बात से ही समझ जाना चाहिए था कि वह कितनी बार दुकान पर आता था और किताबों के बारे में मुझसे कहीं ज्यादा जानता था। "किताबों की दुकान में काम करने के बावजूद, मुझे किताबों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। मुझे लगता है कि मैंने अभी सिर्फ ऊपरी तौर पर ही जाना है।"
मुझे नहीं लगता कि किताबों के बारे में आपको कितनी जानकारी है, इससे कोई खास फर्क पड़ता है। वैसे, मुझे खुद भी किताबों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। लेकिन मुझे लगता है कि किताब के मामले में सबसे ज्यादा मायने यह रखता है कि वह आपको कैसे प्रभावित करती है।
“क्या आपको ऐसा लगता है? मेरे चाचा हमेशा कुछ ऐसा ही कहते हैं।”
“तुम हमेशा काउंटर के पीछे, अपनी किताब में डूबी रहती थी। मुझे हमेशा यह जानने की उत्सुकता रहती थी कि आखिर तुम क्या पढ़ रही होती हो।”
“सच में? मुझे बहुत खेद है। मैं एक बहुत बुरा कर्मचारी था।”
“नहीं, मेरा मतलब वो नहीं था,” वाडा ने कहा और मेरी तरफ ऐसे देखा जैसे कुछ याद करने की कोशिश कर रहा हो। “तुम दुकान में इतनी अच्छी तरह घुल-मिल गई थीं कि मैंने तुम्हें वहीं रहने दिया। ये लगभग उस पल जैसा था जब आप किसी तितली को उसके कोकून से निकलते हुए देख रहे होते हैं, और आप अपनी सांस रोक लेते हैं, और देखते रहना चाहते हैं... मुझे लगता है तुमने मुझ पर गहरी छाप

छोड़ी है। इसीलिए जब मैंने तुम्हें अभी थोड़ी देर पहले हाथ में किताब लिए वहाँ देखा, तो मुझे तुरंत याद आ गया। मैंने कहा, ‘ये वही औरत है जो उस किताबों की दुकान में मिलती थी।’”
किसी अनजान व्यक्ति द्वारा उस तरह देखे जाने के ख्याल से ही मुझे बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई। लेकिन उन दिनों, मैं सचमुच एक तितली की तरह थी जो अपने कोकून से बाहर आने का बेसब्री से इंतजार कर रही थी। जैसे-जैसे मैं पन्ने पलटती गई, मैं उड़ने के अपने मौके का इंतजार करती रही। इसलिए यह संभव है कि वाडा ने मुझे देखकर यह महसूस किया हो। हालांकि, मुझे पूरा यकीन नहीं है कि मैंने उड़ना इतना अच्छे से सीख लिया है।
“अगर मैं उस दुकान पर कभी नहीं गया होता, तो मैं अब भी एक तरह के भ्रम में ही जी रहा होता। वहाँ मेरी मुलाकात कितने लोगों से हुई, मैंने कितना कुछ सीखा, और हाँ, वहाँ मुझे कितनी सारी किताबें मिलीं। मुझे ऐसा लगता है कि आखिरकार मैंने अपने अंदर कुछ अनमोल चीज़ देखना सीख लिया है। इसीलिए मैं जानता हूँ कि मैं उस किताब की दुकान पर बिताए दिनों को कभी नहीं भूलूँगा।” हालाँकि यह पहली बार था जब मैंने उससे खुलकर बात की थी, लेकिन मेरे मुँह से शब्द इतनी तेज़ी से निकले कि मैं खुद को रोक नहीं पाया।
वाडा प्रशंसा भरे भाव से सुनते हुए सिर हिलाता रहा। "सोचो, ये सारा ड्रामा मेरी जानकारी के बिना चल रहा था। अरे बाप रे!" वह शायद गंभीर था, लेकिन उसके कहने का तरीका अजीबोगरीब ढंग से मज़ेदार था।
यह अजीब भी था—ऐसा लगता था जैसे हम हमेशा से दोस्त रहे हों, जैसे मैं उससे घंटों बातें कर सकती थी। जब वाडा गंभीरता से मेरी बात सुन रहा होता, तो अचानक कोई मज़ेदार बात कह देता और मुझे हँसा देता।
इसी वजह से हमारी बातें इतनी देर तक चलती रहीं। जब मेरी नज़र दीवार पर लगी घड़ी पर पड़ी, तो लगभग ग्यारह बज चुके थे। "ओह, वे जल्द ही बंद करने वाले हैं," मैंने हैरानी से कहा।
“क्या?” वाडा भी अचंभित नजर आया।
उसका घर पास ही था, इसलिए वाडा दुकान बंद होने तक वहीं रुकने वाला था।
मैंने उससे थोड़ा पहले निकलने का फैसला किया।
"मैं लगभग हर रात यहीं रहता हूँ। हमें कभी फिर बात करनी चाहिए," उसने मुस्कुराते हुए कहा जब हमने विदा ली।

प्रवेश द्वार के पास काउंटर पर भुगतान करने के बाद, मैंने देखा कि दुकानदार काउंटर के पीछे से चुपके से मेरी तरफ देख रहा था। मुझे अच्छी तरह पता था कि वह क्या सोच रहा है, इसलिए मैंने उसे घूरकर देखा, जब तक कि उसने ज़ोर से बुदबुदाते हुए कहा, "मैं व्यस्त हूँ, व्यस्त हूँ, व्यस्त हूँ," और फिर पीछे चला गया।
बाहर निकलते ही मैंने सेवूर की खिड़की से वाडा को देखा, वो ठुड्डी हाथ पर टिकाए बाहर घूर रहा था। मैंने उसे झुककर प्रणाम किया, यह सोचकर कि शायद वो मुझे देख रहा हो, लेकिन उसने ध्यान ही नहीं दिया। मैं मुड़ा और स्टेशन की ओर चलने लगा। मेरा शरीर अजीब तरह से हल्का महसूस हो रहा था, जैसे मेरे पैर ज़मीन से ऊपर तैर रहे हों।
कितना अजीब है, मैंने मन ही मन बुदबुदाया।
जब मैंने ऊपर देखा, तो मुझे लगभग पूरा चांद दिखाई दिया, जिसके बाईं ओर से बस एक पतली सी पट्टी गायब थी, और वह रात के आकाश में तैर रहा था।

5

"चलो हम दोनों साथ में घूमने चलते हैं।"
जब मोमोको ने मुझसे यह सवाल पूछा, तो उससे कई सालों बाद पहली बार मिलने के लगभग दो हफ्ते बाद की बात थी।
"ओकुटामा में एक बहुत ही बढ़िया जगह है," उसने आंखों में चमक के साथ कहा। मैंने सिर हिलाया, खुद को थोड़ा फंसा हुआ महसूस कर रहा था।
“वहाँ एक विशाल पर्वत है, और उसकी चोटी पर एक ऐतिहासिक तीर्थस्थल है। नज़ारा बेहद खूबसूरत है, और हवा एकदम शुद्ध है। यह अद्भुत है। पर्वत पर एक प्यारा सा सराय भी है, जहाँ हम रुककर कुछ दिन आराम कर सकते हैं। लड़कियों का ट्रिप। आपको क्या लगता है?”
जब मैंने हम दोनों के एक साथ यात्रा पर जाने की कल्पना करने की कोशिश की, तो मुझे थोड़ी बेचैनी होने लगी। लेकिन वह मेरे हाथों को अपने हाथों में थामे हुए थी, उन्हें कसकर दबा रही थी, और मैं उसकी आँखों में देख सकती थी कि वह मेरे हाँ कहने का इंतज़ार कर रही थी। मुझे ज़बरदस्त एहसास हुआ कि मुझ पर दबाव डाला जा रहा है।
हमारे पुनर्मिलन और इस निमंत्रण के बीच के दो हफ्तों में, मैं अक्सर किताबों की दुकान पर जाया करता था। ज़ाहिर है, मैं वहाँ अपने चाचा के लिए मोमोको पर नज़र रखने जाता था। काम से निकलते समय अक्सर हमारी मुलाक़ात हो जाती थी, लेकिन मोमोको हमेशा दूसरी मंज़िल के कमरे में होती थी।
जब भी मैं उनसे मिलने जाता, मोमोको मुझे देखकर बहुत खुश होतीं। और वो हमेशा मुझे घर का बना खाना खिलातीं। जब मैं वहाँ रहता था, तो दूसरी मंज़िल पर रसोई बहुत छोटी लगती थी, इसलिए मुझे वहाँ खाना बनाने का मन नहीं करता था, लेकिन मोमोको तरह-तरह के व्यंजन बनाती थीं। वो हिजिकी समुद्री शैवाल, टोफू के साथ बीफ़, ऑक्टोपस और डाइकॉन पकाती थीं। वो हॉर्स मैकेरल को नानबानज़ुके स्टाइल में तलती थीं, पाइक मैकेरल को नमक में ग्रिल करती थीं, डाइकॉन के पत्तों, मूली और तले हुए टोफू के साथ मिसो सूप बनाती थीं। मुझे घर के खाने की इतनी याद आती थी कि मैं लगभग सिर्फ खाने के लिए ही आने लगा था। जब मैं दोपहर के भोजन के समय ऑफिस से उन्हें फोन करता, तो मोमोको नई दुल्हन की तरह हमेशा पूछतीं, "आज क्या खाने का मन है?" जिस पर मैं बेझिझक अपनी पसंद का कुछ भी माँग लेता था।

पहले तो मोमोको कहती रही कि यह उसकी तरफ से बिल है, इसलिए मैंने पूछा नहीं, लेकिन थोड़ी देर बाद, मैंने खर्च को बांटने और किराने के सामान का आधा भुगतान करने पर जोर दिया।
“ठीक है,” उसने खुशी-खुशी कहा।
“मोमोको, तुम जो भी बनाती हो, सब स्वादिष्ट होता है,” मैंने कहा, और मेरा मतलब यही था। हमेशा की तरह, मैं उस छोटी सी डाइनिंग टेबल पर परोसे गए व्यंजनों को बड़े चाव से खा रहा था।
“वाह, तुम तो हमेशा बड़े चाव से खाती हो। तुम तो इसे स्वादिष्ट दिखाती हो,” मोमोको ने कहा और मुझसे दुगना खाना चट कर गई। मुझे कभी समझ नहीं आया कि वो अपने छोटे से शरीर में इतना सारा खाना कैसे समा लेती है।
मैंने अचार वाली मूली चबाते हुए कहा, "लेकिन यह सचमुच बहुत स्वादिष्ट है।" क्या आप खाना नहीं बनाते?
मैं थोड़ा-बहुत खाना बनाती हूँ, लेकिन सिर्फ पास्ता जैसी चीजें। इस तरह का खाना मैंने कभी नहीं बनाया।
"तो फिर जब तुम्हारा बॉयफ्रेंड होगा तो तुम क्या करोगी?"
"क्या आपको लगता है कि इससे कोई समस्या होगी?"
यह सच है कि मुझे अपने बॉयफ्रेंड को अपने बनाए खाने से खुश करने का ज़्यादा अनुभव नहीं था। किसी के लिए खाना बनाने का ख्याल ही मुझे इतना शर्मिंदा कर देता था कि मैंने अब तक इससे बचने की कोशिश की थी। खैर, वैसे भी मुझे रिश्तों का कोई खास अनुभव नहीं था।
“पुरुष सीधे-सादे होते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कौन हैं। आप उन्हें हमेशा खाने से लुभा सकते हैं।” वह हंसते हुए बोली, “मैं तुम्हें सिखा दूंगी। बस याद रखना।” मुझे यकीन नहीं था कि मुझे पुरुषों की भावनाओं का कोई अंदाजा था। असल में, ऐसा लग रहा था कि मोमोको जिसे लुभा रही थी, वह मैं ही थी।
बेशक, मैं अपने चाचा की बात पूरी तरह भूली नहीं थी। मैंने उससे बात करवाने की कोशिश की। लेकिन मोमोको हमेशा मेरे सवालों से बचती रहती थी। जब मैं उससे गंभीरता से कुछ पूछती, तो वह बस कहती, "ओह, मुझे नहीं पता।" चाहे मैं उसे किसी भी तरह से पकड़ने की कोशिश करती, वह मछली की तरह फिसलकर दूर भाग जाती। वह पहले से ही ऐसी थी जो बिना किसी वजह के एक विषय से दूसरे विषय पर कूदती रहती थी, इसलिए वह हमेशा विषय से भटक जाती थी। और खाना परोसते ही मैं

खो जाती और बाकी कुछ पूछना ही भूल जाती। लगभग हर बार ऐसा ही होता था, इसलिए मुझे कोई खास प्रगति नहीं मिली।
फिर भी, मैं उसके बारे में कुछ बातें जान पाई। (जब मोमोको नशे में होती थी, तो वह खुलकर अपनी झिझक छोड़ देती थी और मुझे ज़्यादा बातें बताती थी, इसलिए मैं अक्सर उसे और पीने के लिए उकसाती थी।) उसके माता-पिता का बचपन में ही देहांत हो गया था और उसका पालन-पोषण निगाता में उसकी चाची और चाचा ने किया। मिडिल स्कूल के बाद, उसने एक छोटी फैक्ट्री में काम किया, फिर इक्कीस साल की उम्र में अकेले टोक्यो चली गई, जहाँ, अन्य बातों के अलावा, उसे एक उभरते हुए फोटोग्राफर से प्यार हो गया ("क्या यह सच है?" मैं पूछे बिना नहीं रह सकी)।
मोमोको कुछ समय के लिए पेरिस में रही क्योंकि उसका प्रेमी काम के सिलसिले में वहाँ गया था, और वह भी उसके पीछे-पीछे चली गई। उसने अपने प्रेमी से बात किए बिना ही जाने का फैसला किया। यह एक साहसिक कदम था, लेकिन मोमोको के स्वभाव के अनुरूप ही था।
“मैं बहुत छोटी थी, आप जानते हैं। मैं बस एक नासमझ लड़की थी, और मेरे दिमाग में बस वही रहता था। बाद में मुझे पता चला कि जापान में उसकी पत्नी और बच्चे हैं। इसीलिए हमारा रिश्ता खत्म हुआ। यह सोचकर ही मेरा दिल भर आया कि जिस परिवार का मैं हमेशा से सपना देखती थी, उसे पाने के लिए मुझे किसी और का परिवार तोड़ना पड़ेगा... यह सब मेरे लिए असहनीय था।” मोमोको कहानी सुनाते हुए दूर कहीं देखती रही।
उसे अपने रिश्ते में कोई भविष्य नज़र नहीं आ रहा था, और अंत में सब कुछ टूट गया। उसका दिल टूट गया था। तभी उसकी मुलाकात मेरे चाचा सटोरू से हुई। पहले तो उसे लगा कि उन्हें किसी की देखभाल की ज़रूरत है। उसने कुछ कामों में उनकी मदद की, और देखते ही देखते दोनों को प्यार हो गया।
मैंने कहा, "मुझे इनमें से किसी भी बात के बारे में पता नहीं था," मैं उनके द्वारा साझा किए गए इतिहास की मात्रा से प्रभावित था।
“मेरे अतीत की वजह से सटोरू को जलन होती है। इसलिए वह इसके बारे में ज्यादा बात करना पसंद नहीं करता,” मोमोको ने कंधे उचकाते हुए कहा।
इसी बीच, मोमोको को मेरे बार-बार आने का असली कारण पता चल गया। एक रात ऐसा हुआ जब हमारे लिए साथ खाना खाना बिल्कुल रोज़ाना की बात हो गई थी। साके के

घूंट लेते हुए, मोमोको ने मन ही मन मुस्कुराते हुए अचानक कहा, "सटोरू ने तुम्हें ऐसा करने के लिए कहा था, है ना, ताकाको?"
“हं? तुम्हारा क्या मतलब है?” मैंने घबराते हुए कहा, और नाटक जारी रखने की कोशिश की। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। मोमोको बेहद खुश दिख रही थी, उसने आगे बढ़कर मेरे गाल पर चुटकी ली।
“मैं समझती हूँ कि वह क्या सोच रहा है। लेकिन ताकाको, क्या तुम्हें अंदर से लगता है कि मैं तुम्हें असहज कर रही हूँ?”
जब उसने मेरी गाल को अपनी मर्ज़ी से ज़ोर से चुटकी काटी, तो मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। पता नहीं कैसे, उसे सब कुछ समझ आ गया था। यह सच था कि मेरे अंदर कहीं न कहीं उसके साथ रहना मुझे उतना अच्छा नहीं लगता था। मैं उसे नापसंद तो बिल्कुल नहीं करता था, लेकिन अगर कोई मुझसे पूछता, तो मेरे लिए यह कहना मुश्किल होता कि मैं उससे प्यार करता हूँ। मुझे ऐसा ही महसूस होता था। वहीं दूसरी तरफ, अगर कोई उससे उसके खाने के बारे में पूछता, तो मैं तुरंत जवाब देता कि मुझे उसका खाना बहुत पसंद है।
सच कहूँ तो, मुझे उसे समझना बहुत मुश्किल लगा। मेरे चाचा भी कुछ इसी तरह के थे। उनके बारे में कुछ ऐसा था जो मैं समझ नहीं पाता था, लेकिन वह अलग थी। ऐसा लगता था कि मैं उससे कितनी भी बार बात कर लूँ, हमारे बीच की दूरी कभी कम नहीं हो सकती। कभी-कभी ऐसा लगता था जैसे हम नदी के दो अलग-अलग किनारों पर खड़े होकर एक-दूसरे से बहुत दूर से बात कर रहे हों।
"कोई बात नहीं, क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता हूँ, ताकाको। और मुझे तुम्हारी ईमानदारी बहुत प्यारी लगती है। तुम झूठ नहीं बोल सकती। काश, मेरी भी आत्मा इतनी सुंदर होती।"
"मेरी आत्मा बिल्कुल भी सुंदर नहीं है।"
मुझे लगा कि वह मेरा मजाक उड़ा रही होगी, और मुझे थोड़ा बुरा लगा।
लेकिन मोमोको ने कहा कि उसने सचमुच ऐसा ही कहा था। "मैं तो बस हर समय झूठ बोलती हूँ," उसने उदास स्वर में कहा। एक पल के लिए उसने अपना सिर झुका लिया।
उस पल उसके चेहरे के हावभाव ने कुछ ऐसा प्रकट किया जो मुझसे छिपा नहीं रहा।
मुझे ऐसा लगा जैसे पहली बार मैं मोमोको की सच्ची भावनाओं के करीब पहुंचा था।
लेकिन यह सिर्फ एक पल के लिए ही रहा।

इसके तुरंत बाद, उसका चेहरा खिल उठा और वह फिर से सामान्य हो गई और विषय बदल दिया। तभी उसने अपना सुझाव दिया: "अरे, चलो साथ में घूमने चलें? अभी पतझड़ के पत्ते रंग बदलने का समय नहीं आया है, लेकिन इसका मतलब यह है कि ज़्यादा लोग नहीं होंगे और हम आराम से समय बिता सकते हैं। क्या आप काम में व्यस्त हैं?" वह इसी तरह बोलती रही और मुझ पर दबाव डालती रही।
"नहीं, यह अपेक्षाकृत लचीली कंपनी है।"
तो, सब ठीक है?
“उम, ठीक है…”
पहले तो मैंने मना करने की कोशिश की, लेकिन किसी कारणवश उसके चेहरे के भाव ने मुझे चिंतित कर दिया। इसलिए अंत में मैं मान गया। "चलो करते हैं।"
मैं ठीक से समझा नहीं सकता कि क्यों, लेकिन मुझे उस समय कुछ महसूस हुआ। यह कोई पूर्वाभास तो नहीं था—ऐसा कुछ भव्य नहीं था। यह कुछ ऐसा था जिसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता था, लेकिन जब मैंने उसका चेहरा देखा तो मुझे निश्चित रूप से यह महसूस हुआ, जैसे यह एक संकेत था जिसे मुझे अनदेखा नहीं करना चाहिए।

यात्रा के बारे में हमारी बातचीत से पहले मैंने वाडा को सेवर में दो बार और देखा। दोनों बार, मैं मोमोको से मिलने के बाद घर लौटते समय कॉफी शॉप पर रुका था, और वह वहीं था। उसने कहा था कि वह अक्सर आता है, और यह सच लग रहा था। जब मैंने उसे देखा, तो वह खिड़की के पास उसी सीट पर बैठा था, और पहले की तरह ही खिड़की से बाहर देख रहा था।
मुझे खुद भी पूरी तरह यकीन नहीं था कि मैं वाडा को देखने के लिए ही वहां गई थी या नहीं। मुझे नहीं लगता कि मैं कॉफी शॉप में किसी खास उम्मीद से गई थी। लेकिन जब मैं अंदर गई और पीछे से वाडा पर मेरी नजर पड़ी, तो मैंने खुद को कहते सुना, "ओह!"
मैंने उसे नमस्कार कहा, और उसके कंधे ऐसे कांप उठे जैसे मैंने उसे किसी सपने से जगा दिया हो। उसने लगभग पाँच सेकंड तक मुझे घूरा, मानो वह मेरे बारे में कुछ पुष्टि कर रहा हो, फिर मुस्कुराया और नमस्कार कहा।
ऐसा लग रहा था जैसे वह मुझे अपने साथ बैठने के लिए कह रहा हो, इसलिए मैं उसके सामने बैठ गया और हमने बातें कीं। बस हल्की-फुल्की बातें हुईं, कुछ खास नहीं, लेकिन बस साथ में बातें करने से मुझे अजीब सा सुकून मिला। एक बार

तो हम कॉफी शॉप बंद होने से पहले ही साथ निकल गए और शाही महल तक थोड़ी देर टहलने भी गए।
"जल्द ही फिर मिलेंगे।"
"अलविदा।"
हमने इसी तरह एक-दूसरे को अलविदा कहा, भले ही हमारे पास एक-दूसरे की संपर्क जानकारी नहीं थी, और इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि हम कभी दोबारा मिलेंगे।
उस रात के बाद, मैं तीसरी बार कॉफ़ी शॉप गई, लेकिन वाडा वहाँ नहीं था। मुझे पता था कि उसके वहाँ होने की उम्मीद करने का कोई कारण नहीं था, फिर भी मुझे किसी तरह निराशा हुई। मुझे लगा जैसे मैं बेवजह ही आई थी। लेकिन मैंने खुद को समझाया कि अगर वह हर समय वहाँ होता तो और भी अजीब होता।
उस रात, मैं काउंटर पर बैठ गया और मालिक से वाडा के बारे में धीरे से पूछने की कोशिश की।
उसने मुझे उससे बात करते हुए देखा था, इसलिए स्वाभाविक रूप से उसे वह याद था।
“वह थोड़ा शांत स्वभाव का ग्राहक है। आजकल, जैसे ही अंधेरा होता है, वह आ जाता है। लेकिन मुझे याद नहीं कि वह पहले भी आता था या नहीं।”
“वह शांत नहीं है। वह संकोची है।” मैंने मालिक को धीरे से सुधारते हुए कहा।
"ओह, मुझे माफ कर दीजिए। वह तो ऐसे ही लगते हैं जैसे कुछ देर रुकते हों।" फिर कमरे के दूसरी तरफ से ताकानो ने एक बेतुका सुझाव देते हुए कहा, "क्या वह ताकाको से मिलने नहीं आ रहा है? यहाँ से देखने पर तो वे दोनों साथ में अच्छे लगते हैं।"
मैं एक पल के लिए मुंह खुला रखकर उसे घूरता रहा, और फिर मैंने गुस्से से सब कुछ नकार दिया। "यह बेतुका है!"
"अरे, गुस्सा मत करो।"
“बेहतर होगा कि तुम बीच में दखल देना बंद करो!” मालिक ने उसे भगाते हुए कहा।
ताकानो कमरे से भागते हुए चिल्लाया, "माफ़ कीजिए!"

जैसे ही मैंने कॉफी का कप होठों तक उठाया, मैंने ताकानो की कही बात पर एक बार फिर सोचा। ऐसा हो ही नहीं सकता, है ना? और मैंने खुद से फिर कहा कि ताकानो ज़रूर गलत होगा।
लेकिन... लेकिन अगर यह सच हो तो?
वाडा एक बेहतरीन इंसान थे। वे मिलनसार और विनम्र थे, और उनमें हास्यबोध भी भरपूर था। ज़ाहिर है, उन्हें किताबों का भी बहुत ज्ञान था। वे हमेशा अपनी बड़ाई नहीं करते थे और न ही अपने ही चुटकुलों पर भद्दे तरीके से हंसते थे। उनके व्यक्तित्व की वजह से मुझे यकीन है कि कई महिलाएं उनकी ओर आकर्षित होती थीं।
अच्छा, मेरे बारे में क्या?
जैसे ही मैं उस प्रश्न पर विचार कर रहा था, मुझे एहसास हुआ कि मालिक फिर से मुझे घूर रहा था।
“तुम्हें लोगों को इतनी गौर से देखने की अपनी आदत पर काम करना चाहिए।
खासकर लड़कियों के मामले में। वे तुमसे नाराज़ हो जाएंगी,” मैंने ठंडे लहजे में कहा।
दुकान का मालिक अपनी तीखी हंसी हंसते हुए ताकानो के पीछे भागा और कॉफी शॉप के पिछले हिस्से में गायब हो गया।
सवाल पर गहराई से सोचने की मेरी इच्छा खत्म हो गई थी, इसलिए मैंने वाडा द्वारा बताई गई किताब 'अप द हिल' निकाली और उसे पढ़ने की कोशिश की। मोमोको से मिलने के दौरान, दुकान बंद होने के समय के आसपास, मुझे संयोग से किताबों की एक अलमारी पर यह किताब मिल गई थी।
जब मेरे चाचा ने मेरे हाथ में किताब देखी, तो उन्होंने खुद ही मुझसे कहा, "इसमें कुछ खास नहीं है।"
मैंने कहा, "मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" मैंने अपने चाचा को सौ येन दिए और किताब खरीद ली।
यह एक छोटी सी उपन्यास है, लगभग दो सौ पृष्ठों की। उस रात, पहले सेवूर में और फिर घर आकर सोने से पहले, मैंने पूरी उपन्यास पढ़ डाली।
यह एक दुखद कहानी थी, जैसा कि वाडा ने कहा था।
कहानी टोक्यो में घटित होती है, उस दौर में जब देश युद्ध के बाद पुनर्निर्माण कर रहा था। मुख्य पात्र मात्सुगोरो इडा नाम का एक असफल लेखक है। उसकी मुलाकात पहाड़ी पर स्थित एक आधुनिक कैफे में काम करने वाली एक

खूबसूरत महिला से होती है। उसे पहली ही नज़र में उससे प्यार हो जाता है। शुरुआत में वह उसे गंभीरता से नहीं लेती, लेकिन मात्सुगोरो हर दिन कैफे जाता रहता है, और जब वह उससे अपने प्यार का इज़हार करता है, तो वह और हंसमुख उकियो एक जोड़े बन जाते हैं। लेकिन जब ऐसा लगता है कि खुशियों के दिन हमेशा के लिए रहेंगे, तभी उकियो को अपने पिता का कर्ज चुकाने के लिए एक अमीर आदमी के बेटे से शादी करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। अपने भविष्य की कोई उम्मीद न होने के कारण, मात्सुगोरो के पास शादी रोकने का कोई रास्ता नहीं बचता।
मात्सुगोरो अपने अकेलेपन और निराशा में भी उपन्यास लिखना जारी रखता है। उसकी एकमात्र प्रेरणा यही है कि अगर वह प्रसिद्ध हो जाए और दुनिया में नाम कमा ले, तो शायद वह उकियो को वापस ला सके। अंततः, जब वह तीस वर्ष की आयु के अंतिम पड़ाव पर होता है, तो मात्सुगोरो का सपना सच हो जाता है और वह एक उपन्यासकार के रूप में सफल हो जाता है। लेकिन तभी उसे एक भयानक सच्चाई का पता चलता है: उकियो एक महामारी का शिकार हो गया है और अब इस दुनिया में नहीं है।
उस समय से, मात्सुगोरो अपना दिन शराब, महिलाओं और फिर नशे में डूबे रहने में बिताने लगा। उसकी अय्याशी भरी जिंदगी ने उसके शरीर को बुरी तरह से क्षतिग्रस्त कर दिया। लेकिन उसने उकियो को कभी नहीं भुलाया, एक पल के लिए भी नहीं, और वह हर रोज उसी कैफे में जाता रहा जहाँ वे पहली बार मिले थे। फिर, एक दिन, कैफे से घर लौटते समय, वह खून की उल्टी करते हुए गिर पड़ा। जैसे ही वह बेहोश हुआ, उसके दिल में सिर्फ उकियो की यादें ही रह गईं। मात्सुगोरो का पीड़ादायक, एकतरफा जुनून मेरे दिल को छू गया। किताब खत्म करने के बाद मेरा दिल सन्न रह गया। मेरी आँखों से आंसू बहने लगे और किताब पर गिरते हुए पन्नों पर छोटे-छोटे धब्बे छोड़ गए।
अपने फ़्यूटन के कंबल के नीचे, जब मुझे नींद आने लगी, तो मैंने खुद को यह सोचते हुए पाया कि वाडा का एक काफी रोमांटिक पक्ष भी था।
उस रात मेरे सपने में, मैं उपन्यास में कैफे चलाने वाली महिला थी, और मैं उकियो को कंधों से हिला रही थी, उसे मात्सुगोरो के साथ बाहर जाने के लिए मनाने की पूरी कोशिश कर रही थी।

6

आपको उसके साथ यात्रा पर क्यों जाना है?
हमारे जाने से एक रात पहले मुझे मेरे चाचा का फोन आया। मैं उस समय दफ्तर में काम कर रहा था, वहाँ बचा हुआ आखिरी व्यक्ति। उन्होंने बताया कि उन्हें मोमोको से यात्रा के बारे में खबर मिली है। उन्होंने थोड़ी घबराहट भरी आवाज़ में कहा, "मैंने तुमसे मोमोको के बारे में पता लगाने को कहा था, लेकिन तुम्हें इतनी दूर जाने की ज़रूरत नहीं थी।"
“बातचीत के दौरान यह अचानक ही हो गया,” मैंने अस्पष्ट ढंग से जवाब दिया। उस समय मैं यह ठीक से समझा नहीं पा रहा था कि यह सब कैसे हुआ।
"उसे जानते हुए, मुझे यकीन है कि उसने तुम्हें जबरदस्ती अपने साथ चलने के लिए मजबूर किया होगा," मेरे चाचा ने चिंतित स्वर में कहा।
नहीं, ऐसा नहीं था।
“मुझे नहीं पता,” मेरे चाचा ने चिंता जताते हुए कहा।
मैंने खुशी से कहा, "मैं तुम्हारे लिए एक उपहार लाऊंगा।"
“अगर तुम्हें कोई आपत्ति नहीं है, ताकाको, तो मेरे लिए इतना ही काफी है,” उसने अनिच्छा से मानते हुए कहा। “वैसे, साबू बार-बार दुकान में घुसकर मोमोको से मिलने की ज़िद करता है। आखिर चल क्या रहा है?”
मुझे सेवर में हुए उस छोटे से ड्रामे की याद आ गई और मैं जोर से हंस पड़ा। ऐसा लगता है कि वह उससे कुछ बात करना चाहता है।
“क्या?” फोन के दूसरी तरफ से मेरे चाचा की हैरानी भरी आवाज सुनाई दी। “मोमोको उसे आसानी से अपने वश में कर लेगी, फिर उसकी चापलूसी करेगी और वह खुश होकर घर लौट जाएगा। वह उस जैसे लड़कों से निपटने में अजीब तरह से माहिर है।”
मुझे वह पूरा दृश्य अपने मन में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।
"मेरे विचार से तुम सही हो।"
“इसमें कोई शक नहीं। लेकिन मोमोको ज्यादातर दोपहर के भोजन के समय बाहर जाती है, इसलिए जब साबू आता है तो वह यहां नहीं होती, जिससे वह गुस्सा हो जाता है।”
"क्या वह सही है?"

और अगर मैं इशारों में भी उससे पूछने की कोशिश करूं कि वह कहां जा रही है, तो वह मुझे नहीं बताएगी।
अब आश्चर्यचकित होने की बारी मेरी थी। मैंने कहा, "क्योंकि वह बच्ची नहीं है। अगर वह बाद में वापस आ जाती है, तो क्या इससे कोई फर्क पड़ता है?" “मुझे लगता है यह सच है... खैर, अगर आप नहीं जाना चाहते तो आपको इस यात्रा पर जाने की ज़रूरत नहीं है। मुझे नहीं पता उसने आपको क्यों बुलाया...” वह बड़बड़ाता रहा और फिर आखिरकार उसने फोन काट दिया।

उस रात, काम खत्म करने के बाद, मैंने फिर से सेवूर जाने का फैसला किया। जब मैं ऑफिस से निकला, तब तक नौ बज चुके थे, और मुझे घर जाने का मन नहीं था, इसलिए मैं वहीं चला गया। जगह अभी भी भीड़भाड़ वाली थी। वाडा की खिड़की के पास वाली पसंदीदा जगह पर दो लड़कियां बैठी थीं।
मैंने एक मेज पर जगह ढूंढी और अपनी यात्रा के लिए खरीदी गई किताब - सानेत्सु मुशानोकोजी की 'फ्रेंडशिप' - को धीरे-धीरे पढ़ना शुरू किया, लेकिन मैं पूरी तरह से ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रही थी। हालांकि मेरा ऐसा करने का इरादा नहीं था, फिर भी जब भी कोई कॉफी शॉप में आता, मैं खुद को दरवाजे की ओर देखते हुए पाती, यह सोचकर कि कहीं वाडा तो नहीं है।
मैं अभी मुश्किल से बीस पन्ने ही पढ़ पाया था कि वाडा अचानक आ गया। मैंने घबराते हुए थोड़ा झुककर उसका अभिवादन किया और वह धीरे-धीरे मेरे पास आकर बैठ गया। इतनी दूरी से उसे देखकर मुझे एक अजीब सा एहसास हुआ। वह सामान्य से कम जीवंत लग रहा था।
मैंने उनके बैठने तक इंतजार किया, फिर कोई सवाल पूछा। "क्या आप काम में व्यस्त थे?"
“नहीं, इसके विपरीत, काम धीमा चल रहा है।” वाडा ने मुस्कुराते हुए यह कहा, लेकिन उनके चेहरे से उनकी थकान साफ झलक रही थी।
हम दोनों एक पल के लिए चुप हो गए। आम तौर पर, मुझे हमारे बीच की चुप्पी से कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन किसी कारणवश, मुझे वातावरण में एक अजीब सी उदासी महसूस हुई। मैंने ताकानो की कही बात के बारे में सोचा, और फिर बातचीत करना और भी मुश्किल हो गया।
“यह मुझे याद दिलाता है…” मैंने मुस्कुराते हुए कहा, मुझे उसे बताने के लिए कुछ अच्छा याद आ रहा था। “मैंने 'अप द हिल' पढ़ी है।”

लेकिन वाडा ने इसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई। "ओह, क्या सच में?" उसने धीरे से कहा। मैंने स्वार्थवश सोचा था कि वह यह सुनकर खुश होगा। मुझे बहुत निराशा हुई कि मेरी उम्मीदें इतनी गलत निकलीं।
"कहानी थोड़ी घिसी-पिटी सी है, आपको नहीं लगता?" वाडा ने व्यंग्य भरे लहजे में कहा।
“बिल्कुल नहीं। मुझे तो किताब बहुत पसंद आई।”
लेकिन मरने तक अपने प्रियजन का इंतजार करने का विचार... असल दुनिया में ऐसा कभी नहीं होता।
"क्या वह सही है?"
"कम से कम मुझे तो यही लगता है। इसके बजाय, जिसे आप प्यार करते हैं, वही सामने आकर आपको बता देता है कि आप अजीब व्यवहार कर रहे हैं।"
“हं?” मुझे बिलकुल समझ नहीं आया कि वह क्या कह रहा था। लेकिन वाडा रुक-रुक कर बोलता रहा।
“जब हम दोनों पहली बार मिले थे, तो मैं उसे यहाँ लाया था। उसे यह जगह पसंद आई, इसलिए उस दिन के बाद हम दोनों अक्सर यहाँ आने लगे। इसीलिए मैंने उससे कहा था कि मैं अब भी उसका यहाँ इंतज़ार कर रहा हूँ। मैंने कहा, ‘अगर तुम्हारा मन बदल जाए, तो मुझे यहाँ ढूँढ़ लेना।’ खैर, परसों उसने मुझे एक ईमेल भेजा जिसमें उसने साफ़-साफ़ कह दिया: ‘तुम अजीब हरकतें कर रहे हो। ऐसा करना बंद करो।’”
इस समय तक, मैं इतना सुन चुका था कि मुझे समझ आ गया था कि वह पहले क्या कहना चाह रहा था। तो यही सब चल रहा था। काश उसने मुझे पहले ही बता दिया होता। नहीं, लेकिन वह मुझे क्यों बताता?
वह इतने समय से इंतज़ार कर रहा था—उस खूबसूरत महिला का इंतज़ार जिसे वह किताबों की दुकान पर लाया करता था। वह बिल्कुल मात्सुगोरो की तरह उकियो का इंतज़ार कर रहा था। या शायद इसीलिए उसने अपनी सारी भावनाओं को उपन्यास में उतार दिया और उसे बार-बार पढ़ता रहा?
अरे, छोड़ो भी। मैं बार-बार यही दोहरा रही थी। ऐसा नहीं था कि मैं बहुत दुखी थी। कहीं न कहीं मुझे हमेशा से यह एहसास था कि वह मेरे बारे में ऐसा नहीं सोचता। बस मुझे खुद पर बहुत गुस्सा आ रहा था कि मैंने हर बात पर इतना परेशान क्यों हो गई।

हमारी वो अजीबोगरीब बातें, वो घंटों तक चलती रहती थीं? या फिर वो एहसास, जैसे हम पुराने दोस्त हों? इनमें से कुछ भी सच नहीं था। वाडा ने मेरी बातें ध्यान से सुनीं, और मैंने इसका फायदा उठाकर अपने बारे में बातें कीं। यही बात मुझे सबसे ज़्यादा अच्छी लगती थी। जब मुझे आखिरकार ये एहसास हुआ, तो मुझे बहुत बुरा लगा।
"मुझे खेद है। यह कोई बहुत दिलचस्प कहानी नहीं है," वाडा ने माफी मांगते हुए कहा, शायद इसलिए कि उसने देखा था कि मैं इस पूरे समय नीचे देख रहा था। मैंने सिर हिलाकर कहा, "नहीं, मुझे ही माफी मांगनी चाहिए।"
“क्या? तुम्हें माफी क्यों मांगनी चाहिए, ताकाको?” वाडा हैरान लग रही थी। "सिर्फ इसलिए कि।"
“हं?”
मैं और भी ज़्यादा माफ़ी माँगना चाहती थी, लेकिन मैं यह भी नहीं चाहती थी कि वह मुझे अजीब समझे, इसलिए मैंने खुद को रोक लिया। मुझे विषय बदलना होगा, मैंने सोचा, लेकिन साथ ही साथ और भी सवाल पूछने की तीव्र इच्छा भी उमड़ रही थी।
“तुम उससे प्यार करते थे, है ना?” मैंने अचानक कह दिया, और फिर तुरंत ही मुझे इसका पछतावा हुआ।
वाडा ने हल्की सी मुस्कान दी।
“मुझे यह स्वीकार करने में बुरा लगता है कि यह सब कितना बचकाना था। लेकिन, आप जानते हैं, मैं इसे समझ भी सकता हूँ। शुरू में, हम दोनों में कुछ भी समान नहीं लगता था। हमारे बीच रिश्ते के सुलझने की कोई गुंजाइश ही नहीं थी। लेकिन लगता है मैं इस मामले में अड़ा हुआ था। मुझे उससे प्यार हो गया था। और किसी कारण से मैं यह कभी समझ ही नहीं पाया कि हम दोनों बहुत अलग हैं और हमारे लिए रिश्ता खत्म कर देना ही बेहतर होगा। मैंने हमेशा खुद को एक शांत स्वभाव का व्यक्ति समझा है, लेकिन मुझे पता चला कि मेरे अंदर एक भावुक पक्ष भी है। यह मेरे लिए थोड़ा आश्चर्यजनक था।”
वह इस स्तर पर विश्लेषण को छोड़ सकता था। मुझे लगता है कि वह थोड़ा अजीब था।
“मुझे लगता है कि तुम एक अच्छे इंसान हो,” मैंने उसे खुश करने की कोशिश करते हुए कहा। काश मैं कुछ और बेहतर कह पाती, लेकिन मुझे कुछ और सूझा ही

नहीं। हालांकि, मैंने ये बात दिल से कही थी। वाडा वाकई एक बहुत अच्छा इंसान था।
“धन्यवाद। अगर आप ऐसा कहते हैं, तो मैं एक अच्छा इंसान हूँ। यह बात तो सच है,” उन्होंने धीरे से हंसते हुए कहा। “लेकिन मुझे यह भी कहा गया, ‘आप अच्छे इंसान हैं, लेकिन दिलचस्प नहीं हैं।’”
“क्या आपको नहीं लगता कि वह थोड़ी निर्दयी थी?” मैंने कहा। मुझे उस औरत पर थोड़ा गुस्सा आ रहा था। मुझे लग रहा था कि वह उसमें छिपी अच्छाई को पहचान नहीं पा रही थी।
“नहीं,” वाडा ने कहा। “क्योंकि मैं उससे सहमत हूँ। इतना ज़्यादा कि मैं इस बात से सचमुच प्रभावित हुई कि उसने कितनी सटीक बात कही है। लेकिन यह एक उबाऊ विषय है, चलो इसे यहीं छोड़ देते हैं।” वाडा ने विषय बदलने और मुझसे हालचाल पूछकर मुझे अपने मन की बात कहने के लिए प्रेरित करने की कोशिश की। लेकिन मैं अब भी दुखी थी, और मैं बातचीत में कुछ भी योगदान नहीं दे सकी। “माफ़ कीजिए, मुझे कल सुबह जल्दी उठना है…” बातचीत में कोई उत्साह नहीं दिखा। मैंने थोड़ी देर और बातचीत जारी रखी और फिर मैंने वहाँ से जाने की अनुमति ली और उठ गया।
"ओह, सच में?" वाडा ने मेरी तरफ कुछ खालीपन भरी नजरों से देखा।
जब मैंने जाने की कोशिश की, तो मालिक ने दरवाजे के पास से आवाज़ लगाई।
"क्या तुम घर जा रही हो, ताकाको?"
बाहर निकलने से पहले मैंने सिर्फ "हां" कहा।
मेरा मूड बहुत खराब था। मालिक को भी इसका एहसास हो गया होगा। कुछ समय तक मेरा वहां वापस आने का मन नहीं कर रहा था।
चलते-चलते मेरी उदासी बढ़ती गई। मैंने करीब तीस बार आहें भरी होंगी। जब मुझे एहसास हुआ कि मैं अपनी किताब मेज पर ही भूल गई हूँ, तब तक मैं घर जाने वाली ट्रेन में बैठ चुकी थी।

7

मैं दस बजे शिंजुकु स्टेशन पर मोमोको से मिला।
आसमान में बादल छाए हुए थे, लेकिन टीवी पर दिखाए जा रहे मौसम पूर्वानुमान के अनुसार दोपहर तक आसमान साफ हो जाएगा।
मैं अपनी छुट्टियों के दिनों का इस्तेमाल इस यात्रा पर जाने के लिए कर रहा था, इसलिए घर से निकलने से पहले मैंने खुद को हिम्मत देने की कोशिश की: पिछली रात को अपने ऊपर हावी मत होने दो।
मोमोको भीड़ से भरे शिंजुकु स्टेशन के दक्षिणी प्रवेश द्वार पर पहुंची, उसके पास बस एक छोटा सा बैग था जिसे देखकर कोई भी अंदाजा नहीं लगा सकता था कि वह किसी यात्रा पर जा रही है। उसके बाल जूड़े में बंधे थे और उसने हरे रंग की हुडी और काले रंग की ट्रैकसूट पैंट पहनी हुई थी। वह इतनी छोटी थी कि दूर से देखने पर वह किसी स्कूली छात्रा की तरह लग रही थी जो स्कूल घूमने गई हो।
जब मोमोको ने मेरा पहनावा देखा, तो उसने अपनी भौंहें सिकोड़ीं। "अरे बाप रे!" उसने कहा, "तुम तो पहाड़ों पर जाने वाले इंसान की तरह कपड़े नहीं पहने हो, है ना?" यह मेरी लंबे समय बाद पहली यात्रा थी, और मैंने एक ऐसी ड्रेस पहनी थी जो मैंने अभी-अभी सेल में खरीदी थी।
मैंने अपनी बात समझाने की कोशिश करते हुए कहा, "मैंने स्नीकर्स तो पहने हैं। और मेरे बैग में हाइकिंग के लिए अच्छे कपड़े भी हैं।"
“तुम्हें इतना सारा सामान पैक करने की जरूरत नहीं थी,” मोमोको ने कहा। इससे मेरी बोलती बंद हो गई। मुझे इस बात पर शर्म आ रही थी कि मैं इस यात्रा का कितनी बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी। शायद अपनी बात को संतुलित करने के लिए मोमोको ने आगे कहा, "मुझे लगता है कि जवानी ऐसी ही होती है। हमेशा बहुत सारा बोझ ढोते रहते हैं।"
“और जब आप बूढ़े हो जाते हैं, तो आपके पास कम होता है?” मैंने पलटकर पूछा। "ताकाको, तुम्हारे लिए तो ठीक है। मुझे बस ऐसी कोई चीज पसंद नहीं है जो मुझ पर बोझ डाले," उसने रूखेपन से कहा।
मैंने आश्वस्त होकर कहा, "यह बात समझ में आती है।"

“खैर, आने के लिए धन्यवाद। उम्मीद है आपकी तीन दिन की यात्रा अच्छी रहे,” मोमोको ने कहा। उसने अपनी मुद्रा सीधी की और नाटकीय ढंग से झुककर अभिवादन किया।
मैंने झुकते हुए कहा, "मुझे तो आपका धन्यवाद करना चाहिए।"
हम शिंजुकु से चूओ लाइन पर चले और ताचिकावा स्टेशन पर ओमे लाइन में बदल गए। टोक्यो आने के बाद से लगभग पाँच वर्षों में, यह पहली बार था जब मैं उस तरफ जा रहा था। ओमे लाइन की ट्रेनें काफी खाली थीं। हमारे सामने वाली सीटों पर एक हाई स्कूल का छात्र बैठा था, जो थोड़ा शरारती किस्म का लग रहा था और ऐसा लग रहा था जैसे देर तक सो गया हो। वह उदास चेहरे के साथ बैठा था और बेचैनी से अपना पैर थपथपा रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वह पूरी दुनिया से नाराज़ हो।
मोमोको अपनी सीट पर बैठ गई और खिड़की से बाहर देखते हुए गुनगुनाने लगी।
पिछली रात मैं भोर तक जागती रही, कुछ न कुछ सोचती रही, लेकिन कुछ भी दिलचस्प नहीं था। ट्रेन में बैठते ही मुझे पता ही नहीं चला और मैं सो गई।
जब मैं थोड़ी देर बाद जागा, तो वह शरारती हाई स्कूल का लड़का जा चुका था।
शायद वह गुस्से में स्कूल गया होगा।
मैंने खिड़की से बाहर देखा, और पाया कि कुछ देर बाद बादल छंट गए थे और दूर तक नीला आकाश फैला हुआ था। घर और इमारतें बहुत कम थीं, और खेतों और धान के मैदानों के पार दूर स्थित पहाड़ विशाल होते जा रहे थे।
मैंने अपनी आंखें मलते हुए कहा, "अद्भुत।"
"बस देखते रहिए कि आगे क्या होने वाला है," मोमोको ने मुस्कुराते हुए कहा। हम मिताके नाम के एक छोटे से स्टेशन पर ट्रेन से उतरे। पहाड़ अब हमारे ठीक सामने थे, उनके पीछे नीला आसमान था, और इन सबके बीचोंबीच एक विशाल पर्वत था जो बाकी सब पर भारी पड़ रहा था। यह एक राजसी, विशाल पर्वत था—ऐसा लग रहा था जैसे यह टस से मस नहीं होगा। पतझड़ के लिए अभी पत्तों का रंग बदलना शुरू नहीं हुआ था, इसलिए पर्वत अभी भी गहरे हरे रंग का था। कहीं ऊपर ही वह सराय थी जहाँ हम जा रहे थे।
“हम शहर के केंद्र से ज़्यादा दूर नहीं हैं, लेकिन ऐसा लग रहा है जैसे हम बहुत दूर आ गए हों,” मैंने सामने के नज़ारे को देखते हुए धीरे से कहा। मैंने गहरी साँस ली और ताज़ी, स्वच्छ हवा से अपने फेफड़ों को भर लिया। यह

देखकर बहुत अच्छा लगा कि शहर की सीमा के भीतर अभी भी कितनी प्रकृति बची हुई है।
मोमोको ने कहा, "शहर को इन सभी इमारतों से भर जाने में केवल कुछ दशक ही लगे।"
इससे मुझे डोप्पो कुनिकिडा की एक किताब में लिखी लघु कहानी "मुसाशिनो" याद आ गई। बीसवीं सदी की शुरुआत में, जब डोप्पो जीवित थे, मुसाशिनो के आसपास का इलाका इतना जंगली था कि आप उसमें खो सकते थे। आजकल यह टोक्यो का एक आम इलाका है। समय कितनी तेजी से बदलता है! यह सब देखकर सिर चकरा जाता है। स्टेशन के सामने छोटे से स्टॉप पर, हमने एक बस पकड़ी जो हमें हाईवे से होते हुए पहाड़ की आधी चढ़ाई पर स्थित फ्यूनिक्युलर के शुरुआती बिंदु तक ले गई। जब हम बस स्टॉप पर पहुँचे, तब तक दो टूर ग्रुप, जो शायद हमारे साथ ही ट्रेन से आए थे, अपनी सीटों पर बैठ चुके थे। दोनों ग्रुप में ज़्यादातर बुज़ुर्ग पुरुष और महिलाएं थीं। यह एक रहस्य ही था कि वे सब यहाँ एक साथ क्यों आए थे। हमने जल्दी से झुककर उन्हें प्रणाम किया और उनके बगल में बैठ गए। ग्रुप में सबसे बुज़ुर्ग दिखने वाली महिला मुस्कुराई और बोली, "माँ-बेटी की छोटी सी ट्रिप पर आ गई हैं?"
“हां,” मोमोको ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।
मैंने सोचा, हम मां-बेटी नहीं हैं, लेकिन हमारे रिश्ते को समझाना बहुत झंझट का काम था, इसलिए मैंने सिर हिलाया और अपने चेहरे के भाव से ही कह दिया, वह मेरी मां हैं, और मैं उनकी बेटी हूं।
जैसे ही हम बस में चढ़े, तीन स्कूली उम्र के लड़के हमसे बात करने लगे। वे पर्यटकों से काफी परिचित लग रहे थे क्योंकि उनमें जरा भी झिझक नहीं थी। मोमोको को बच्चे पसंद थे। उसने उन्हें देखकर मुस्कुराया और खुशी-खुशी उनसे बातें करने लगी। उसने पूछा, "तुम लोग किस कक्षा में पढ़ते हो?" “पहला!” उन्होंने उत्साह से भरे स्वर में एक साथ उत्तर दिया।
उन्होंने हमें बताया कि उनके परिवार पहाड़ पर सराय चलाते थे, इसलिए उन्हें स्कूल जाने के लिए हर दिन पहाड़ से नीचे आना पड़ता था।
मैंने कहा, "यह तो बहुत मुश्किल होगा," शायद पर्यटक उनसे यही कहते होंगे। “शायद,” एक ने जवाब दिया, उसकी आवाज़ में काफी परिपक्वता झलक रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे वह कह रहा हो, “अरे, अब तुम बता रहे हो।”

“चलो, चलो!” वे चिल्लाए। बच्चों को आगे चलने देते हुए, हम बस से उतरे और पहाड़ी रास्ते से फ्यूनिक्युलर स्टेशन की ओर चल पड़े। बच्चे तेज़ी से दौड़ रहे थे, और मैं पीछे-पीछे चलते हुए जल्दी ही थोड़ा हाँफने लगा। मोमोको ने पीछे मुड़कर मेरी तरफ देखा।
“ताकाको, तुम्हें पता है असली चढ़ाई तो फ्यूनिक्युलर से उतरने के बाद ही शुरू होती है। अगर तुम अभी से थक गई हो, तो मुझे नहीं पता कि हम तुम्हारे साथ क्या करेंगे,” उसने चिढ़ाते हुए कहा।
बच्चे खिलखिलाकर हंस पड़े। एक बच्चे ने कहा, "मैडम, आप कभी कामयाब नहीं होंगी। शहर में बड़े होने पर यही होता है," और वे फिर हंस पड़े।
“दरअसल, मैं क्यूशू के सुदूर ग्रामीण इलाके में पली-बढ़ी हूँ,” मैंने पीछे से अपनी बात मनवाने की कोशिश करते हुए कहा, लेकिन वे इतनी तेज़ी से चल रहे थे और मैं इतना पीछे छूट गई थी कि किसी ने मेरी बात सुनी ही नहीं। मोमोको इतनी फिट कैसे थी? हमारे बीच उम्र का अंतर इतना था कि लोग हमें माँ-बेटी समझ बैठते थे। मुझे अब पछतावा होने लगा था कि मैंने कम सामान क्यों नहीं पैक किया।
जब मैं आखिरकार फ्यूनिक्युलर के बेस पर पहुंचा, तो मोमोको ने मुझे चाय की एक बोतल थमा दी जो उसने एक गिफ्ट शॉप से खरीदी थी। "ये लो," उसने कहा। मैंने कृतज्ञतापूर्वक इसे स्वीकार किया और सारा का सारा पी लिया।

फ्यूनिकुलर हमें पहाड़ पर ऐसे ले गया जैसे पटरियाँ किसी नदी के किनारे चल रही हों। इसने हमें शिखर से ठीक पहले उतार दिया। फिर हमने बच्चों को अलविदा कहा और दोबारा चढ़ाई शुरू कर दी। हम समुद्र तल से लगभग एक हज़ार मीटर ऊपर पहुँच चुके थे। यह विश्वास करना मुश्किल था कि एक घंटे पहले हम पहाड़ की तलहटी में थे।
चोटी की ओर जाने वाली संकरी सड़क पर जगह-जगह विज्ञापन और हर सराय के लिए दिशा-निर्देश वाले बोर्ड लगे हुए थे। मोमोको ने लापरवाही से कहा, "हमारी सराय सबसे दूर है, इसलिए वहाँ पहुँचने में चालीस मिनट लगेंगे।"
“क्या?” मैंने रोते हुए कहा।
"लेकिन नज़ारा तो अद्भुत है," उसने कहा और मेरे गाल पर चुटकी ली।
आगे और भी सीढ़ियाँ और खड़ी ढलानें थीं। वहाँ केवल एक छोटी सी दुकान और एक ही विश्राम स्थल था। बाकी सब या तो पहाड़ी सराय थी या निजी आवास। जब भी कोई

चोटी से नीचे आता हुआ हमारे पास से गुजरता, वे हमें खुशी से "हैलो!" कहकर अभिवादन करते।
और हर बार, मोमोको और मैंने उत्साहपूर्वक जवाब दिया, "हैलो!"
हमने जितने भी लोगों को देखा, उनमें से अधिकतर बुजुर्ग थे, लेकिन कुछ युवा जोड़े और कॉलेज के छात्रों जैसे दिखने वाले बड़े-बड़े समूह भी थे। मुझे यह देखकर थोड़ी राहत मिली कि अधिकतर युवा लोग मेरी तरह सामान्य कपड़े पहने हुए थे।
आखिरकार, जिस सराय की हम तलाश कर रहे थे, वह नज़र आ गई। इस समय तक मेरी साँस पूरी तरह फूल चुकी थी। मोमोको भी थोड़ी थकी हुई लग रही थी। "हम पहुँच गए। हम पहुँच गए," उसने माथे से पसीना पोंछते हुए कहा।
लकड़ी की वह इमारत काफी जर्जर लग रही थी। उसमें तीन मंजिलें थीं जो किसी निजी घर से जुड़ी हुई प्रतीत होती थीं। इमारत का पिछला हिस्सा चट्टान से सटा हुआ था। सामने के बड़े से आंगन में किसी ने एक ट्रैक्टर, एक जंग लगी साइकिल और कुछ लकड़ियां छोड़ रखी थीं। वह जगह बहुत ही जर्जर लग रही थी। अगर अच्छे शब्दों में कहें तो, शायद आप उसे सादगीपूर्ण कह सकते हैं। अगर सीधे शब्दों में कहें तो, वह एक कूड़े का ढेर थी। लेकिन मुझे यह कल्पना करना मुश्किल लग रहा था कि मोमोको किसी साफ-सुथरे छोटे से सराय में ठहरेगी। इसलिए मैंने एक नज़र डाली और सोचा, यह तो बहुत बढ़िया लग रहा है।
“क्या कोई है?” मोमोको ने दरवाजा खोला और अंदर चिल्लाई। कुछ देर बाद, हमें गलियारे में किसी के दौड़ने की आवाज सुनाई दी और एक युवती प्रकट हुई। उसने ढीली जींस और एक स्वेटशर्ट पहनी हुई थी जो साफ तौर पर उसके लिए बहुत बड़ी थी। वह लगभग बीस साल की लग रही थी।
उस लड़की ने मोमोको की तरफ देखा और इतनी बेबाकी से बोली कि आप कभी अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते थे कि वह किसी मेहमान से बात कर रही है। "अरे, क्या यह मोमोको है?"
“काफी समय हो गया, हारू। कैसी हो?” मोमोको ने जवाब दिया।
“ये कौन है? क्या ये आपकी बेटी है? रुकिए, क्या आपके बच्चे भी हैं?”
"मैं उसकी भतीजी, ताकाको हूँ," मैंने हारू से अपना परिचय देते हुए कहा, इससे पहले कि मोमोको किसी और को बता पाती कि मैं उसकी बेटी हूँ।
हारू का स्वभाव थोड़ा रूखा हो सकता है, लेकिन वह विशेष रूप से दुष्ट स्वभाव की नहीं लगती थी।

"आपसे मिलकर अच्छा लगा," उसने कहा और मेरी ओर झुककर अभिवादन किया।
हमें अंदर से फिर कदमों की आहट सुनाई दी। इस बार पचास वर्ष की एक महिला धीरे-धीरे हमारी ओर आती हुई दिखाई दी, जिसने एप्रन और सिर पर स्कार्फ पहना हुआ था।
“अरे मोमोको, तुम जल्दी आ गई,” महिला ने दोस्ताना मुस्कान के साथ कहा। उसकी बोलने की शैली चुस्त थी, लेकिन यह महसूस किया जा सकता था कि वह लोगों की देखभाल करना पसंद करती थी।
“आपको दोबारा देखकर अच्छा लगा,” मोमोको ने कहा और विधिपूर्वक झुककर अभिवादन किया। मुझे एहसास हुआ कि एप्रन पहनी हुई महिला सराय की मालकिन थी। "हे मोमोको," हारू ने कहा, "क्या तुम यहाँ फिर से काम करने वाली हो?"
“नहीं, हारू। मोमोको आज मेहमान बनकर आई है।”
"अरे नहीं, सच में?"
मुझे इस बातचीत पर आश्चर्यचकित होते देख, मोमोको ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा, "जब मैंने सटोरू का घर छोड़ा, तो मैं कुछ समय के लिए यहाँ आ गई और सराय के मालिक ने मुझे नौकरी दे दी।"
“तो यही हुआ था?” मैंने आश्चर्य से अपनी आवाज ऊँची करते हुए कहा।
“असल में,” उसने बेपरवाही से जवाब दिया।
सराय मालिक हमें हमारे कमरे तक ले गया। दोपहर के 2 बज चुके थे, इसलिए हम दिन के पहले मेहमान थे। इमारत का अंदर का हिस्सा भी बाहर की तरह ही अस्त-व्यस्त था। हर जगह सामान बिखरा पड़ा था। गलियारे में किसी ने एक खाली मछलीघर, पत्रिकाओं का एक बड़ा ढेर, एक पुराना टीवी और एक गिटार छोड़ रखा था। जब मैंने प्रवेश द्वार के बगल में बने रसोईघर पर नज़र डाली, तो वह काफी अव्यवस्थित लग रहा था। शौचालय, वॉशरूम और स्नानघर का भी यही हाल था। यह किसी सराय से ज़्यादा किसी गेस्ट हाउस जैसा लग रहा था। गर्मियों की छुट्टियों में शायद यह छात्रों से भरा रहता होगा। मुझे नहीं पता कि पहाड़ पर स्थित दूसरी सरायें भी ऐसी ही थीं या नहीं, लेकिन इस सराय का माहौल बेहद अनौपचारिक था।
वह हमें सबसे दूर कोने वाले कमरे में ले गई क्योंकि वहाँ से नज़ारा सबसे अच्छा था। वह कमरा लगभग दस चटाई के बराबर बड़ा था, हम दोनों के लिए एकदम सही आकार का।

खिड़की के बाहर, हम घने हरे पत्तों से घिरे हुए थे। पेड़ हल्की हवा में धीरे-धीरे हिल रहे थे। बीच-बीच में हमें किसी चिड़िया की आवाज़ सुनाई देती, जो शायद थ्रश की थी। दूर पहाड़ों पर कोहरा छाया हुआ था। ऊपर, नीले आसमान में धीरे-धीरे तैरते हुए, छोटे-छोटे चित्तीदार बादलों का एक समूह मछलियों के झुंड जैसा लग रहा था। जैसे ही मैं इस नज़ारे को निहार रहा था, मुझे समय का एहसास ही नहीं हो रहा था।
मैं कुछ देर खिड़की के पास बैठकर नज़ारे को निहारती रही। मेरे बगल में बैठी मोमोको भी असामान्य रूप से शांत थी, वह भी दृश्य को देख रही थी, शायद उसी भावना से अभिभूत थी। मैंने कल्पना करने की कोशिश की कि ऐसी जगह पर रहना और काम करना कैसा रहा होगा। मुझे खुद आश्चर्य हुआ जब मुझे एहसास हुआ कि शायद मुझे यह अच्छा लगे।
तभी दरवाजे पर ज़ोरदार दस्तक हुई और हारू अंदर आई। "रात को पहले से ही बहुत ठंड हो रही है," उसने दोनों हाथों में एक भारी-भरकम चूल्हा लिए हुए कहा। उसने उसे कमरे के एक कोने में धड़ाम से रख दिया।
मैंने कहा, "धन्यवाद।"
"हाँ, आनंद लीजिए!" उसने बाहर निकलते हुए जवाब दिया, उसकी आवाज़ किसी बार में काम करने वाली वेट्रेस जैसी लग रही थी।
मैंने मोमोको से पूछा, "तुम यहाँ कितने समय से काम कर रही हो?"
सोचने के लिए उसने अपना सिर एक तरफ झुकाया। फिर उसने कहा, "लगभग तीन साल, मुझे लगता है।"
"तुम उस के बाद क्या करते हो?"
"खैर, बहुत कुछ। अगर लोग ठान लें तो कहीं भी रह सकते हैं।"
उसके मामले में यह बात बिल्कुल सच थी। वह इतनी साहसी प्रतीत होती थी कि कहीं भी रह सकती थी।
“अच्छा,” वह उछलकर खड़ी हो गई। “क्या हम रात के खाने से पहले थोड़ी देर के लिए बाहर चलें?”
हमने असली ट्रेकिंग अगले दिन के लिए टाल दी थी, इसलिए हमने पहाड़ पर स्थित मंदिर में दर्शन करने का फैसला किया। मोमोको ने बताया कि मंदिर सराय से बस थोड़ी ही दूरी पर है और वहाँ पहुँचने में हमें पाँच मिनट से भी कम समय लगेगा। जब हम एक छोटे से कोने से गुज़रे जहाँ एक साधारण सी उपहार की दुकान और रेस्तरां था, तो मंदिर का विशाल तोरी द्वार हमारे सामने आ गया। हमने

द्वार पर जल्दी से प्रणाम किया और लोगों के एक समूह के पीछे-पीछे मंदिर परिसर में प्रवेश कर गए।
यह तीर्थस्थल मेरी उम्मीद से कहीं अधिक सुंदर था। हम एक के बाद एक कई पवित्र स्थानों और खजाने के कक्षों से गुज़रे। मुख्य तीर्थस्थल की ओर जाने वाले रास्ते पर अनगिनत पत्थर के स्मारक एक साथ सटे हुए थे। मैंने एक बोर्ड पढ़ा जिस पर इसके इतिहास का वर्णन था, और उसमें लिखा था कि मूल तीर्थस्थल का निर्माण इस स्थान पर 1200 वर्ष से भी अधिक पूर्व नारा काल में हुआ था। मध्य युग से ही इस स्थान को क्षेत्र के पवित्र पर्वतों में से एक माना जाता था। सदियों से श्रद्धालु इस पर्वत पर दर्शन के लिए आते रहे हैं।
मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि यह इतने लंबे समय से मौजूद है। सैकड़ों वर्षों से, अनगिनत लोग इस तीर्थस्थल के दर्शन के लिए यही यात्रा करते रहे हैं। उस समय परिवहन के साधन नहीं थे, इसलिए पैदल यात्रा में कई दिन या सप्ताह लग जाते होंगे। यह उनके लिए आज हमारे लिए जितना महत्व रखता है, उससे कहीं अधिक महत्व रखता होगा। मुझे अपनी आस्था की कमी का एहसास हुआ।
मुख्य मंदिर तक पहुँचने के लिए हमने खड़ी पत्थर की सीढ़ियाँ चढ़ीं। रास्ते में उगने वाले जंगली जेंटियन के फूलों पर चमकीले बैंगनी रंग के फूल खिले हुए थे। सीढ़ियाँ मानो कभी खत्म ही नहीं हो रही थीं, और मंदिर तक पहुँचने में हमें बहुत मुश्किल हुई। बाकी पर्यटक सीढ़ियाँ चढ़ते हुए हाँफ रहे थे। जब हम आखिरकार पूजा कक्ष के सामने पहुँचे, तो मेरी साँस फिर से फूल गई।
मैंने किसी तरह खुद को संभाला, और हमने अपने सिक्के चंदे के डिब्बे में डाले और प्रार्थना करने के लिए अपने हाथ जोड़े।
जब मेरा काम समाप्त हो गया, तो मैंने मोमोको की ओर देखा, लेकिन वह अभी भी प्रार्थना कर रही थी। उसके चेहरे पर बेहद गंभीरता के भाव थे।
जब उसने दोबारा आंखें खोलीं, तो मैंने पूछा, "तुम किसलिए प्रार्थना कर रही हो?"
"कुछ नहीं।"
"लेकिन ऐसा लग रहा था कि आप बहुत ही गंभीरता से प्रार्थना कर रहे थे।"

“पवित्र स्थान वह जगह नहीं है जहाँ आप किसी चीज़ के लिए प्रार्थना करते हैं। यह वह जगह है जहाँ आप कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। यह वह जगह है जहाँ आप देवताओं से कहते हैं, 'हमेशा मेरी रक्षा करने के लिए धन्यवाद।'”
"ओह, मैंने अभी-अभी किसी चीज़ के लिए, उम, बहुत ही उत्साह से अनुरोध किया था।"
आपने क्या मांगा था?
"आप जानते हैं, अच्छा स्वास्थ्य और यह कि मैं दिवालिया न हो जाऊं।"
मोमोको हंसते हुए बोली, "यह तो बिलकुल मेरे जैसा लगता है।" हमने मंदिर परिसर का एक चक्कर लगाया। फिर उसने कहा, "जब मैंने साटोरू को छोड़ा, तो मैं भटकते हुए इस मंदिर में आ गई। इसी तरह मैं उस सराय में रहने की अनुमति मांगने पहुंची। मेरे पास सहारा देने के लिए कोई और नहीं था, इसलिए मैंने सराय की मालकिन से पूछा कि क्या मैं वहां रहकर काम कर सकती हूं। पता चला कि उस समय उनके पास कर्मचारियों की कमी थी। उनके पति का अभी-अभी देहांत हुआ था और हारू अभी तक पैदा नहीं हुई थी। फिर भी, एक अनजान अधेड़ उम्र की महिला को काम पर रखना... यह उनकी बहुत बड़ी दरियादिली थी।"
मुझे अजीब सी हैरानी हुई और मैंने सोचा कि उसे अपने बारे में तीसरे व्यक्ति के रूप में बात करना पसंद है।
जाने से पहले, हम सब एक साथ खड़े हुए और फिर से प्रणाम किया। डूबते सूरज की रोशनी में मुख्य मंदिर बेहद खूबसूरत लग रहा था। फिर हम खड़ी ढलान वाले रास्ते से नीचे उतरकर सराय की ओर चल दिए।
मैंने सारा पसीना धोने के लिए स्नान किया। मोमोको के स्नान समाप्त होने का इंतज़ार करते हुए मैं अपने फ़्यूटन पर लेटी हुई थी, तभी मुझे फिर से नींद आने लगी। जब मोमोको ने मुझे जगाया, तब तक रात के खाने का समय काफी बीत चुका था।
जब मैं सपनों की दुनिया में खोया हुआ था, तभी होटल में मेहमानों के दो और समूह आ गए। हम सब भोजन कक्ष में मिले। एक समूह में एक ही परिवार की तीन पीढ़ियाँ थीं। दूसरा समूह दो अधेड़ उम्र के पुरुषों का था। वे दोनों पहले से ही थोड़े नशे में थे। जब हम कमरे में दाखिल हुए, तो उन्होंने चिल्लाकर हमारा स्वागत किया, "माफ़ कीजिए, हम आपके बिना ही शुरू कर गए!" उनकी आवाज़ें हद से ज़्यादा तेज़ थीं।

रात के खाने में इतना कुछ था कि देखकर पेट भर गया। सराय की मालकिन एक के बाद एक चीज़ें लाती रही। धीमी आंच पर पके व्यंजन, किण्वित सोयाबीन, अचार वाले हरे प्याज, किमची—इतने सारे अलग-अलग छोटे-छोटे व्यंजन थे। उसने हॉट पॉट और टेम्पुरा भी बनाया।
सबसे स्वादिष्ट व्यंजन था मिसो में ग्रिल्ड आयु स्वीटफिश। चावल और मिसो सूप के साथ इसे खाने के बाद मेरा पेट भर गया, इसलिए मैंने अपना हॉट पॉट और टेम्पुरा पुरुषों को दे दिया। सराय के शांत वातावरण के कारण भोजन कक्ष में एक अलग ही उत्सव जैसा माहौल था। दोनों पुरुषों को पर्वतारोहण में रुचि थी और वे इस पहाड़ पर कई बार जा चुके थे। नशे में धुत होने के बावजूद भी उन्होंने हमें घूमने लायक जगहों के बारे में विस्तार से बताया। मैं वायलेट और फॉल्स एनीमोन के फूलों वाली जगहें देखना चाहती थी, लेकिन साल का वह समय बीत चुका था।
परिवार ने बताया कि वे पोते की शादी से पहले परिवार के साथ कुछ समय बिताने के लिए एक छोटी सी यात्रा पर आए हैं। दादी की उम्र अब लगभग सत्तासी से उनसठ वर्ष के बीच थी। (उनकी सही उम्र को लेकर थोड़ी बहस भी हुई।) उन्हें फ्यूनिक्युलर स्टेशन से सराय तक दादी की व्हीलचेयर को धक्का देकर ले जाना पड़ा।
“यह मेरी आखिरी यात्रा है,” दादी ने धीरे से कहा।
“वाह! तुम अभी भी बहुत जवान हो। तुम्हारे पास अभी भी बहुत सारी यात्राओं के लिए समय है!” मोमोको ने बेहद खुश होकर कहा।
बाद में, जब बाकी दो समूह ऊपर चले गए, तो मोमोको ने सराय के मालिक के साथ लगातार बातचीत शुरू कर दी, इसलिए मैं उससे पहले कमरे में चला गया।
जब मैं अपने कमरे में वापस आई, तो मैंने सोचा कि मोमोको दिन भर कैसी रही होगी, और इस नतीजे पर पहुँची कि यात्रा को लेकर मेरी सारी चिंताएँ सिर्फ़ मेरे मन की उपज थीं। वह बहुत खुश लग रही थी। वह हमेशा की तरह हंसमुख थी। शायद उसे अपनी पुरानी नौकरी की याद आ रही थी।
मैं गलत धारणा लेकर इतनी दूर तक आया था। बिल्कुल हिदेकी की तरह। मुझे चीजें समझने में बहुत समय लगता था। लेकिन शायद इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। मैं आनंद ले रहा था। मोमोको का इंतजार करते हुए मैं यही सोच रहा था।

जब मोमोको कमरे में वापस आई, तो उसने कहा, "कल हमें जल्दी उठना है। चलो सो जाते हैं," और जल्दी से कंबल के नीचे घुस गई।
लेकिन उस दिन दो बार झपकी लेने की मूर्खता के कारण, मुझे नींद नहीं आ रही थी।
मोमोको बिस्तर पर लेटते ही तीन मिनट के भीतर सो गई। मैं उसकी सांसें शांति से सुन सकता था (बीच-बीच में खर्राटे की हल्की आवाज के साथ)।
जब मैं वहाँ लेटा था, मुझे इस बात का अफसोस हो रहा था कि मैं अपनी किताब सेवूर में ही भूल गया था—हालाँकि अब उस अफसोस से मुझे कोई फायदा नहीं होने वाला था। तभी, उसी क्षण, वाडा का चेहरा मेरे मन में आ गया।
मुझे हैरानी होती है कि वो अभी क्या कर रहा होगा। शायद सो रहा होगा। और मैं यहाँ एक अनजान जगह पर बिना सोए रात गुज़ार रही हूँ। हम घर से ज़्यादा दूर नहीं हैं, फिर भी मुझे अकेलापन महसूस हो रहा है। मुझे उसकी बहुत याद आ रही है। उससे उसका नंबर माँगने में मेरा कुछ नहीं बिगड़ता। अब शायद मैं उसे फिर कभी न देख पाऊँ। उसके पास कॉफ़ी शॉप जाने का कोई कारण नहीं बचा है। यह सोचकर दुख होता है कि अब पछतावे के सिवा कुछ नहीं बचा है।
जैसे-जैसे मैं इसके बारे में सोचती गई, मेरी नींद खुलती गई, इसलिए मैं चुपके से कमरे से बाहर निकल गई। पूरा सराय सो रहा था। तभी मुझे हॉल के आखिर में बने छोटे से कमरे के स्लाइडिंग दरवाजे से रोशनी आती दिखाई दी। दबे पांव चलकर मैंने अंदर झाँका तो देखा कि हारू एक डेस्क के सामने पैर मोड़कर बैठी कंप्यूटर स्क्रीन को घूर रही थी। उसके चेहरे पर वही गंभीर भाव थे जो मोमोको के मंदिर में प्रार्थना करते समय होते हैं।
जब मैंने दबे पांव वहां से जाने की कोशिश की, तो उसने मुझे देख लिया और अनमने ढंग से पूछा, "क्या हुआ? कुछ हुआ क्या?"
मैंने कहा, "मुझे नींद ही नहीं आ रही थी।"
“तो फिर, शायद आपको टहलने जाना चाहिए। आज रात आसमान साफ है, तारे बहुत सुंदर दिखेंगे।” उसने ठुड्डी से प्रवेश द्वार की ओर इशारा किया।
मैंने कहा, "शायद मैं ऐसा करूँ।"
जैसे ही मैं दरवाजे से बाहर निकलने वाली थी, मैंने सुना, “एक मिनट रुको।
बाहर घना अंधेरा है और एक लड़की के लिए अकेले बाहर निकलना खतरनाक है।” हारू हाथ में टॉर्च लिए मेरे पीछे आई।
हमने चुपचाप सामने का दरवाजा खोला और आंगन में चले गए।

ऊँचाई पर होने के कारण, अक्टूबर के मध्य में भी हमें अपनी साँस दिखाई दे रही थी। जब मैंने आकाश की ओर देखा, तो तारे सामान्य से कहीं अधिक निकट प्रतीत हुए। वहाँ शीतकालीन तारामंडल थे जो हमें शहर में दिखाई नहीं देते।
चट्टानों के उस पार, वे लहरदार पहाड़ों के ऊपर टिमटिमा रहे थे।
हम धीरे-धीरे मंदिर की ओर बढ़े। सब सो रहे थे। किसी भी कमरे में रोशनी नहीं थी। केवल हमारी चप्पलों की खट-खट की सुखद आवाज़ सुनाई दे रही थी।
मुझे खेद है कि मैंने आपको इसमें घसीटा।
“कोई बात नहीं। मैं बस ऑनलाइन कुछ देख रही थी।” हारू ने अपनी जेब से सिगरेट निकाली, उसे मुंह में डाला और जला लिया। फिर वह वहीं खड़ी होकर अंधेरे में धुआं छोड़ने लगी।
"हारू, तुमने यहां काम करना कब से शुरू किया?"
“हाई स्कूल से स्नातक होने के बाद से। बॉस मेरे रिश्तेदारों में से एक हैं।”
"क्या वह सही है?"
“यहाँ लगभग सभी लोग ऐसे ही हैं। वे अपने परिवार और रिश्तेदारों के साथ मिलकर सराय चलाते हैं। इसके अलावा, स्थानीय हाई स्कूल के बच्चे छुट्टियों के दौरान अंशकालिक काम करने आते हैं। मोमोको जैसे लोग काफी असामान्य हैं।”
क्या यह काम मजेदार है?
“कहना मुश्किल है। यही मेरी एकमात्र नौकरी है। जब छात्र यहाँ होते हैं तो काफी व्यस्तता रहती है। लेकिन साल के इस समय में थोड़ा अकेलापन महसूस होता है। आप दोनों साथ क्यों यात्रा कर रहे हैं? आप दोनों इतने करीबी नहीं लगते।” हारू ने यह सवाल बिना किसी खास दिलचस्पी के पूछा।
“मुझे सच में नहीं पता। हमारे जाने से पहले, मुझे ऐसा लग रहा था कि वह मुझे कुछ बताना चाहती है, लेकिन अब ऐसा लगता है कि यह सिर्फ मेरे दिमाग की उपज थी।”
“हम्म... अब जब आपने इसका जिक्र किया है, तो याद आया कि जब वह यहाँ काम करती थी, तब उसका मिजाज काफी उदास रहता था। अब उसे दोबारा देखकर मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ कि वह कितनी खुशमिजाज है।”
"वास्तव में?"

“हां। यहां अपने आखिरी दिनों में, शायद वह ज़्यादा खुशमिजाज़ थीं, लेकिन जब मैंने यहां काम शुरू किया था, तब वह शायद ही कभी बात करती थीं। वह मुझे थोड़ा डराती थीं।”
मैंने मोमोको को उस तरह से कल्पना करने की कोशिश की, लेकिन मैं वास्तव में ऐसा नहीं कर सका।
"मुझे समझ नहीं आ रहा," उसने कहा और अपनी सिगरेट को ऐशट्रे में फेंक दिया, जो मंदिर के तोरी द्वार के ठीक सामने लगी हुई थी।
रात के आकाश में एक टूटता तारा तेजी से गुजरा और गायब हो गया। उसी क्षण, हारू ने एक जोरदार छींक मारी।
मैंने पूछा, "क्या हमें वापस चलना चाहिए?"
हारू ने नाक पोंछते हुए कहा, "ज़रूर।"

8

अगली सुबह, मुझे अपने फ़्यूटन के कंबल से उठने की भी हिम्मत नहीं हुई। मैं बस वहीं लेटी रही, सुस्ती से। मोमोको ने कई बार मेरे ऊपर से कंबल हटाने की कोशिश की, लेकिन मैंने उसे कसकर पकड़ रखा था और पूरी ताकत से उसका विरोध किया।
नौ बज चुके थे जब मैं आखिरकार उठा, अपना चेहरा धोया और उसकी तलाश में सराय में इधर-उधर भटकने लगा।
"वह आंगन में ही होगी," सराय के मालिक ने हंसने की कोशिश करते हुए मुझसे कहा।
जब मैं बाहर गया, तो मैंने मोमोको को आंगन के बीचोंबीच सुबह की रोशनी में नहाते हुए देखा। उसने अभी भी पिछली रात वाला युकाटा पहना हुआ था, लेकिन वह एक अजीब मुद्रा में खड़ी थी।
मैंने पूछा, "तुम क्या कर रहे हो?"
“ताई ची,” उसने कहा। उसने मुझे बताया कि यह कई सालों से उसकी सुबह की दिनचर्या रही है। “यह सेहत के लिए बहुत अच्छी है। साथ ही इससे अच्छा महसूस होता है। क्या तुम मेरे साथ इसे आजमाना चाहोगे, नींद में डूबे हुए?”
क्या वह हर सुबह किताबों की दुकान पर ऐसा करती थी? मुझे यकीन है कि किसी पुरानी किताबों की दुकान के सामने एक अधेड़ उम्र की महिला को ताई ची करते देख काम पर जा रहे व्यापारियों को हैरानी हुई होगी। यह सोचकर ही मुझे हंसी आ गई।
नाश्ता खत्म करने के बाद, मोमोको और मैं आखिरकार अपनी हाइकिंग के लिए निकल पड़े। आज मैं पूरी तरह तैयार थी, मैंने ऐसे कपड़े पहने थे जिनमें चलना- फिरना बहुत आसान था। बाकी सभी मेहमान हमसे बहुत पहले ही निकल चुके थे। जब मैंने मोमोको से कहा कि हमारे पास अभी भी काफी समय है, तो उसने मेरी तरफ मुड़कर मुझे गुस्से से घूरा।
जब हम सराय से निकले, तो सराय के मालिक ने हमें पीछे से आवाज़ दी, "फिर मिलेंगे!"
अगर आप रास्ते में दो पहाड़ पार कर लेते, तो आपको एक ऐसी जगह मिल जाती जहाँ से अद्भुत नज़ारा दिखता। हम उसी ओर जा रहे थे।

पहाड़ों में मौसम सुहावना और ठंडा था। हम चारों ओर देवदार के पेड़ों से घिरे हुए थे, जिनमें से कुछ पेड़ मुझसे पाँच गुना बड़े थे। जब मैं रास्ते में जगह-जगह उग रहे सुंदर जंगली फूलों को देखने के लिए रुकती, तो मोमोको हर फूल की ओर इशारा करके मुझे उसका नाम बताती। वह यहाँ कुछ ही सालों से रह रही थी, लेकिन फिर भी उसे यहाँ के जीवन के बारे में काफी कुछ पता था। दूसरी ओर, मैंने स्कूल के ग्रीष्मकालीन कार्यक्रम के बाद से कभी हाइकिंग नहीं की थी। इतने जानकार गाइड के साथ पहाड़ों में चलना बहुत मज़ेदार था। मुझे खो जाने की चिंता नहीं थी। थोड़ा बेहतर महसूस करते हुए, मैंने सप्ताहांत की यात्रा में गाए गए गीत "द बेयर इन द वुड्स" को गुनगुनाना शुरू कर दिया। लेकिन यह तो चढ़ाई की शुरुआत में ही था। उसके बाद, मैं गाने नहीं गा रहा था। रास्ता, जो पहले समतल और चौड़ा था, धीरे-धीरे संकरा और ढलानदार होता गया। मानो वह मुझसे कह रहा हो, "यह पहाड़ मज़ाक नहीं करता।" जल्द ही पैर जमाना मुश्किल हो गया, और मुझे डर लगने लगा कि अगर मैंने एक पल के लिए भी ध्यान हटाया तो मेरे पैर फिसल जाएँगे। एक पल पहले मैं बेफिक्र होकर गा रहा था, "और भालू ने यही कहा!" अगले ही पल, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं किसी अथाह गड्ढे में फँस गया हूँ, और बाहर निकलने का रास्ता भी नहीं सूझ रहा।
लेकिन मोमोको को रास्ता ज़रा भी बुरा नहीं लगा। वह फुर्ती से आगे बढ़ती रही, ज़रा भी रहम नहीं दिखा रही थी। जब हमारे बीच का फासला बहुत बढ़ जाता, तो वह रुक जाती और मेरा इंतज़ार करती।
"अरे, उम, मिस माउंटेन गाइड, क्या हम थोड़ा धीरे चल सकते हैं?" मैंने बड़बड़ाते हुए कहा, लगभग उसी समय जब हम तेंगु रॉक के नाम से जाने जाने वाले विशालकाय पत्थर को पार कर चुके थे, क्योंकि यह कुछ हद तक लंबी नाक वाले उस पौराणिक प्राणी जैसा दिखता था।
“पता नहीं क्यों, हमारे पास इतना कम समय है? अगर हम अभी जल्दी नहीं करेंगे तो घर लौटते समय सूरज डूब जाएगा। और पहाड़ों में रात को घना अंधेरा हो जाता है,” मोमोको ने रूखेपन से कहा।
मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं था।
“थोड़ी दूर आगे जाकर हम थोड़ा आराम करेंगे। थोड़ी देर और चलते रहो,” मोमोको ने मुझे प्रोत्साहित करते हुए कहा। फिर वह तेज़ी से आगे बढ़ गई। दोपहर ढलने के बाद, हमने आखिरकार एक स्वच्छ पहाड़ी झरने के किनारे थोड़ी देर आराम किया। सराय मालिक ने हमारे लिए जो ओनिगिरी (एक प्रकार का व्यंजन)

पैक किया था, उसे हमने आपस में बाँट लिया, यानी हममें से हर एक को दो-दो मिले। पेड़ों से छनकर आती हल्की धूप में पानी की मधुर ध्वनि सुनकर मेरी थकान थोड़ी कम हो गई। मैंने उस शुद्ध पहाड़ी हवा में कई गहरी साँसें लीं, मानो साँस लेने की कोशिश कर रही थी। मोमोको अब भी पूरी तरह शांत लग रही थी। उसके चेहरे पर एक सौम्य भाव था, और वह अपने ओनिगिरी का एक टुकड़ा खा रही थी।
"मोमोको, तुम वाकई बहुत अच्छी सेहत में हो।"
"ताकाको, तुम्हारी कम उम्र को देखते हुए, तुममें बिल्कुल भी सहनशक्ति नहीं है।"
मैं हँस पड़ी और उसे थोड़ा चिढ़ाया। "मोमोको, तुम शायद उस बुढ़िया की उम्र में भी बहुत अच्छी सेहत में रहोगी।"
मोमोको हंस पड़ी। "सच कहूं तो, ऐसा होने की संभावना नहीं दिख रही है। मैं बीमार हूं। और बहुत जल्द मेरी हालत बिगड़ने लगेगी।"
"मैंने क्या कँहा।
“ठीक है, छुट्टी खत्म हो गई। बस थोड़ा और चलना बाकी है,” उसने जोश से भरी आवाज में कहा और चली गई।
बीमार? मोमोको बीमार कैसे हो सकती है? वह तो बिल्कुल भी बीमार नहीं लग रही है...
मोमोको ने पीछे मुड़कर देखा तो मैं अभी भी वहीं खड़ी थी। “अगर तुम जल्दी नहीं चली तो,” उसने पुकारा, “मैं तुम्हें पीछे छोड़ दूंगी!” इतनी दूरी से वो मुझे बहुत छोटी लग रही थी। मैं उसके पीछे भागने के लिए दौड़ पड़ी।

उसके बाद, हमने अपना पूरा ध्यान पैदल यात्रा पर केंद्रित किया और मुश्किल से ही एक शब्द का आदान-प्रदान किया।
एक जगह हम एक ऊबड़-खाबड़ ढलान से नीचे उतरे जहाँ सिर्फ़ चट्टानें थीं, फिर पहाड़ के चारों ओर आधा चक्कर लगाया और दूसरी ढलान पर चढ़ गए। हम अपने रास्ते में बार-बार ऊपर-नीचे होते रहे। मेरे बेचारे पैर दर्द से चीख रहे थे।
फिर अचानक आसमान खुल गया और चोटी नज़र आने लगी। चोटी पर बना देखने का चबूतरा किसी प्लेट पर रखे हुए फ्लैन जैसा लग रहा था। लाल-भूरी मिट्टी के विशाल मैदान में कुछ चीड़ के पेड़ बिखरे हुए थे। हमारे सामने खड़ी चट्टान

की गहरी खाई थी। वहाँ केवल एक अधेड़ उम्र का आदमी बैठा था, जो चट्टान के किनारे पर लगी एक बेंच पर था। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। हम भी उस आदमी के सामने वाली बेंच पर बैठ गए। हमारे ऊपर से आती हल्की हवा ने हमारी जलती हुई मांसपेशियों को ठंडक पहुँचाना शुरू कर दिया।
पहाड़ की चोटी से नज़ारा वाकई अद्भुत था। चारों ओर दूर-दूर तक हरियाली ही हरियाली थी। जिधर भी देखो, पहाड़ की चोटियाँ एक-दूसरे से सटी हुई नज़र आ रही थीं। और आसमान बेहद करीब महसूस हो रहा था। इतना विशाल और साफ। अगर मैं उसे ज़्यादा देर तक देखता रहता, तो ऐसा लगता जैसे वो मुझे निगल जाएगा।
जब मैंने आंखें सिकोड़ीं, तो मुझे टोक्यो शहर मुश्किल से दिखाई दिया। वह इतना छोटा था कि दूर से एक छोटे से बिंदु जैसा लग रहा था। मैंने कल्पना करने की कोशिश की कि कल मैं उस छोटे से बिंदु में वापस जाकर अपना जीवन फिर से जी सकूंगी, लेकिन यहां पहाड़ पर मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि जीवन सचमुच में मौजूद है। क्या यहीं रुककर ऐसे ही जीना बेहतर नहीं होगा? मुझे ऐसा ही महसूस हो रहा था। मैंने सोचा कि क्या मोमोको ने भी पहली बार यहां आने पर यही सोचा होगा।
"अरे, मोमोको?"
"हाँ?"
“साटोरू को छोड़ने का फैसला आपने क्यों किया?”
मैं अपने चाचा के कहने पर नहीं पूछ रहा था। मैं बस उससे पूछना चाहता था। और इस बार मुझे उम्मीद थी कि मोमोको सचमुच मुझे जवाब देगी। अचानक मुझे ऐसा लगा कि वह जवाब देगी।
“हम्म…” उसने हल्के से सिर हिलाया और सीधे आगे देखने लगी। उसके कुछ कहने का इंतज़ार करते हुए, मैं भी उसकी तरह चुपचाप सीधे आगे देखता रहा। एक अबाबील बिना कोई आवाज़ किए हमारे ऊपर आसमान में उड़ गई।
"मैंने आपको बहुत पहले उस व्यक्ति के बारे में बताया था जिससे मुझे प्यार था, है ना?" उसने आगे की ओर देखते हुए कहा।
"हाँ।"
“जब मैं उसके साथ थी, तब मैं गर्भवती हो गई। मैं हमेशा से एक परिवार चाहती थी, इसलिए जब मुझे पता चला तो मैं बेहद खुश हुई। लेकिन उसने मेरी खुशी में ज़रा भी साथ नहीं दिया। दरअसल, इसकी वजह यह थी कि जापान में उसकी पहले से ही पत्नी और बच्चा था। मुझे यह बात बाद में पता चली।”

तेज हवा का एक झोंका आया और रेत का एक बादल उड़ा ले गया। एक पल बाद, सब कुछ फिर से शांत हो गया।
“अगर मैं ज़्यादा मज़बूत होती, तो शायद कम से कम बच्चे को बचा पाती। लेकिन मैं नहीं थी। मुझमें किसी और को इतना दर्द देकर खुशी पाने का आत्मविश्वास नहीं था, न ही उस कीमत को चुकाकर जीने का साहस था। बाद में मुझे इतना पछतावा हुआ कि मैं मर जाना चाहती थी। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।” उसने एक हल्की सी आह भरी और धीरे से मुस्कुराई।
“फिर मेरी मुलाकात सटोरू से हुई और हमारी शादी हो गई। सटोरू भी बच्चे चाहता था। लेकिन किसी तरह हमें कभी संतान प्राप्ति का सुख नहीं मिला। दस साल बीत गए और फिर आखिरकार हमें एक बच्चा मिला। सटोरू भी बहुत खुश था। मैं इतनी खुश थी कि मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। लेकिन बच्चे के जन्म से पहले ही, वह मेरे गर्भ में ही मर गया। मुझे लगा जैसे मुझे सजा मिल रही हो। और मुझे सजा इसलिए मिल रही थी क्योंकि उस समय मैंने अपने बच्चे को मरने दिया था। मुझे लगा जैसे अब मुझे बच्चे को जन्म देने का हक ही नहीं है। सटोरू ने मुझे दिलासा देने की पूरी कोशिश की। मुझे यकीन है कि उसके लिए भी यह बहुत मुश्किल रहा होगा। वह बहुत ही दयालु है। वैसे, तुम यह तो जानती ही हो ना, ताकाको?”
मेंने सिर हिलाया।
“उसके बाद, मैं किसी तरह खुद को संभाल पाई, और हम दोनों ने मिलकर मोरिसाकी बुकशॉप को फिर से शुरू करने के लिए कड़ी मेहनत की। सटोरू बच्चे के बारे में एक शब्द भी नहीं बोलता था। और फिर वह बुकशॉप चलाने में और भी ज़्यादा मग्न हो गया। मुझे दुकान पसंद थी, और मुझे यह सोचना अच्छा लगता था कि मैं सटोरू से वैसे ही प्यार कर सकती हूँ जैसे वह मुझसे करता है। लेकिन इतना काफी नहीं था। चाहे कितना भी समय बीत जाए, उदासी कभी दूर नहीं हुई। मैं इस एहसास को अपने साथ लिए घूमती रही—जैसे मेरे अंदर एक गहरा खालीपन रह गया हो। और यह खालीपन कम होने के बजाय, दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा था। मुझे लगने लगा कि इस हालत में उसके साथ रहना लगभग एक धोखा था। फिर एक दिन मैं उठी और मुझे एहसास हुआ कि मैंने कितनी बड़ी गलती कर दी थी।” मोमोको ने एक लंबी साँस ली। ऐसा लगा जैसे कहानी खत्म होने तक उसने अपनी साँस रोक रखी हो। “अगर वो मेरे इस स्वार्थी काम के लिए मुझे नीचा दिखाना चाहता है, तो मैं क्या कहूँ? मैं

उससे बहस नहीं कर सकती। इसीलिए तो मुझे उससे इस बारे में बात करने में डर लग रहा है। मतलब, तुम तो काफी हैरान लग रहे हो।”
मैं भला कैसे जवाब दे सकता था? मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। शायद इस समय मैं उसके दर्द को समझ ही नहीं सकता। मैं सिर्फ़ उसकी भावनाओं की तीव्रता को समझ सकता था। ऐसी स्थिति में, मेरे कहे आसान शब्द भी अर्थहीन लग रहे थे। मैं बस उसके बगल में बैठा रहा, चुपचाप सिर हिलाता रहा।
कुछ देर बाद मोमोको धीरे-धीरे उठी। "माफ़ करना, मैंने आपको इतना बोर किया। चलिए जल्दी वापस चलते हैं।"
तभी मैंने देखा कि हमारे सामने वाली पर्वत श्रृंखला पर रोशनी फीकी पड़ने लगी थी।

शिखर से लौटते समय मोमोको इतनी तेज़ी से चली कि वह फिर से मुझसे आगे निकल गई। मेरे मन में इतनी सारी बातें चल रही थीं कि मैं पूरे रास्ते अपने ही विचारों में खोई रही। इसी वजह से मेरा संतुलन कई बार बिगड़ा और मैं बुरी तरह गिर पड़ी।
जब हम वापस सराय पहुँचे, तब तक मैं पूरी तरह थक चुका था। बाहर काफी अंधेरा हो चुका था और थोड़ी देर बाद हल्की बूंदा-बांदी भी शुरू हो गई थी। खाने के समय में अभी एक घंटा बाकी था, इसलिए हम सीधे नहाने चले गए।
मैं काफी देर तक गर्म पानी में भीगता रहा, छत को टकटकी लगाए देखता रहा। दिन बहुत लंबा और थका देने वाला था। जब मैंने खिड़की से बाहर देखा, तो चारों ओर गहरा अंधेरा छाने लगा था। स्नानघर से उठती दूधिया सफेद भाप मानो रात में समा रही हो।
दरवाजा ज़ोर से खुलने की आवाज़ ने मुझे चौंका दिया। जब मैंने उधर देखा, तो मोमोको वहाँ उमस भरे वातावरण में पूरी तरह नग्न खड़ी थी। कपड़े उतार देने के बाद वह पहले से भी छोटी लग रही थी।
"क्या मैं आ सकता हूँ?"
“उम... ज़रूर... कृपया,” मैंने कहना शुरू किया, लेकिन वह मेरे जवाब का इंतजार किए बिना ही अंदर आ गई।
"तुम तो बहुत जवान हो, ताकाको। तुम्हारी त्वचा कितनी अच्छी और ताज़ा है," उसने नहाते हुए मेरी तरफ देखते हुए कहा।
मैंने अनायास ही उसकी तरफ पीठ कर ली। मैंने कहा, "मैं इतनी जवान नहीं हूँ।"

“ओह, अभी तो तुम्हारे सामने बहुत कुछ है। देखो तुम्हारी गर्दन से लेकर छाती तक का वो खूबसूरत कर्व। उम्र बढ़ने के साथ-साथ वहां उम्र का असर दिखने लगता है। लेकिन तुम्हारी त्वचा अभी भी कितनी सुंदर और चिकनी है। मुझे जलन हो रही है,” उसने मेरी तरफ देखते हुए हल्की सी मुस्कान के साथ कहा।
मैंने कहा, "यह पूरी तरह से यौन उत्पीड़न है।"
“अरे, चिंता मत करो, ताकाको,” उसने जोर से हंसते हुए कहा। उसकी हंसी की आवाज स्नानागार की दीवारों के भीतर सुखद रूप से गूंज उठी।
जब वह पहली बार अंदर आई, तो मैंने उसके ऑपरेशन का एक काफी दर्दनाक निशान देखा जो उसके पेट पर लगभग दस सेंटीमीटर नीचे तक सीधा फैला हुआ था। हालाँकि उसने इसे छिपाने की कोई कोशिश नहीं की थी, फिर भी मुझे लगा जैसे मैंने कुछ ऐसा देख लिया हो जो मुझे नहीं देखना चाहिए था। मैंने नज़रें हटा लीं। इससे मुझे वह सब याद आ गया जो उसने दिन में पहले अपने साथ हुई घटना और अपने अंदर के खालीपन के बारे में कहा था। बोलना मुश्किल लग रहा था, जैसे मेरे गले में कुछ अटक गया हो।
नहाने के बाद मोमोको मेरे बगल में पानी में उतर गई और संतुष्टि से अपनी आँखें बंद कर लीं। "आह, कितना अच्छा लग रहा है!" उसने कहा।
जब मैंने उसके चेहरे को एक तरफ से देखा, तो मुझे उसे बाहों में भरकर गले लगाने की एक अजीब सी इच्छा हुई। "यह क्या है?" मैंने खिड़की की ओर इशारा करते हुए कहा। जैसे ही उसका ध्यान भटका, मैं झपट पड़ा। लेकिन मोमोको को शायद मेरे आने का आभास हो गया था क्योंकि वह फुर्ती से मुझसे बच निकली। “क्या? तुम क्या कर रहे हो?” वह चीख पड़ी।
“कुछ नहीं,” मैं हँसते हुए बोली, पास आते हुए पानी उछालते हुए, धीरे-धीरे लेकिन लगातार उसे बाथटब के एक कोने में धकेलते हुए, जैसे कोई बॉर्डर कॉली किसी भटकती हुई भेड़ का पीछा कर रहा हो।
“क्या बात है, ताकाको? तुम्हारी आँखों में पागलपन भरी चमक है।”
उसकी आवाज़ में छिपे डर को नज़रअंदाज़ करते हुए, मैं उस पर झपटा। फिर मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और उसे कसकर पकड़ लिया। उसके कंधे बहुत छोटे और बहुत गर्म महसूस हुए।
“एक पल रुको… तुम क्या कर रहे हो…” उसने मुझे बुरी तरह से झटक दिया। पानी चारों ओर उछल रहा था। बाथटब की सतह पर लहरें फैल रही थीं। लेकिन मैंने अपनी पकड़ ढीली नहीं की।

अंततः, उसे बात समझ में आ गई और उसने हार मान ली। उसका शरीर शिथिल हो गया और उसने अपना सिर मेरे कंधे पर टिका दिया।
“मैं हार मानती हूँ। मुझे नहीं पता था कि तुम यही चाहती हो, ताकाको,” उसने मुझ पर झुकते हुए कहा।
आप ध्यान नहीं दे रहे थे।
हम दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े, लेकिन हम काफी देर तक उसी तरह बड़े बाथटब के एक कोने में एक-दूसरे को पकड़े बैठे रहे।

9

हमारी दूसरी रात पहली रात से कहीं ज़्यादा शांत थी। पिछली रात जिन मेहमानों से हम मिले थे, वे पहले ही पहाड़ से नीचे जा चुके थे। उनकी जगह एक पुरुष और एक महिला थे, जो शायद उसी दिन आए थे। वे दोनों रात के खाने के दौरान धीरे-धीरे बातें करते रहे। मुझे उन पर गुस्सा आ रहा था। आखिर उन्हें इस तरह के गेस्ट हाउस में आने की क्या ज़रूरत थी? उन्हें तो किसी गर्म पानी के झरने वाले सराय में होना चाहिए था, जहाँ वे अपनी मर्ज़ी से कुछ भी कर सकते थे और अपने रिश्ते को गुप्त रख सकते थे।
सराय का मालिक एक ट्रे लेकर अंदर आया और चुपके से कमरे के बीच में रखे पुराने से टीवी को चालू कर दिया। मुझे लगता है कि आवाज़ में कुछ गड़बड़ थी, क्योंकि स्क्रीन पर लोगों के हंसने की आवाज़ अचानक बंद हो जाती थी और टीवी की कैथोड-रे ट्यूब के अंदर गायब हो जाती थी। ऐसा होने पर कमरा पहले से भी ज़्यादा शांत हो जाता था। मुझे आवाज़ का अचानक बंद होना अजीब तरह से डरावना लगा, और आखिरकार मैं उठा, टीवी के पास गया और उसे बंद कर दिया।
हम अपने कमरे में वापस गए और बगल-बगल अपने-अपने चबूतरे पर लेट गए। लाइट बंद करते ही चारों ओर सन्नाटा छा गया। बारिश भी मानो रुक गई थी। दूर से आती बारिश की आवाज़ भी सुनाई नहीं दे रही थी।
"सुबह निकलने की जल्दी नहीं करनी चाहिए," मोमोको ने धीरे से कहा।
“यह अच्छा लग रहा है,” मैंने कहा, लेकिन मेरा ध्यान कहीं और था। मैं अंधेरे में छत को घूर रही थी। मोमोको ने मुझे पहले बताया था कि अगर कमरे में हल्की सी भी रोशनी हो तो उसे नींद नहीं आती, इसलिए कमरा एकदम अंधेरा था। फिर भी, आँखें खुली रखकर लेटे-लेटे, धीरे-धीरे अंधेरे की आदत पड़ते हुए, मैं कमरे में चीजों की परछाइयाँ देख पा रही थी, चाहे कितनी भी धुंधली क्यों न हों। कुछ देर बाद, मैंने मोमोको को धीरे से पुकारा, जिसे मैं जानती थी कि वह मेरे ठीक बगल में ही होगी, भले ही मैं उसे देख नहीं पा रही थी। "क्या तुम जाग रही हो?"
“हाँ?” उसने तुरंत जवाब दिया, मानो वह भी जाग रही हो।
"क्या हम एक पल के लिए बात कर सकते हैं?" मैंने धीमी आवाज़ में पूछा, अभी भी छत को घूरते हुए।
“ज़रूर। मुझे भी बात करने का मन कर रहा है।”

“यह उसी बारे में है जो आपने आज दोपहर कहा था…”
"हम किसके बारे में बात कर रहे थे?"
"बीमार होते हुए । । ।"
“हाँ।” जवाब देने से पहले वह एक पल के लिए रुकी।
“क्या यह—क्या यह वाकई इतना बुरा है?” मैंने यह सवाल एक ही सांस में पूछा, मानो मैं किसी स्क्रिप्ट की पंक्ति पढ़ रही हूँ। अंधेरे में मेरी आवाज़ बेहद बेबस लग रही थी।
“हां। अगर आप इसे इस तरह से देखें तो यह काफी बुरा है। लेकिन अगर आप इसे दूसरे तरीके से देखें तो यह उतना बुरा नहीं है।”
"आपका क्या मतलब है?"
“हम्म…” मोमोको ने आवाज़ को खींचते हुए कहा, “मेरा मतलब है, आप जानते हैं कि कुछ लोग दुर्घटना या अचानक बीमारी से मर जाते हैं और उन्हें किसी को अलविदा कहने का मौका भी नहीं मिलता? खैर, शायद उनकी तुलना में मैं सचमुच भाग्यशाली हूँ। मेरे पास अभी भी इन सब के लिए समय है।”
"तुम्हारा मतलब है । । ।"
नहीं, इतनी चिंता की कोई बात नहीं है। ऐसा नहीं है कि मैं अभी मरने वाली हूँ। कुछ समय पहले मैं अस्पताल गई थी और उन्होंने मेरा गर्भाशय निकाल दिया और कई अन्य ऑपरेशन किए। अब मैं नियमित रूप से अस्पताल जा रही हूँ और वे मेरी स्थिति का आकलन कर रहे हैं। मुझे लगता है कि अगले कुछ वर्षों तक मुझे इस पर नज़र रखनी होगी।
"और क्या इसीलिए तुम मेरे चाचा के पास वापस चली गई?"
“ऐसा नहीं है कि बीमारी का पता चलते ही मैंने वापस आने का फैसला कर लिया था। पहले तो यह ख्याल भी मेरे मन में नहीं आया था। लेकिन फिर एक दिन जब मैं अस्पताल में थी और काफी उदास महसूस कर रही थी, तब मुझे एक सपना आया।”
“एक सपना?”
मैंने करवट बदलकर मोमोको की ओर देखा। लेकिन अंधेरा इतना घना था कि उसके चेहरे के भाव दिखना असंभव था।
“सपने में मैं एक नाव पर थी जो बंदरगाह से निकलने ही वाली थी। नहीं, असल में, मुझे लगता है कि मैं ही नाव थी। खैर, मैं क्षितिज की ओर चप्पू चला रही थी। मैं दूर तक सब कुछ देख सकती थी। मुझे पक्का पता था कि एक बार वहाँ पहुँच गई तो कभी वापस नहीं आऊँगी। जब मैंने पीछे मुड़कर देखा, तो बंदरगाह

में एक आदमी खड़ा था, जो मुझे हाथ हिला रहा था। एक नज़र में ही मैं समझ गई कि वह सटोरू था। मेरे मन में यह गहरा एहसास था कि हम फिर कभी एक-दूसरे को नहीं देख पाएँगे, इसलिए मैंने पूरी कोशिश की कि उसे भी हाथ हिलाकर जवाब दूँ। लेकिन मेरी नाव बहुत तेज़ थी—जैसे-जैसे मैं सटोरू को पीछे छोड़ती गई, वह छोटा होता गया। देखते ही देखते, वह मेरी नज़रों से ओझल हो गया, और मैं अकेली, समुद्र में बह रही थी। यही सपना था।” मैंने मोमोको को अपनी चादर सरसराते हुए सुना जब वह मेरी ओर मुड़ी। फिर वह एक पल के लिए हँसी।
“यह शर्मनाक है, लेकिन जब मैं अस्पताल में अपने कमरे में उस सपने से जागी, तो मैं रोने लगी, और इतना रोई कि मुझे खुद पर विश्वास नहीं हो रहा था। मतलब, मुझे पता था कि यह सिर्फ एक सपना था। लेकिन आंसू लगातार बहते रहे। आखिर में, मैं फूट-फूटकर रो रही थी। मुझे याद भी नहीं कि इससे पहले मैं आखिरी बार कब रोई थी। मैं इतनी कम रोती हूँ, लेकिन उस दिन मैं पूरी तरह से टूट चुकी थी। मैं बहुत, बहुत दुखी थी। यह असहनीय था। और फिर मुझे एहसास हुआ कि मैं हर हाल में साटोरू से दोबारा मिलना चाहती हूँ। अजीब है ना?”
“मुझे ऐसा नहीं लगता।” जब मैंने यह कल्पना करने की कोशिश की कि उस समय उसे कितना अकेलापन महसूस हुआ होगा, तो मैं बार-बार अपना सिर हिलाती रही। मुझे नहीं लगता कि वह ऐसी किसी स्थिति से गुज़र सकती थी।
“यह वाकई अजीब है,” मोमोको ने कहा। “लेकिन शर्म महसूस होने के बावजूद मैं इसी वजह से वापस आई।”
“तो ये सब हुआ... लेकिन फिर भी आप मेरे चाचा से अपनी बीमारी के बारे में बात करने की योजना नहीं बना रहे हैं?”
“नहीं। ऐसा करने की कोई योजना नहीं है,” उसने स्पष्ट रूप से जवाब दिया। "क्यों नहीं?"
"इस समय मैं उस पर बोझ नहीं बनना चाहता।"
"वह आपकी सोच से कहीं ज्यादा मजबूत है।"
“आप सही कह रहे हैं। बेशक वह इसे संभाल सकता है। मुद्दा यह नहीं है। बात उसकी भावनाओं की है। मैं उसके साथ ऐसा नहीं कर सकता। जो कुछ भी हुआ है उसके बाद यह उचित नहीं होगा।”
“लेकिन अगर तुम उसे बताने की कोशिश नहीं करोगे—” इससे पहले कि मैं कुछ कह पाती, मोमोको ने मुझे बीच में ही रोक दिया, “तुम्हें कभी पता नहीं चलेगा।”

"मैंने उसी क्षण अपना निर्णय ले लिया जब मैंने उससे मिलने आने का फैसला किया।"
“लेकिन…लेकिन…फिर तुमने मुझे बताया।” मुझे एहसास हुआ कि मेरी आवाज तेज होती जा रही थी।
“मुझे लगता है कि आखिरकार मुझे किसी को बताना ही था,” मोमोको ने धीरे से कहा। “मैं बस किसी से अपने दिल की बात कहना चाहती थी... जाने के बारे में... बीमार होने के बारे में। और मुझे पता था कि अगर मैं तुमसे सटोरू को न बताने के लिए कहूँगी, तो तुम मेरा राज़ रखोगे।”
“ये ठीक नहीं है…” मैंने रोते हुए कहा, मेरी आवाज भर्रा गई थी। “ये उचित नहीं है।”
“तुम सही कह रही हो। ये ठीक नहीं है। मुझे माफ़ करना, ताकाको। जब तुमने मुझे नहाते समय गले लगाया, तो मुझे बहुत खुशी हुई। मैं सचमुच बहुत खुश थी। तुम बहुत अच्छी लड़की हो। इसीलिए सटोरू और मैं तुम्हें इतना प्यार करते हैं।”
मैं कंबल में लिपटी हुई रो रही थी और मेरी आँखों से आंसू बह रहे थे। मैं बार-बार यही दोहरा रही थी, "यह ठीक नहीं है... यह ठीक नहीं है।" मोमोको बार-बार माफी मांग रही थी। लेकिन मैं यही वाक्य दर्जनों बार दोहराती रही। और तब तक रोती रही जब तक कि आखिरकार रोते-रोते मेरी नींद नहीं आ गई।

अगली सुबह, बादलों से घिरे आसमान के नीचे, सराय मालिक और हारू ने हमें विदा किया। ठीक वैसे ही जैसे हमारे आने पर हुआ था, मोमोको प्रवेश द्वार पर खड़ी होकर सराय मालिक को औपचारिक रूप से प्रणाम किया। सराय मालिक ने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन मोमोको नहीं रुकी और हंसने लगी। "फिर मिलेंगे!" हारू ने सहजता से कहा और हाथ हिलाकर अलविदा कहा।
मोमोको सुबह फिर से अपने हमेशा की तरह हंसमुख स्वभाव में लौट आई थी। उतरते समय वह बड़े उत्साह से बातें कर रही थी। “देखो, लिली के फूल खिल रहे हैं... वहां पत्तियां भी रंग बदलने लगी हैं।” जब मैंने जवाब दिया, तो मैंने भी यथासंभव खुश रहने की कोशिश की। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि और क्या करूं। उस शाम शिंजुकु स्टेशन पर हम अलग हो गए। चारों ओर उमड़ती भीड़ के बीच, मोमोको टर्नस्टाइल के सामने खड़ी हो गई और मुझे झुककर प्रणाम किया। उसने कहा, "धन्यवाद, ताकाको। मुझे बहुत अच्छा लगा।" उसके चेहरे की मुस्कान बेहद

आकर्षक थी। उसकी ओर देखते हुए, मैंने हिम्मत करके पूछा, "अब तुम क्या करने वाली हो?"
मैं किताबों की दुकान पर वापस जा रहा हूँ।
नहीं, मेरा मतलब वो नहीं है। मेरा मतलब उसके बाद की बात है।
मोमोको ने कहा, “हम्म…” और अपनी बाहें मोड़ लीं। “मैं कुछ न कुछ उपाय निकाल लूंगी।” बस इतना ही कहकर वह तेज़ी से मुड़ी और भीड़ में गायब हो गई।
भीड़ में उसकी छोटी सी आकृति मेरी नज़रों से ओझल हो जाने के बाद भी मैं वहीं खड़ा उसे देखता रहा। मैंने कल्पना करने की कोशिश की कि आगे क्या हो सकता है, लेकिन इससे मेरे मन में जो भावनाएँ उमड़ रही थीं, वे असहनीय थीं।

10

दो दिन बाद, दोपहर से कुछ समय पहले अंकल सटोरू का फोन आया। जब मैंने अपने मोबाइल फोन पर उनका नंबर देखा, तो मैं पहले ही समझ गया था कि क्या हुआ होगा।
“काम पर आपको परेशान करने के लिए क्षमा करें,” जैसे ही मैंने फोन उठाया, उन्होंने धीमी, नीरस आवाज़ में कहा। “जब आप दुकान पर आएंगे तो आपके लिए एक पत्र इंतज़ार कर रहा होगा…”
तो यही हुआ था। मैंने एक लंबी आह भरी। मुझे उसे इस तरह जाने नहीं देना चाहिए था। लेकिन अगर मुझे पता भी होता कि ऐसा होने वाला है, तो मैं आखिर कर क्या सकती थी?
मोमोको ने ईमानदारी से नहीं खेला। मुझे यह पता था। जैसे ही मैंने अपने हाथ में अपना मोबाइल फोन दबाया, मुझे अपने अंदर गुस्सा उमड़ता हुआ महसूस हुआ। “ताकाको?” मैंने इतनी देर तक कुछ नहीं कहा था कि मेरे चाचा ने मुझे पुकारा, उन्हें शक होने लगा था कि मैं अभी भी वहाँ हूँ या नहीं।
मैं अभी आता हूँ।
फोन रखने के बाद मेरे चाचा पूछ रहे थे, "काम का क्या हुआ?"
ये ठीक नहीं है। ये ठीक नहीं है। जिम्बोचो जा रही ट्रेन में मैं बार-बार यही दोहरा रही थी। ये ठीक नहीं है। बड़े लोग ऐसे बर्ताव नहीं करते। मैं उसकी कुछ भावनाओं को समझ सकती थी। पूरे पाँच साल तक गायब रहना और फिर अचानक लौटकर बीमार होने का बहाना बनाना। मैं समझ सकती हूँ कि कोई कुछ कहने में हिचकिचा सकता है। लेकिन अगर वो सच में मेरे चाचा से प्यार करती थी, तो उन्हें बताने का और भी ज़्यादा ज़रूरी था। और अगर वो फिर से उन्हें छोड़कर चली गई, तो मेरे चाचा का क्या होगा? पिछली बार जब वो बिना कुछ कहे चली गई थी, तब भी उनके लिए बहुत मुश्किल हुआ था।
मैं अपने चाचा के पक्ष में थी। ठीक वैसे ही जैसे वो हमेशा मेरे पक्ष में रहे थे। और इसीलिए मैं मोमोको के दोबारा गायब हो जाने को माफ नहीं कर पा रही थी। मेरे अंदर गुस्सा उमड़ता जा रहा था। मैं उसे काबू नहीं कर पा रही थी। मैं बहुत गुस्से में थी। इतना गुस्सा मुझे पहले कभी नहीं आया था। मेरा शरीर कांप रहा था।

जब मैं किताबों की दुकान पर पहुंचा, तो मेरे चाचा ने मुझे वह नोट दिखाया जो उसने मेरे लिए छोड़ा था।
उसमें लिखा था, “धन्यवाद। कृपया अपना ख्याल रखें।”
मैंने उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़ दिया और उन्हें फर्श पर गिरने दिया।
मेरे चाचा मुझे देखकर अचंभित रह गए।
“यह ठीक नहीं है। यह कायरतापूर्ण है। मुझे उस पर विश्वास नहीं हो रहा। उसने मुझे सिर्फ अपना अच्छा पक्ष दिखाया और फिर चली गई। वह बस भाग गई।” “ताकाको?” मेरे चाचा चिंता भरी निगाहों से मेरी ओर देख रहे थे। “उम, ताका

— ”

मैंने अपने चाचा की बात बीच में ही काट दी और सिर ऊंचा करके कमरे में मौजूद सभी लोगों से कहा, "मैं अपना वादा तोड़ रही हूं। असल में, यह कोई वादा था ही नहीं। उसने बस मुझे कुछ न कहने के लिए कहा था।"
“हं?”
जब मैंने मोमोको ने उस रात मुझसे जो कुछ कहा था, उसका संक्षिप्त रूप अपने चाचा को बताया, तो वे अवाक रह गए। मुझे भली-भांति पता था कि यह सब सुनकर उन्हें गहरा सदमा लगेगा, लेकिन उन्हें जानने का पूरा अधिकार था। और मोमोको को रोकने वाला भी कोई नहीं था।
फिर भी मेरे चाचाजी चौंके नहीं। जब मैंने उन्हें सब कुछ बता दिया, तो उन्होंने बस थोड़ा सा सिर हिलाया और कहा, "ठीक है।"
“तुम्हें पता था?”
"बिल्कुल नहीं।"
"परन्तु फिर । । ।"
मेरे चाचा ने गहरी साँस ली और बैठने की कोशिश की, लेकिन लगभग कुर्सी पर गिर ही पड़े। “मुझे पता था कि उसके वापस आने के लिए कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण बात होनी चाहिए थी। जैसा कि मैंने पहले भी कहा था, एक बार वह फैसला कर लेती है, तो अपना मन नहीं बदलती। इसलिए, इसके बावजूद उसका फिर से आना... खैर... इसीलिए मैं ज्यादा सवाल पूछने से डर रहा था। इसीलिए मैंने आपसे पूछा। मैं कितना बेवकूफ हूँ? मैंने कभी उससे सीधे बात नहीं की, और यह नतीजा है,” उन्होंने कहा। उनकी आवाज़ में लग रहा था जैसे उन्होंने पहले ही हार मान ली हो।
मैं उसके पास गया, उसकी आँखों में सीधे देखते हुए कहा, “अभी भी समय है।
लेकिन अगर तुमने उसे अभी जाने दिया, तो तुम उसे फिर कभी नहीं देख पाओगे।

भले ही तुम्हें पता न हो कि आगे क्या होगा, लेकिन तुम उसे जाने नहीं दे सकते। क्या तुम मेरी बात समझ रहे हो? उसे रोकने वाला सिर्फ तुम ही हो।” “ठीक है…” उसने बस इतना ही कहा। उसकी आवाज़ में कोई दृढ़ विश्वास नहीं था। “तो जल्दी करो और चलो!” मैंने ऊँची आवाज़ में कहा। “अंकल, आपको याद है जब आपने मुझसे कहा था कि हर चीज़ से भागना नहीं चाहिए? अगर आप और मोमोको भी ऐसा ही करते हैं तो यह उतना ही बुरा है। मैं दुकान देख लूँगी। आप उसके पास जाइए।”
“लेकिन मुझे नहीं पता कि उसे कहाँ ढूँढूँ…” उसकी आँखों में अब भी वही भाव था मानो वह उसे रोकने में खुद को लाचार महसूस कर रहा हो।
“कुछ याद नहीं आ रहा? कोई ऐसी जगह जहां मोमोको सबसे पहले जाना चाहेगी?” मैंने पूछा।
वह कुछ पल के लिए मेरी ओर देखता रहा, मानो अचंभित हो गया हो।
"नहीं।"
“ऐसा नहीं हो सकता। कहीं न कहीं तो होना ही चाहिए। मोमोको तुम्हारी पत्नी है।”
“यह सच है, लेकिन मैं आपको बता रहा हूँ...”
"ऐसी जगह के बारे में सोचने की कोशिश करें जो उसके लिए खास हो।"
मेरे चाचा काफी देर तक मुझे खाली निगाहों से देखते रहे, फिर अचानक बोले, "ओह! एक जगह तो है। शायद—नहीं, यह वहीं होना चाहिए।"
“तुम्हें मिल गया?” मैंने दोबारा पूछा।
“हाँ। शायद मैं समय पर पहुँच जाऊँगा,” उसने ज़ोर से सिर हिलाते हुए कहा। वह लगभग अपनी कुर्सी से उछल पड़ा। "ताकाको, क्या मैं आपसे एक और मदद मांग सकता हूँ?"
"ज़रूर।"
"मैं आपको घंटों के हिसाब से भुगतान नहीं कर रहा हूँ, है ना?"
“मुझे पता है, बेवकूफ!” मैंने चिल्लाकर कहा। इस बेवकूफी भरी नौटंकी के लिए समय नहीं था। मेरे चाचा आखिरकार दुकान से ऐसे भाग निकले जैसे मैंने उन्हें लात मार दी हो।
मुझे उम्मीद थी कि इस बार वह उसे रोकने में सक्षम होगा।
मैं दुकान के दरवाज़े पर खड़ा होकर अपने चाचा को साकुरा स्ट्रीट पर भागते हुए देख रहा था। दौड़ते-दौड़ते वो छोटे होते जा रहे थे। दुर्भाग्यवश, उनकी

[illegible]

11

जब मैंने वाडा को दोबारा देखा, तब तक सड़क के पेड़ों से उनके आखिरी पत्ते भी झड़ चुके थे।
उस रात, मैं लगभग एक महीने बाद पहली बार सेवूर (Saveur) गया। मुझे कुछ समय से वहाँ जाने का मन नहीं कर रहा था। यहाँ तक कि जब मैं सड़क पर उसके पास से गुज़रता था, तो बस आगे बढ़ जाता था। लेकिन जैसे-जैसे मौसम ठंडा होता गया, मुझे उनकी कॉफ़ी पीने की तीव्र इच्छा होने लगी।
मैंने दरवाजा खोला और कहा, "ओह।"
वाडा पीछे की मेज पर बैठा था। हमारी नज़रें मिलते ही मिल गईं। उसने भी मुझे देख लिया था। मैंने सोचा, मैंने सब गड़बड़ कर दिया, है ना, और बस जल्दी से नमस्ते कहकर जाने की कोशिश की, लेकिन वह संभलकर खड़ा हो गया और मेरे आने का इंतज़ार करने लगा।
"आपको देखकर अच्छा लगा," मैंने थोड़ा घबराते हुए कहा, क्योंकि मैं उनके सामने बैठ गई थी।
"काफी समय हो गया है," उसने अपने हमेशा के शांत लहजे में जवाब दिया। वेट्रेस पानी लेकर आई और पूछा, "क्या आप ऑर्डर देने के लिए तैयार हैं?"
उस समय मैं सोच रहा था कि मैं बस हाय बोलकर, सीट बदलकर अपनी कॉफी ऑर्डर कर लूँगा। इसलिए मैंने कहा, "अभी नहीं।" उसने सिर हिलाया और मुस्कुराते हुए चली गई।
कुछ देर बाद वाडा ने पूछा, "आप कैसे हैं?"
“उम, ठीक है, मुझे लगता है? और आप?” मैंने जवाब दिया।
“ठीक-ठाक,” उसने खुशी से कहा और अपनी कॉफी की एक घूंट ली।
क्या वह अब भी अपनी पूर्व प्रेमिका के आने का इंतज़ार कर रहा था? लेकिन उसने खुद मुझसे कहा था कि उसका उससे कोई वास्ता नहीं है। जैसे ही यह ख्याल मेरे मन में आया, वाडा ने अचानक कहा, "मैं तुम्हारा ही इंतज़ार कर रहा था।" फिर उसने अपने बैग में हाथ डाला और एक किताब निकाली। मुझे एहसास हुआ कि यह वही सानेत्सु मुशानोकोजी की किताब थी जिसे मैं अपनी यात्रा से पहले वाली रात को पीछे छोड़ आया था, 'मित्रता'। इतनी सारी बातें हो चुकी थीं कि मैं किताब के बारे में पूरी तरह भूल ही गया था।
मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि वाडा के पास यह होगा।

"क्या आपने इसे इतने समय तक मेरे लिए संभाल कर रखा था?" मैंने उससे पूछा जब उसने मुझे किताब सौंप दी।
“उस रात आपके जाने के बाद मैंने वह किताब देखी। मैंने दुकानदार से पूछा कि क्या वह अगली बार आपके आने पर आपको वह किताब दे देगा, लेकिन उसने कहा कि वह आपको नहीं जानता। उसने दावा किया कि उसने आपको पहले कभी नहीं देखा था।” ऐसा हो ही नहीं सकता था कि मालिक मुझे न जानता हो। हम दर्जनों बार एक-दूसरे से मिल चुके थे। मैं तो वहां के नियमित ग्राहकों में से एक था।
“इसी वजह से किताब मेरे पास रह गई। आपसे संपर्क करने का कोई ज़रिया नहीं था, इसलिए मैं बीच-बीच में आपसे मिलने आती रहती थी। लेकिन शायद मेरा समय सही नहीं था, क्योंकि आपसे कभी मुलाक़ात नहीं हुई। मुझे बुरा लगा, लेकिन इंतज़ार करते-करते बोरियत होने लगी, इसलिए मैंने आपकी पूरी किताब पढ़ डाली।”
मैं ये सब सुनता रहा, मुँह खुला रह गया। फिर मैंने काउंटर पर मालिक को खड़ा देखा, और तब जाकर मुझे समझ आया कि क्या हुआ था। वो गिलास चमका रहा था, मानो मुझे पहचान ही न रहा हो। मैंने उसे तब तक गौर से देखा जब तक हमारी नज़रें एक पल के लिए नहीं मिलीं। खैर, ये तो बेवकूफी थी। शायद उसे पता ही नहीं था कि वाडा किसी और का इंतज़ार कर रही थी। बेवजह ही इतना परेशान हो गया था। मैंने कहा, "मुझे इन सब बातों के लिए बहुत खेद है," और वाडा के सामने झुककर प्रणाम किया।
“नहीं, सच कहूँ तो, मुझे ‘अप द हिल’ के अलावा कोई और किताब पढ़ने का अच्छा मौका मिला। मुझे तो आपका शुक्रिया अदा करना चाहिए,” उन्होंने खिलखिलाती हंसी के साथ कहा।
इस अप्रत्याशित मोड़ के बाद, मुझे लगा कि मैं अब और संयम नहीं रख सकती। मैंने नीचे देखा और महसूस किया कि मेरे कंधे कांपने लगे हैं।
“क्या तुम ठीक हो?” वाडा ने चिंता भरी नज़रों से मेरी तरफ देखा। लेकिन जब उसे एहसास हुआ कि मैं बस हंस रही हूँ, तो वह भी हंसने लगा। धीरे-धीरे हम एक-दूसरे के साथ सहज महसूस करने लगे। मुझे एहसास हुआ कि मैं दिल से उसे दोबारा देखकर सचमुच बहुत खुश थी। यह सच है। उसे देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह मेरे बारे में क्या सोचता है। इस बारे में चिंता करना बेकार था। मैं इस बात को बदल नहीं सकती थी।
“उम,” मैंने दोबारा उसकी ओर देखते हुए कहा, “आपको देखकर मुझे खुशी हुई।”

मैं मालिक को धन्यवाद दिए बिना नहीं जा सका। मुझे यह बात दिल से महसूस हुई। उनकी मदद के बिना, शायद मैं वाडा को दोबारा कभी नहीं देख पाता। चाहे मैं सौ कप कॉफी भी ऑर्डर कर दूं, मैं उनका ऋणी रहूंगा।
“मुझे भी तुम्हें देखकर खुशी हुई,” उसने कहा। “मतलब, अगर मैं नहीं आता तो चोरी का दोषी होता, तो ये बात भी है। नहीं, ये झूठ है। मैं तुमसे दोबारा बात करना चाहता था।” वो हँसा और शर्म से अपने सिर के पीछे खुजलाने लगा। मैं इतनी शर्मिंदा थी कि उसकी तरफ देख भी नहीं पा रही थी। इसके बजाय, मैंने खिड़की से बाहर देखा और हम दोनों का प्रतिबिंब आमने-सामने दिखाई दिया। बाहर तेज़ सर्द हवा चल रही थी और बहुत ठंड लग रही थी। मैं बहुत शुक्रगुजार थी कि हम दोनों को दोबारा मिलने का मौका मिला।
“अच्छा, तो चलिए,” वाडा ने खुशी से अंगड़ाई लेते हुए कहा। “किताब उधार देने के लिए धन्यवाद के तौर पर आज मैं बिल चुका देता हूँ। आपको कोई आपत्ति तो नहीं होगी?”
मैंने उंगली उठाकर मुस्कुराते हुए कहा, "ठीक है, शायद सिर्फ एक कप ही काफी होगा।"
"अभी भी विनम्रता दिखा रहे हो?" उसने एक पल के लिए हैरानी जताने का नाटक किया, फिर पास से गुजर रही हमारी वेट्रेस की ओर मुड़ा और उसे अपने पास आने का इशारा किया।

12

मोरिसाकी बुकशॉप पुरानी किताबों की दुकानों से भरी एक गली के कोने पर अकेली खड़ी है। यह छोटी और पुरानी है, और देखने में कुछ खास नहीं है। यहाँ ज़्यादा ग्राहक नहीं आते। और क्योंकि यहाँ किताबों का संग्रह सीमित है, इसलिए जो लोग इसकी खासियत में रुचि नहीं रखते, वे इस पर नज़र भी नहीं डालते।
लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें यह दुकान बहुत पसंद है। और जब तक वे इसके प्रति समर्पित हैं, तब तक यही काफी है। मेरे चाचा सटोरू, जो दुकान के मालिक हैं, हमेशा मुस्कुराते हुए यही कहते हैं। और मैं उनसे सहमत हूँ। क्योंकि मुझे यह किताबों की दुकान और इसके मालिक दोनों से प्यार है।
आज मेरी छुट्टी है और मैं बहुत दिनों बाद जिम्बोचो घूमने जा रहा हूँ। मेरे चाचा ने पिछले हफ्ते मुझे फोन किया था। फोन पर उनकी आवाज़ में जो उत्साह था, उससे मुझे बिना बताए ही समझ आ गया था कि कुछ हुआ है।
“उसने कहा कि वह भी तुमसे मिलना चाहती है। बहुत समय हो गया है,” उसने कहा। उसकी हालत में सुधार हो रहा था और फिलहाल सब ठीक लग रहा था। यह सुनकर राहत मिली, कम से कम कुछ समय के लिए तो। और इतने लंबे समय बाद उन दोनों को देखने की उम्मीद ने मुझे व्यस्त सड़क पर थोड़ा और तेज़ी से चलने पर मजबूर कर दिया।
उस दिन मेरे चाचा मोमोको के पीछे दौड़े, लेकिन वह किताबों की दुकान पर वापस नहीं आई। लेकिन मेरे चाचा उसे ढूंढने में कामयाब रहे। वे उस मंदिर में गए जहाँ उनके मृत शिशु की याद में प्रार्थना सभा हुई थी। उन्होंने बताया कि जब उन्होंने मोमोको को पाया, तो ऐसा लग रहा था कि वह मंदिर के पीछे झरने के पास काफी देर से खड़ी थी। मैंने हिम्मत नहीं की कि उनसे पूछूँ कि उन्होंने आपस में क्या कहा। यह उन दोनों के बीच की बात है। लेकिन जिस जगह उनका बच्चा सो रहा था, वहाँ वे एक-दूसरे से झूठ नहीं बोल सकते थे। उनके लिए शायद सबसे ज़रूरी यही था कि वे दोनों अपने दिल की बात खुलकर कहें। हो सकता है कि कहीं न कहीं उसके दिल में यह इच्छा रही हो कि काश मेरे चाचा वहाँ आकर उसे उसी जगह पाते जहाँ से वह पाँच साल पहले उन्हें छोड़कर गई थी। “जब उसने मुझे आते देखा, तो वह वहीं गिर पड़ी। वह एक छोटे बच्चे की तरह रोने लगी और बिलखने लगी। उस पल, मैंने उसे दिल से प्यार किया। मेरी आँखों से आँसू बह रहे थे।

मुझे लगा जैसे मैं आखिरकार उन सभी चीजों का सामना करने में सक्षम हो गया हूँ जिन्हें मैंने पहले अनदेखा किया था, उन सभी चीजों से जिनसे मैंने मुंह मोड़ लिया था। मैंने मोमोको को अपनी बाहों में लिया और बार-बार कहा, ‘मत जाओ’। ‘मुझे तुम्हारी ज़रूरत है’। उसे वहाँ देखने से पहले मैं इतनी सरल बात भी नहीं कह सकता था।”
उस रात जब वह अकेले दुकान पर लौटा, तो उसने मुझे सारी बात बताई। उसके साथ न होने से उदास होने के बजाय, वह काफी खुश लग रहा था। अंत में उसने कहा, "उसने वादा किया है। हम दोनों आपस में बात करेंगे और फिर एक दिन वह वापस आ जाएगी। उसने मुझसे वादा किया है।"
फिर, पूरे एक साल बाद, मोमोको लौटी। उसने कहा कि उसे पहले अपने विचारों को व्यवस्थित करने की ज़रूरत थी, वरना यह उसके साथ अन्याय होता। उसने मुझे बताया कि विदाई के समय उसने यही कहा था। वह पहले की तरह ही दृढ़ निश्चयी थी।

व्यस्त सड़क पार करने के बाद, मैं सकुरा स्ट्रीट की ओर मुड़ी। इस संकरी गली में, मुझे पुरानी किताबों की दुकानों की एक कतार दिखाई दी, और फिर मेरे चाचा की दुकान मेरे ठीक सामने नज़र आ गई। जैसे ही मैंने दरवाज़ा खोला, उसमें से खटखट की आवाज़ आई और मैंने देखा कि साबू काउंटर पर लोगों से बातचीत कर रहा है। "हे, ताकाको," उसने कहा और मुझे अपने पास बुलाया।
“अरे, साबू, तुम यहाँ हो? मेरे चाचा कहाँ हैं?”
“मुझे आपसे ऐसी गर्मजोशी भरी प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं थी,” वह हंसते हुए बोला। “वह अभी-अभी डिलीवरी के लिए निकला है।”
मुझे उसके पीछे से एक हंसमुख आवाज सुनाई दी। चारों ओर देखने पर मुझे काउंटर के पीछे छोटे बालों वाली एक छोटी महिला बैठी हुई दिखाई दी।
मैंने कहा, "तुम्हारे बालों को क्या हुआ?"
मोमोको ने अपना हाथ उठाया और कान के ऊपर कटे हुए छोटे बालों को छुआ। "ओह, मैंने ही कटवाए थे। सच कहूँ तो, जब मैंने पहली बार इसके बारे में सोचा था, तो मैं एकदम छोटे बाल कटवाना चाहती थी, लेकिन सटोरू ने मुझे रोक दिया।" वह ज़ोर से हंस पड़ी।
“ये तुम पर बहुत अच्छा लग रहा है,” मैंने कहा और उसके बगल में बैठ गई। वाकई, ये उस पर बहुत अच्छा लग रहा था।

“क्या तुम्हें ऐसा लगता है?” वह भौंहें चढ़ाकर पूछती है।
दोपहर के भोजन के समय दुकान में हमेशा की तरह काफी कम भीड़ रहती है। मोमोको के वहाँ होने के अलावा और कुछ खास नहीं बदला है। और इससे मुझे थोड़ी सी खुशी होती है।
“वैसे, ताकाको, तुम्हारे बॉयफ्रेंड होने की बात क्या है?” मोमोको ने अपने हमेशा के रूखे अंदाज में पूछा।
“क्या? तुमने यह किससे सुना?”
वह साबू की ओर उंगली उठाते हुए कहती है, "अभी-अभी, उसी ने ऐसा किया।"
“नहीं, मैंने यह सेवूर के मालिक से सुना था,” वह कहता है और फिर से हंसने लगता है जैसे कि कोई बात मजेदार हो।
"क्या तुम उसे वो व्यंजन बनाकर खिला रही हो जो मैंने तुम्हें सिखाए थे?" मोमोको मुस्कुराते हुए पूछती है।
“नहीं—मेरा मतलब है, हाँ, लेकिन नहीं…” मैं हकलाता हूँ।
इससे मोमोको संतुष्ट नहीं होती। वह मुझसे तब तक पूछताछ करती रहती है जब तक मैं रोते हुए यह न कह दूं, "बस करो, क्या इतना काफी नहीं है?"
उसी क्षण मुझे दरवाजा खुलने की आवाज सुनाई दी। मेरे चाचा वापस आ गए हैं। "ओह, ताकाको, तुम जल्दी आ गई हो," वह कहता है।
जैसे ही वह अंदर आता है, मोमोको कहती है, "हे सटोरू, क्या तुम्हें पता है कि ताकाको का एक बॉयफ्रेंड है?"
“क्या? मैंने तो कुछ सुना ही नहीं। क्या यह सच है? तुमने मुझे क्यों नहीं बताया?” वह मेरे पास आकर मेरी आँखों में देखता है। “तुम्हें पता है ना कि तुम मुझसे इस बारे में बात कर सकती हो?”
“बिल्कुल सही,” मोमोको ने ताली बजाते हुए कहा। “और अगर ताकाको उससे शादी कर लेती है, तो वह दुकान संभाल सकता है। आखिर हमें एक उत्तराधिकारी तो ढूंढना ही है।”
न जाने क्यों, यह सोचकर मेरे चाचा आपा खो बैठते हैं। “यह कोई मज़ाक की बात नहीं है,” वे चिल्लाते हैं। “मैं उस आदमी को ज़िम्मेदारी क्यों संभालने दूँ?”
"अगर तुम उससे अभी तक मिली ही नहीं हो, तो तुम्हें कैसे पता कि वह कौन है?" मोमोको ने ठंडे लहजे में कहा।

साबु खिलखिलाकर हंसता है। “अच्छा, शायद अब मुझे घर जाना चाहिए,” वह कहता है। “जल्द मिलते हैं, मोमोको।” वह उसे हाथ हिलाकर विदा करता है और काफी खुशमिजाज मूड में दुकान से निकल जाता है। वह मेरे चाचा या मुझे अलविदा नहीं कहता।
साबू के चले जाने के बाद, मैं कहती हूँ, "तुम्हें उसे अपने वश में करने में ज़्यादा समय नहीं लगा, है ना?" मैं हैरान रह जाती हूँ।
“अरे, मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था। मैंने बस उससे बात की थी,” मोमोको ने बेपरवाही से कहा।
“ये दोनों तो शुरू से ही एक-दूसरे से लड़ रहे थे। मतलब, ज़ाहिर है, उसने उसे जीत लिया। साबू के पास तो कोई मौका ही नहीं था।” मेरे चाचा ने ये बात इतनी सहजता से कही कि मोमोको और मैं ज़ोर से हंस पड़े।
फिर अचानक मोमोको खड़ी हो जाती है और मेरी ओर मुड़ जाती है।
“मोमोको मोरिसाकी घर लौट आई हैं और ड्यूटी पर रिपोर्ट कर रही हैं।” वह फुर्ती से सैन्य सलामी देती हैं।
मैं झटपट सीधा खड़ा हो जाता हूँ।
“घर में आपका स्वागत है,” मैं कहती हूँ। “हम आपका इंतज़ार कर रहे थे। और अगर आप फिर से गायब हो गए, तो मैं सचमुच आपसे नाराज़ हो जाऊँगी।”
“तुमने ही अपना वादा तोड़ा है। सच कहूँ तो, तुमने जो किया उसके लिए मैं शुक्रगुजार हूँ। धन्यवाद, ताकाको। चलो फिर से दोस्त बन जाते हैं,” वह कहती है और फिर मेरे गाल पर चुटकी काटते हुए हंसती है। अब तक मुझे इसकी इतनी आदत हो चुकी है कि अपने चाचा की तरह मैं भी चिल्लाकर कहती हूँ, “बस करो!” लेकिन मैं पहले से ही हार मानने लगी हूँ।
“शायद आज रात मुझे ताकाको के लिए कुछ खास खाना बनाना चाहिए ताकि मैं अपना आभार व्यक्त कर सकूं।” मोमोको गर्व से अपनी छाती थपथपाती है। “क्या तुम मेरे साथ खरीदारी करने चलोगी?”
"बेशक, आपके खाना पकाने का हुनर ही मेरे यहां आने का असली कारण है," मैं मुस्कुराते हुए कहती हूं।
“ताकाको, जाने से पहले,” मेरे चाचा ने बीच में टोकते हुए कहा, “मैं उस बारे में सोच रहा था जिसके बारे में हम पहले बात कर रहे थे…”
हम उसे नजरअंदाज करते हैं और सामने के दरवाजे से बाहर निकल जाते हैं।

बाहर आसमान एकदम साफ है। कुछ बड़े-बड़े बादल ऊपर धीरे-धीरे तैर रहे हैं।
मैं अपनी बाहें ऊपर उठाता हूँ और एक पल के लिए आँखें बंद कर लेता हूँ। मुझे अपनी पलकों पर गर्म धूप की किरणें महसूस हो रही हैं।
"अरे, अगर तुम जल्दी नहीं करोगे तो मैं तुम्हें पीछे छोड़ दूंगा।"
उसकी आवाज सुनकर मैंने अपनी आंखें खोलीं।
सड़क पर आगे बढ़ते हुए, मोमोको मेरी तरफ मुड़कर देखती है। सूरज की किरणें उसके नए छोटे बालों पर चमकती हैं और वह मुस्कुराती है।
“चलो, चलो,” वह मुझे हाथ हिलाते हुए कहती है। और फिर वह तेजी से आगे बढ़ जाती है।
एक पल के लिए, मैं उसके पीछे से उसे जाते हुए देखता हूँ। फिर मैं उसके पीछे- पीछे सड़क पर दौड़ पड़ता हूँ।

अनुवादक का नोट
जब सातोशी यागिसावा का उपन्यास जापान में प्रकाशित हुआ, तो इसे चियोडा पुरस्कार मिला, जिसका नाम टोक्यो के लोकप्रिय जिम्बोचो इलाके के नाम पर रखा गया है, जहाँ किताबों की दुकानें हैं। कहानी के दौरान, लेखक पढ़ने के अनेक सुखों का वर्णन करते हैं: किसी नए लेखक को खोजने की खुशी; देर रात तक जागकर किताब खत्म करने का आनंद; किसी के पसंदीदा उपन्यास को पढ़कर उसे जानने का रोमांच; और किताबों की दुकान में जाकर किताबों के शीर्षकों को देखने की आजादी, यह उम्मीद करते हुए कि कोई किताब आपकी नज़र में आ जाए।
इन पन्नों में उल्लिखित सभी पुस्तकों को खोजने का प्रयास करने वाले किसी भी पाठक को शायद सब कुछ न मिले, लेकिन यह स्वाभाविक है, खासकर मोरिसाकी बुकशॉप जैसी छोटी-मोटी पुरानी किताबों की दुकानों में। जहाँ तक मुझे पता है, साइसेई मुरो की पुस्तक 'अंटिल द डेथ ऑफ द गर्ल', जिसने अध्याय 4 में ताकाको के पढ़ने के शौक को जगाया, का अभी तक अंग्रेजी में अनुवाद नहीं हुआ है। लेकिन ओसामु दाज़ाई की पुस्तक 'स्कूलगर्ल', जिसने उसकी सहेली तोमो के लिए भी यही भूमिका निभाई, एलिसन मार्किन पॉवेल के हालिया अनुवाद में उपलब्ध है। जुन'इचिरो तानिज़ाकी, रयुनोसुके अकुतागावा और सोसेकी नात्सुमे की प्रसिद्ध पुस्तकों, विशेष रूप से जापानी साहित्य के सबसे प्रिय उपन्यासों में से एक 'कोकोरो' के अंग्रेजी संस्करण ढूंढना मुश्किल नहीं होना चाहिए। ताकाको द्वारा खोजे गए कई अन्य लेखकों की कहानियाँ जापानी लघु कथाओं के प्रमुख संकलनों में मिल सकती हैं, जिनमें से प्रत्येक अपने आप में एक पुस्तक-पुस्तकालय के समान है।
इस अनुवाद का श्रेय कई लोगों को जाता है, विशेष रूप से इसकी प्रख्यात संपादक सारा नेल्सन और सेत्सुको और साइमन विनचेस्टर को, जिनके बिना मैं सारा से कभी नहीं मिल पाता। मैं अपने माता-पिता के बिना इसे पूरा नहीं कर पाता: मेरे पिता युइची, जिन्होंने मेरे हर प्रश्न का उत्तर दिया, और मेरी माता सुज़ैन, जिन्होंने मुझे पढ़ने का आनंद सिखाया। मेरे पूरे परिवार, विशेष रूप से मेरे बहनोई ब्रूनो नवास्की और मेरी बहन मेलिसा, जिन्होंने कई मसौदे पढ़े, और मेरे मित्रों हिरोको ताबुची, जुनको सुज़ुकी और अयाका कामेई, जिन्होंने धैर्यपूर्वक अपने सुझाव दिए, के योगदान से इस पाठ में बहुत सुधार हुआ। मैं अपनी पत्नी निकोल को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ,

□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□

[illegible] [illegible] '[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]' [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] '[illegible] [illegible]-[illegible]-[illegible] [illegible]' [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

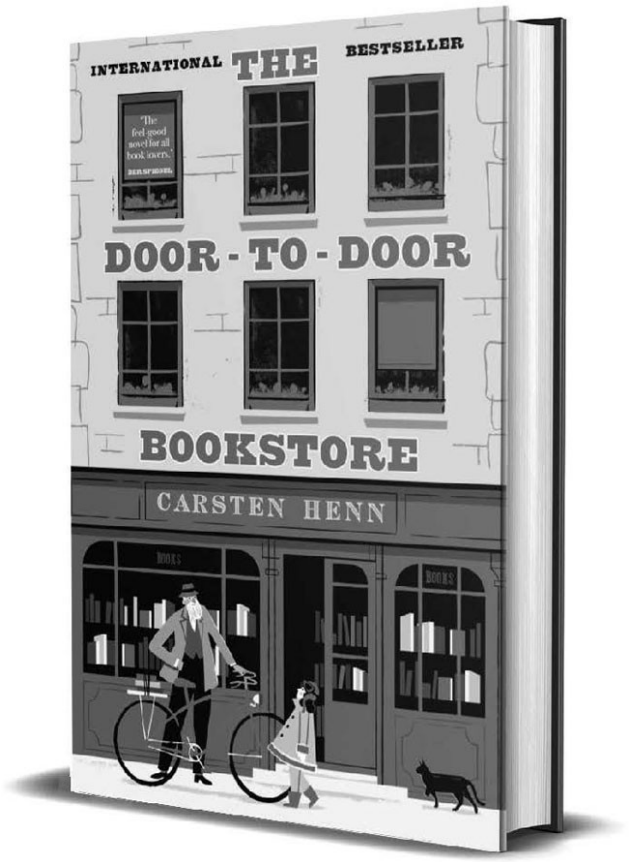
INTERNATIONAL
THE
BESTSELLER
DOOR - TO - DOOR
BOOKSTORE
CARSTEN HENN

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 72 [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

हर मौसम का आदमी

कहते हैं कि किताबें अपने पाठक खुद ढूंढ लेती हैं—पर कभी-कभी उन्हें रास्ता दिखाने वाले की ज़रूरत पड़ती है। इसका जीता-जागता सबूत दक्षिणी जर्मनी की एक किताबों की दुकान में मिलता है, जिसका नाम 'सिटी गेट' था। हालांकि, यह नाम थोड़ा अटपटा था, क्योंकि असली शहर का द्वार—या कम से कम उसका जो भी हिस्सा बचा था, जिसे स्थानीय लोग भी अक्सर कला का कोई नमूना समझ लेते थे—वहां से तीन गलियां दूर था।
यह एक बहुत पुरानी किताबों की दुकान थी, जिसका निर्माण और विस्तार कई ऐतिहासिक कालों में बार-बार किया गया था। भव्य वास्तुशिल्प और प्लास्टर की कारीगरी सादे समकोण के साथ-साथ दिखाई देती थी। पुराने और नए, भव्य और संयमित का शानदार मेल, जो इमारत के बाहरी हिस्से की विशेषता थी, उसके अंदरूनी हिस्से में भी जारी रहा। सीडी और डीवीडी के लाल प्लास्टिक स्टैंड, फ्रॉस्टेड धातु की अलमारियों में रखी मंगा कॉमिक्स के बगल में थे; ये फिर पॉलिश किए हुए कांच के केस में रखे ग्लोब या किताबों की सुंदर लकड़ी की अलमारियों के बगल में रखे थे। ग्राहकों को बोर्ड गेम, स्टेशनरी, चाय और यहां तक कि चॉकलेट (हाल ही में जोड़ा गया) भी बिक्री के लिए मिल सकती थी। भूलभुलैया जैसे इस कमरे में एक भारी, गहरे रंग का काउंटर था जिसे कर्मचारी बस 'वेदी' कहते थे। यह बारोक काल के अवशेष जैसा दिखता था: सामने की नक्काशी में एक ग्रामीण दृश्य दर्शाया गया था जिसमें शानदार घोड़ों पर सवार शिकारियों का एक दल, उनके साथ फुर्तीले कुत्तों का एक झुंड, जंगली सूअरों के एक समूह का पीछा कर रहा था।
गर्मी के मौसम के एक सुहावने दिन, दुकान के अंदर वही सवाल पूछा जा रहा था जो हर किताब की दुकान का मूल उद्देश्य होता है: "क्या आप कोई अच्छी किताब सुझा सकते हैं?" सवाल पूछने वाली उर्सल शेफर को अच्छी तरह पता था कि एक अच्छी किताब में क्या खूबियां होनी चाहिए। पहली बात, वह इतनी दिलचस्प होनी चाहिए कि उन्हें नींद आने तक बिस्तर पर जागते रहने पर भी पढ़ने के लिए मजबूर कर दे। दूसरी बात, उसमें कम से कम तीन, और बेहतर होगा कि चार ऐसे मोड़ हों जहां उनकी आंखों में आंसू आ जाएं। तीसरी बात, उसमें कम से कम तीन सौ पन्ने हों, लेकिन तीन सौ अस्सी से ज्यादा नहीं, और चौथी बात, उसका आवरण हरा

नहीं होना चाहिए। हरे आवरण वाली किताबों पर भरोसा नहीं किया जा सकता था— कई बार कड़वे अनुभव ने उन्हें यही सिखाया था।
“बिल्कुल,” सबीन ग्रुबर ने जवाब दिया, जो पिछले तीन वर्षों से सिटी गेट में मैनेजर थीं। “आपको किस तरह की किताबें पढ़ना पसंद है?”
उर्सल शेफर कुछ कहना नहीं चाहती थीं। वह चाहती थीं कि सबीन ग्रुबर को पता चले; आखिरकार, एक पुस्तक विक्रेता होने के नाते, उनमें स्वाभाविक रूप से कुछ हद तक भविष्य देखने की क्षमता तो अवश्य ही थी।
“मुझे तीन कीवर्ड दीजिए, और मैं आपके लिए एकदम सही कीवर्ड ढूंढ लूंगा। रोमांस? ग्रामीण? आरामदायक? हाँ?”
“मुझे आश्चर्य हो रहा है—क्या श्री कोल्होफ यहाँ हैं?” उर्सल शेफर ने बेचैन स्वर में पूछा। “उन्हें हमेशा पता होता है कि मुझे क्या पसंद है। उन्हें पता है कि सबको क्या पसंद है।”
“नहीं, मुझे खेद है कि वह आज यहां नहीं हैं। श्री कोल्होफ अब हमारे लिए कभी- कभार ही काम करते हैं।”
"कितनी शर्म की बात है।"
“कोई बात नहीं, मेरे पास तुम्हारे लिए कुछ है। कॉर्नवाल में बसी एक पारिवारिक गाथा। देखो, कवर आर्ट में परिवार की आलीशान हवेली और उसके मैदान दिखाए गए हैं।”
“यह हरा है।” उर्सल शेफर ने सबाइन ग्रुबर को तिरस्कार भरी निगाहों से देखा। “चमकीला हरा!”
“ऐसा इसलिए है क्योंकि कहानी अर्ल ऑफ डर्नबोरो की भव्य जागीर पर आधारित है। इसे बहुत अच्छी समीक्षाएँ मिली हैं!”
भारी सामने का दरवाज़ा बड़े झटके से खुला, और उसके ऊपर लगी छोटी तांबे की घंटी ज़ोर से बज उठी। कार्ल कोल्होफ़ ने अपना छाता मोड़ा, उसे हमेशा की तरह झटका दिया और स्टैंड में रख दिया। उसकी निगाहें उस किताबों की दुकान पर टिकी थीं जिसे वह अपना घर कहता था, और वह अपने ग्राहकों से परिचय कराने के लिए आने वाली नई साहित्यिक कृतियों की तलाश में था। वह हमेशा खुद को एक ऐसे समुद्री यात्री से तुलना करता था जिसे रेत में छिपे खजाने को खोजने के लिए बस एक नज़र ही काफी होती थी। लेकिन जैसे ही उसकी नज़र उर्सल शेफ़र पर पड़ी, खजाने की सारी बातें पल भर में भूल गईं। उसने उसे एक प्यारी सी मुस्कान दी, मानो वह उन सभी आकर्षक पुरुषों का मिश्रण हो जिनसे उसे सालों से उसकी

सिफारिश की गई किताबों के पन्नों में प्यार हो गया था। असल में, कार्ल उन किरदारों में से किसी से भी मिलता-जुलता नहीं था। कभी उसका पेट थोड़ा निकला हुआ था, लेकिन सालों बीतने के साथ वह कम हो गया था, ठीक वैसे ही जैसे उसके सिर के बाल, मानो दोनों ने एक साथ गायब होने का समझौता कर लिया हो। अब बहत्तर वर्ष की आयु में, वह दुबले-पतले थे, लेकिन अपने पुराने, अब ढीले पड़ चुके कपड़े पहनना जारी रखते थे। उनके पूर्व बॉस, सबीन के पिता ने उनसे कहा था कि वह ऐसे दिखने लगे हैं मानो उनका पोषण का एकमात्र स्रोत उनकी किताबों के शब्द हों, जिनमें कार्बोहाइड्रेट बहुत कम होते हैं। "लेकिन सार से भरपूर," कार्ल हमेशा जवाब देते थे।
कार्ल मोटे काले चमड़े के मज़बूत, भारी जूते पहनता था जिनके तलवे इतने ठोस थे कि जीवन भर चल सकें। उसके अनुसार, अच्छे मोज़े भी ज़रूरी थे। इन जूतों के साथ वह जैतून के हरे रंग का ओवरऑल और उसी रंग की कॉलर वाली जैकेट पहनता था।
अपने सिर पर वह एक संकरी किनारी वाली मछुआरे की टोपी पहनता था, ताकि बारिश और तेज धूप से उसकी आँखें सुरक्षित रहें। वह इसे कभी नहीं उतारता था, यहाँ तक कि घर के अंदर भी नहीं, सिवाय सोने के समय के। पता नहीं क्यों, इसके बिना उसे अधूरा सा लगता था। और उसे कभी भी अपने चश्मे के बिना नहीं देखा गया, जिसका फ्रेम उसने दशकों पहले एक पुरानी दुकान से खरीदा था। उसके पीछे उसकी पैनी नज़रें थीं, जिन पर कम रोशनी में लंबे समय तक पढ़ने के निशान साफ दिखते थे।
“श्रीमती शेफ़र, आपको देखकर बहुत अच्छा लगा,” उन्होंने कहा और उर्सल शेफ़र की ओर कदम बढ़ाते हुए आगे बढ़े, ठीक उसी समय उर्सल शेफ़र भी उनकी ओर बढ़ीं और सबाइन ग्रुबर से दूर हट गईं। “क्या मैं आपको एक ऐसी किताब सुझा सकता हूँ जो सोने से पहले पढ़ने के लिए आदर्श हो?”
मुझे पिछला दृश्य बहुत पसंद आया, खासकर जब अंत में उन्होंने एक-दूसरे की आँखों में देखा। एक चुंबन और भी बेहतर होता, जिससे बात पक्की हो जाती, लेकिन इस बार मैं उनकी एक-दूसरे की आँखों में देखने से ही संतुष्ट हूँ। "यह एक चुंबन से भी कहीं अधिक तीव्र था, क्या आपको ऐसा नहीं लगता? कुछ निगाहें बहुत तीव्र हो सकती हैं।"
"जब मैं किस कर रही हूँ तब नहीं!" एक पल के लिए, उर्सल शेफर को बेहद शरारती महसूस हुआ—जो आजकल उनके लिए एक दुर्लभ घटना है।

“यह किताब,” कार्ल ने कैश काउंटर के बगल में रखे ढेर में से एक किताब उठाते हुए कहा, “पैक खोलने के क्षण से ही आपका इंतजार कर रही है। प्रोवेंस में रची गई यह कहानी, और इसका हर शब्द लैवेंडर की खुशबू से महकता है।”
“ओह, बोर्डो-लाल रंग की किताबें सबसे अच्छी होती हैं! क्या इसका अंत चुंबन के साथ होता है?”
"क्या मैंने कभी किसी कहानी का अंत बता दिया है?"
“नहीं!” उसने मुंह बनाया, लेकिन उसके हाथ से किताब ले ली।
कार्ल सपने में भी उर्सल शेफर को बिना सुखद अंत वाले उपन्यास की सिफारिश करने के बारे में नहीं सोचेगा, लेकिन वह किसी भी कीमत पर उर्सल शेफर को यह जानने के रोमांच से वंचित नहीं करेगा कि क्या यह उपन्यास अलग होगा।
“मुझे बहुत खुशी है कि दुनिया में किताबें हैं,” उसने कहा। “मैं उम्मीद करती हूँ कि यह एक ऐसी चीज है जो कभी नहीं बदलेगी! बहुत सी चीजें बदलती हैं, और बहुत तेजी से। अब हर कोई प्लास्टिक कार्ड से भुगतान करता है। जब भी मैं कैश काउंटर पर सही छुट्टा गिनकर देती हूँ, लोग मुझे अजीब नजरों से देखते हैं!”
"लिखित शब्द सदा कायम रहेगा, सुश्री शेफ़र; कभी-कभी अभिव्यक्ति का इससे बेहतर कोई माध्यम नहीं होता। मुद्रित सामग्री विचारों और कहानियों को संरक्षित करने का सबसे अच्छा माध्यम है; यह उन्हें सदियों तक ताजा रखती है।"
विदाई की एक प्यारी सी मुस्कान के साथ, कार्ल कोल्होफ़ विज्ञापन पोस्टरों से ढके एक दरवाजे से होते हुए उस कमरे में दाखिल हुए जो किताबों की दुकान के भंडारगृह और कार्यालय दोनों का काम करता था। अंदर किताबों के ढेर के नीचे मुश्किल से दिखाई देने वाली एक मेज और पीले पोस्ट-इट नोट्स से घिरे एक पुराने कंप्यूटर मॉनिटर की कतार थी। दीवार पर लाल पेन से रंगा एक विशाल कैलेंडर लगा हुआ था।
हमेशा की तरह, किताबों के ऑर्डर कमरे के सबसे अंधेरे कोने में एक काले प्लास्टिक के डिब्बे में रखे रहते थे। पहले वे डेस्क पर रखे होते थे, लेकिन जब से सबीन ने अपने पिता से किताबों की दुकान संभाली थी, डिब्बा हर दिन थोड़ा-थोड़ा खिसककर सबसे कम पहुंच वाले कोने की ओर चला जाता था। इसके खिसकने के साथ-साथ डिब्बे में रखी किताबें भी धीरे-धीरे कम होती जा रही

थीं। आजकल बहुत कम लोगों को किताबों की डिलीवरी की ज़रूरत पड़ती थी, और हर साल उनकी संख्या घटती ही जा रही थी।
“हाय, मिस्टर कोल्होफ! आपको खेल कैसा लगा? वह तो पेनल्टी थी ही नहीं! रेफरी ज़रूर अंधा रहा होगा!”
लियोन, जो नया वर्क एक्सपीरियंस वाला लड़का था, सिगरेट के धुएं का गुबार छोड़ते हुए छोटे से स्टाफ टॉयलेट से बाहर निकला। कोई और होता तो जानता कि कार्ल से ऐसा सवाल पूछना बिलकुल बेकार था। वह कभी खबरें नहीं देखता था, कभी रेडियो नहीं सुनता था, कभी अखबार नहीं पढ़ता था। वह खुद यह बात मानता कि उसका दुनिया से नाता टूट गया था। यह उसका जानबूझकर लिया गया फैसला था, जब अयोग्य नेताओं, बर्फ पिघलने और पीड़ित शरणार्थियों की खबरों ने उसे इतना दुखी कर दिया था कि किसी भी साहित्यिक पारिवारिक गाथा से कहीं ज्यादा दुख होता था। यह आत्मरक्षा का एक तरीका था, भले ही इसके परिणामस्वरूप उसकी दुनिया सिमट गई थी। अब वह जिस दुनिया में रहता था, वह दो किलोमीटर गुणा दो किलोमीटर से ज्यादा बड़ी नहीं थी, और वह हर दिन उसकी सीमाओं की निगरानी करता था।
"क्या आपने जे. एल. कैर की फुटबॉल पर लिखी शानदार किताब पढ़ी है?" कार्ल ने रेफरी की योग्यता के मुद्दे पर किसी का पक्ष लेने के बजाय सवाल पूछना बेहतर समझा।
"क्या यह हमारे क्लब के बारे में है?"
"नहीं, यह स्टीपल सिंडरबी वांडरर्स के बारे में है।"
“मैंने इनके बारे में कभी सुना ही नहीं। वैसे भी मैं किताबें नहीं पढ़ता। सिर्फ मजबूरी में पढ़ता हूँ। स्कूल में। और तब भी, मैं फिल्म देखना पसंद करता हूँ।” लियोन मुस्कुराया, मानो यह खुद को नहीं बल्कि अपने शिक्षक को मूर्ख बनाने का एक चालाक तरीका हो।
"तो फिर आप यहां कार्य अनुभव क्यों कर रहे हैं?"
“मेरी बहन ने भी ऐसा ही किया था। तीन साल पहले। हम यहीं पास में रहते हैं— यहाँ तक पैदल चलकर आने में ज्यादा समय नहीं लगता।”
जर्मनी में अधिकांश छात्रों की तरह लियोन को दो सप्ताह के लिए किताबों की दुकान पर काम करना था। उसने यह बताना भूल गया कि जिन छात्रों को काम का अनुभव प्राप्त करने का अवसर नहीं मिलता, उन्हें आवंटित दो सप्ताह दुकान के चौकीदार की मदद करने में बिताने पड़ते हैं। चौकीदार इस समय का उपयोग और

कुछ अपमानजनक कार्यों का सहारा लेकर पूरे स्कूल के छात्रों (जिनका प्रतिनिधित्व काम का अनुभव प्राप्त करने वाले छात्र कर रहे थे) से दीवारों पर लिखे गए भित्तिचित्रों, डेस्क के नीचे चिपकी पुरानी च्युइंग गम और फेंके गए आधे खाए हुए लंच बॉक्स का बदला लेता है।
क्या आपकी बहन को पढ़ना पसंद है?
“उसके यहाँ आने के बाद, ज़रूर। लेकिन मेरे साथ ऐसा नहीं होगा!”
कार्ल मुस्कुराया। वह अच्छी तरह जानता था कि लियोन की बहन को पढ़ने का शौक क्यों हो गया था। उसका पूर्व बॉस, गुस्ताव ग्रुबर, जो अब मुन्स्टरब्लिक केयर होम में रहता था, लियोन और उसकी बहन जैसे अनिच्छुक पाठकों के साथ क्या करना है, यह बखूबी जानता था। वह उन्हें एक-एक करके प्लास्टिक में लिपटे ग्रीटिंग कार्डों से धूल झाड़ने का काम देता था। नीरसता से निराश होकर, छात्र निश्चित रूप से पास की किताब उठा लेता था, जिसे ग्रुबर ने खुद ही बड़ी चतुराई से आसानी से पहुँचने योग्य जगह पर रख दिया होता था। गुस्ताव ग्रुबर ने उन सभी को पढ़ने के लिए प्रेरित कर दिया था। वह हमेशा से बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार करता था। कार्ल के लिए, बच्चे हमेशा से ही रहस्यमय प्राणी रहे हैं, यहाँ तक कि जब वह खुद बच्चा था तब भी। और जैसे-जैसे वह अपने बचपन से दूर होता गया, वे उसे और भी अजीब और विचित्र लगने लगे।
बूढ़े ग्रुबर ने लियोन की बहन को एक उपन्यास का लालच दिया था जिसमें एक युवती को पिशाच से प्यार हो जाता है। लियोन, जो स्पष्ट रूप से उग्र भावनाओं से भरा हुआ था, के लिए ग्रुबर ने कवर पर एक सुंदर किशोरी की तस्वीर और बड़े अक्षरों वाले पन्नों वाली किताब को छोड़ दिया होता। बूढ़े ग्रुबर हमेशा कहते थे, "ज़रूरी यह है कि वे पढ़ें, न कि वे क्या पढ़ते हैं।" कार्ल सभी किताबों के लिए इस विचार से पूरी तरह सहमत नहीं था: कुछ किताबों के पन्नों के बीच छिपे विचार ज़हर से भी बदतर थे, लेकिन अक्सर पन्नों में उपचार मिल जाता था, कभी-कभी उन बीमारियों के लिए भी जिनका पाठक को एहसास भी नहीं होता था।
बड़ी सावधानी से कार्ल ने डिब्बे को कोने से बाहर निकाला। उसके अंदर केवल तीन किताबें पड़ी थीं, मानो कोई उपहार हो। उसने भूरा कागज़ और धागा निकालकर हर किताब को अलग-अलग पैक करना शुरू किया, मानो कोई उपहार हो। सबीन ग्रुबर ने उसे कई बार कहा था कि उसे ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है और खर्च बचाना चाहिए, लेकिन कार्ल अड़ा रहा। उसके ग्राहक यही उम्मीद करेंगे।

अनजाने में ही कार्ल ने किताबों को मोटे कागज़ में लपेटने से पहले हर पन्ने को हल्के से छुआ।
आखिरकार, उसने अपना जैतून के हरे रंग का सेना का थैला उठाया: बुंडेसवेहर (सैनिक बल) के इस्तेमाल से घिसा-पिटा, लेकिन कार्ल की देखभाल के कारण अभी भी अच्छी हालत में था। हालाँकि वह खाली था, लेकिन उसके कपड़े की बनावट से साफ पता चलता था कि खाली होना उसकी स्वाभाविक स्थिति नहीं थी। उसने किताबों को थैले की भारी तहों के बीच धीरे से रखा, जिसे उसने एक नरम कंबल से ढक रखा था, मानो वह छोटे पिल्लों को उनके नए मालिकों के पास ले जा रहा हो। उसने तीनों किताबों को थैले में इस तरह रखा कि सबसे छोटी किताब सबसे दूर रखी, जबकि सबसे बड़ी किताब उसकी पीठ के पास इस तरह रखी कि थैले के घुमाव से उसे कोई नुकसान न हो।
जाते समय वह रुका, फिर लियोन की ओर मुड़ा। “क्या तुम ग्रीटिंग कार्ड्स पर जमी धूल झाड़ दोगे? मिस ग्रुबर को अच्छा लगेगा। इन्हें यहीं अंदर लाना बेहतर होगा, फिर तुम शांति से काम कर पाओगे। मैं तो हमेशा डेस्क पर ही धूल झाड़ता हूँ।” उसने निक हॉर्नबी की किताब 'फीवर पिच' को शेल्फ से उठाया, जहाँ उसने उसे थोड़ी देर पहले देखा था, और उसे डेस्क पर रख दिया। फुटबॉल पिच का रंग हरा था—उर्सल शेफर शायद इसे देखती भी नहीं।

* * *

कार्ल इसे अपना दायरा कहता था, हालाँकि यह शहर के केंद्र के चारों ओर एक बहुभुज जैसा दिखता था, जिसमें समकोण या समरूपता नहीं थी। पुराने शहर की दीवार के खंडहरों द्वारा बनाया गया रास्ता, जो किसी बूढ़े आदमी के मसूड़ों में दांतों के ठूंठ की तरह खड़े थे, उसकी दुनिया की सीमा थी। चौंतीस वर्षों से उसने इसके बाहर कदम नहीं रखा था; जीवन में उसकी हर ज़रूरत इसी सीमा के भीतर समाहित थी।
कार्ल कोल्हॉफ अपना काफी समय पैदल चलने में बिताते थे, और जितना समय वे चलने में लगाते थे, उतना ही समय वे सोचने में भी लगाते थे। केवल चलते समय ही वे स्पष्ट रूप से सोच पाते थे; शायद पथरीली सड़कों पर उनके कदमों की आहट ही एकमात्र ऐसी चीज थी जो उनके विचारों को गति प्रदान कर सकती थी।
ज़मीन पर चलने वाले किसी व्यक्ति को शायद इसका एहसास न हो, लेकिन हर कबूतर और हर गौरैया जानती थी कि यह शहर गोलाकार है। हर पुराना घर और गली चर्च की ओर उन्मुख थी, जो केंद्र में भव्यता से खड़ा गिरजाघर था। अगर यह शहर किसी

मॉडल रेलवे का हिस्सा होता, तो आप कहते कि चर्च गलत पैमाने पर बनाया गया था। यह उस अल्पकाल की रचना है जब शहर बहुत समृद्ध हुआ था, और यह दौर चर्च के पूरा होने से पहले ही तेज़ी से समाप्त हो गया, जिससे इसकी एक मीनार अधूरी रह गई।
चर्च के चारों ओर घर श्रद्धापूर्वक खड़े थे; कुछ पुराने घरों की छतें तो सम्मानपूर्वक एक कोण पर झुकी हुई थीं। वे मुख्य प्रवेश द्वार से उचित दूरी बनाए रखते थे, जिससे शहर के सबसे बड़े और सबसे सुंदर चौक, मुन्स्टरप्लात्ज़ के लिए जगह बनी रहे।
जैसे ही कार्ल ने चौक में कदम रखा, उसे वही एहसास हुआ जो पहले भी कई बार हो चुका था, कि कोई उसे देख रहा है, ठीक वैसे ही जैसे कोई हिरण खुले मैदान में शिकारी की निगाहों के सामने असहाय खड़ा हो। उसे मुस्कुराना पड़ा—अन्य किसी लिहाज़ से तो वह हिरण जैसा दिखता ही नहीं था। मुन्स्टरप्लात्ज़ में शहर की महक अपने चरम पर थी। सत्रहवीं शताब्दी में शहर को घेर लिया गया था, और स्थानीय किंवदंती के अनुसार, एक बेकर ने चीनी का पहिया बनाया था: एक पहिये के आकार का डोनट, जो चॉकलेट क्रीम से भरा हुआ था और पिसी हुई चीनी से छिड़का हुआ था। उसने इसे घेरने वाली सेना को दिया, एक ऐसा संदेश जो उन्हें शहर छोड़ने के लिए प्रेरित करे। वास्तव में, कैलोरी से भरपूर यह मिठाई दो सौ साल बाद ही बनी थी, जिसका प्रमाण दस्तावेज़ी सबूतों से मिलता है, लेकिन यह पुरानी कहानी आज भी प्रचलित है, और शहर में आने वाले पर्यटक इस पर विश्वास करने को उत्सुक रहते हैं।
हर दिन, कार्ल मुन्स्टरप्लात्ज़ के उन्हीं पत्थरों पर धीमी, एकसमान चाल से चलता था। अगर कभी कोई व्यक्ति रास्ते में आ जाता, तो वह इंतज़ार करता और फिर अपनी चाल तेज़ करके छूटा हुआ समय वापस पा लेता। उसने चौक के पार अपना रास्ता इतनी सावधानी से बनाया था कि बाज़ार के दिनों में भी उसका अनुसरण किया जा सकता था। उसने यह भी सुनिश्चित किया था कि वह चौक की चारों बेकरियों से ज़्यादा से ज़्यादा दूरी पर रहे, क्योंकि अब उसे गर्म, चिकने, चीनी से लथपथ बेकरियों की गंध बर्दाश्त नहीं होती थी।
वह बीथोवेनस्ट्रासे में मुड़ा, जो वास्तव में एक साधारण सी गली थी, महान संगीतकार के नाम के बिल्कुल भी लायक नहीं। योजना कार्यालय के एक कर्मचारी की बदौलत, जिसने अपनी अलग पहचान बनाने की चाहत में, पूरे इलाके का नाम

प्रसिद्ध संगीतकारों के नाम पर रख दिया गया था। सबसे चौड़ी सड़क शुबर्ट के लिए आरक्षित थी, जो उस कर्मचारी का पसंदीदा संगीतकार था।
हालांकि कार्ल कोल्होफ़ को इसका एहसास नहीं था, लेकिन उस क्षण वह अपनी दुनिया के ठीक केंद्र में खड़ा था। यह दो तरफ से ट्राम लाइनों, 18 और 57 से घिरा हुआ था। (वास्तव में, शहर में केवल सात ट्राम मार्ग थे, लेकिन यह महसूस किया गया था कि अधिक संख्या से कम से कम सार्वजनिक परिवहन में एक आकर्षक महानगरीय माहौल जुड़ जाएगा।) दूसरी तरफ उत्तर से तेज़ सड़क थी, और चौथी तरफ नदी थी, जो साल के अधिकांश समय शांत और सुंदर ढंग से बहती रहती थी, और केवल वसंत ऋतु में कुछ दिनों के लिए ही उफान पर आती थी, और एक अविकसित स्वर रज्जु वाले शेर के बच्चे की तरह हल्की गर्जना करती थी।
दिन की उनकी पहली मुलाकात उन्हें सैलियरिगासे नामक एक गली में ले गई, जहाँ क्रिश्चियन वॉन होहेनेश का घर था। जल्दी से गुजरने वाला कोई राहगीर उस गहरे पत्थर के विला की भव्यता पर ध्यान नहीं दे पाता: वह अन्य इमारतों से एक कदम पीछे हटकर, एक झुके हुए काले हंस की तरह खड़ा था, मानो अपने शानदार पंख फैलाने के क्षण की प्रतीक्षा कर रहा हो। उसके पीछे विशाल ओक के पेड़ों से घिरे बगीचे थे, जिनमें तीन बेंच इस तरह से रखी गई थीं कि क्रिश्चियन वॉन होहेनेश दिन के किसी भी समय अपनी किताब पर धूप का आनंद लेते हुए पढ़ सकें। कार्ल को पता था कि होहेनेश के पास अपार धन-दौलत है, लेकिन यह नहीं कि वह शहर का सबसे अमीर आदमी है। यह बात किसी को नहीं पता थी, यहाँ तक कि खुद होहेनेश को भी नहीं, जो कभी खुद की तुलना दूसरों से नहीं करता था। उसके परिवार ने पीढ़ियों पहले नदी किनारे चमड़ा बनाने के व्यापार से धन कमाया था और औद्योगिक क्रांति के दौरान भी उसे खोने से बचा लिया था। क्रिश्चियन वॉन होहेनेश को काम करने की कोई ज़रूरत नहीं थी; वह अपने शेयरों और निवेशों को अपने लिए काम करने देता था। वह बस अपने धन-संपत्ति का प्रबंधन करता था। एक नौकरानी दिन में एक बार खाना बनाने और कुछ कमरों की सफाई करने आती थी; एक माली हफ्ते में एक बार झाड़ियों की छंटाई करने और उसकी किताबों तक धूप पहुँचाने आता था; एक देखभाल करने वाला महीने में एक बार आता था; और सोमवार से शुक्रवार तक, कार्ल एक नई किताब लेकर आता था, जिसे क्रिश्चियन वॉन होहेनेश आमतौर पर अगले दिन तक पढ़ लेता था। जहाँ तक कार्ल को पता था, होहेनेश ने अनंत काल में कभी भी अपने राज्य की सीमाओं से बाहर कदम नहीं रखा था।

कार्ल ने दरवाजे के पास लगी तांबे की छड़ को खींचा, और विला के अंदर एक घंटी की धीमी सी आवाज़ गूंजी। हमेशा की तरह, कुछ देर का सन्नाटा छाया रहा, जब तक कि घर का मालिक लंबे, अंधेरे गलियारे से नहीं गुजरा; फिर भारी दरवाजा चरमराते हुए, बस थोड़ा सा खुला। क्रिश्चियन वॉन होहेनेश कभी बाहर नहीं निकले। वह एक आकर्षक व्यक्ति थे: लंबे, काले बालों वाले, तराशे हुए गालों, आकर्षक ठोड़ी और एक उदासी जो उनके चेहरे पर बारीक भूरी धूल की तरह छाई हुई थी। हमेशा की तरह, उन्होंने गहरे नीले रंग का डबल-ब्रेस्टेड सूट पहना हुआ था, बटनहोल में एक ताजा सफेद ऑर्किड लगा हुआ था, और उनके काले चमड़े के जूते ऐसे चमक रहे थे मानो वे ओपेरा बॉल के लिए तैयार हुए हों। होहेनेश अपने कपड़ों से कहीं ज्यादा जवान दिखते थे: मुश्किल से सैंतीस साल के—लेकिन उन्होंने बचपन से ही सूट पहनना शुरू कर दिया था, और सूट उनके लिए उतने ही सहज थे जितने दूसरों के लिए जींस।
"श्री कोल्होफ, आप देर से आए हैं। हमने सवा सात बजे आने का समय तय किया था," होहेनेश ने अभिवादन करते हुए कहा।
कार्ल ने सहमति में सिर झुकाया, फिर सावधानी से अपना बैग उठाया। "मैं तुम्हारी नई किताब लाया हूँ।" उसने बैग की डोरी को सीधा किया, जो यात्रा के दौरान थोड़ी हिल गई थी।
“आशा है यह आपकी सिफारिश पर खरा उतरेगा।” होहेनेश ने किताब ले ली, लेकिन उसे खोला नहीं। यह सिकंदर महान के बारे में एक उपन्यास था, जो अरस्तू के मार्गदर्शन में उनके समय पर आधारित था। होहेनेश केवल दार्शनिक रचनाएँ ही पढ़ते थे।
उसने कार्ल को किताब के वजन के हिसाब से टिप दी, जिसका हिसाब उसने पहले ही लगा लिया था। "अगली बार फिर समय पर आना। समय की पाबंदी राजाओं की शिष्टता है।"
“बिल्कुल। आपकी शाम अच्छी बीते।”
"हां, मुझे उम्मीद है कि आपका अनुभव भी उतना ही सुखद होगा, स्वाभाविक रूप से।"
क्रिश्चियन वॉन होहेनेश ने ठोस लकड़ी का दरवाजा बंद कर दिया, और विला एक बार फिर सुनसान प्रतीत होने लगा।
घर के मालिक कार्ल के साथ किताबों और लेखकों पर गहराई से चर्चा करना चाहते थे, जिन्हें वे एक शिक्षित, सभ्य और आत्मीय व्यक्ति मानते थे। लेकिन समय

बीतने के साथ, निमंत्रण के शब्द उनके दिमाग से निकल गए। शायद अपने भव्य घर के कई कमरों में वे शब्द कहीं खो गए थे।
कार्ल ने क्रिश्चियन वॉन होहेनेश से विदा ली—परन्तु उसके मन में, मानो वह किसी और ही व्यक्ति को पीछे छोड़ आया हो। वास्तविक दुनिया में हर जगह, कार्ल को उपन्यासों की झलक दिखाई देती थी। उसके लिए, शहर किताबों के पात्रों से भरा हुआ था, भले ही वे पात्र बिल्कुल अलग समय में या दूर-दराज के देशों में रहते हों। कार्ल के लिए, जिस क्षण क्रिश्चियन वॉन होहेनेश ने अपने विला का भारी दरवाज़ा खोला, वह मानो 'प्राइड एंड प्रेजुडिस' के पन्नों से बाहर आ गया था। कार्ल अब अठारहवीं सदी के डर्बीशायर के पेम्बर्ली और उसके मालिक, फिट्ज़विलियम डार्सी को अलविदा कह रहा था, जो अपने बेदाग व्यवहार के बावजूद, कभी-कभी कठोर और अहंकारी प्रतीत होता था।
कार्ल को किसी भी नाम को याद रखने में असमर्थता थी, सिवाय किसी किताब के पात्र के। यह आदत उसके स्कूल के दिनों से ही शुरू हो गई थी, जब उसके कई सहपाठियों ने अपने शिक्षकों को उपनाम दिए थे, जिनमें से अधिकतर अपमानजनक थे: लूब्रश, प्रिंस मॉर्फिन या स्पिट्टी। कार्ल ने उन्हें अलग-अलग नाम दिए थे: ओडीसियस, ट्रिस्टन या गुलिवर। अपने सहपाठियों के विपरीत, जब उसने हाई स्कूल से अबितुर (शिक्षा की उपाधि) प्राप्त की और किताबों की दुकान पर प्रशिक्षुता का प्रस्ताव मिला, तब भी उपनाम देने की उसकी आदत बनी रही। हर दिन जब कार्ल किताबों की दुकान पर जाता था, तो फटी हुई वर्दी में सुस्त चलने वाला वह लड़का 'अच्छा सिपाही श्वेक' बन गया। उसे सेब बेचने वाली सब्जीवाली 'स्नो व्हाइट' की दुष्ट रानी में बदल गई—शुक्र है, उसने अपने फलों में जहर नहीं मिलाया। एक समय कार्ल को एहसास हुआ कि उसका शहर साहित्यिक हस्तियों से भरा हुआ है; हर निवासी का अपना साहित्यिक प्रतिरूप है। इसके बाद के वर्षों में, वह शहर की पुलिस में हत्या दस्ते के प्रमुख शर्लक होम्स से मिला; उनकी मुलाकात लेडी चैटरली से भी हुई, जो अक्सर पतले वस्त्र पहने अपने दरवाजे खोलती थीं, और जिनके प्रति युवावस्था में उन्हें हल्का सा आकर्षण महसूस हुआ। दुख की बात है कि वह मेल्क के एडसो के साथ शहर छोड़कर चली गईं। कैप्टन अहाब एक विशालकाय तिल के पीछे पागल थे, जिसने उनके बगीचे में तबाही मचा रखी थी, और जिसे पकड़ने में वे लगातार असफल रहे। कार्ल, गंभीर रूप से बीमार इंजीनियर वाल्टर फैबर को उनकी मृत्यु तक दक्षिण अमेरिका के बारे में किताबें पहुँचाते रहे। और एक अपार्टमेंट इमारत में,

ज़्यादा और एक लीटर दूध से कम); चिंता की बात तो किताब के अंदर की सामग्री का वज़न था।
"क्या यह अच्छा है?" उसने पैकिंग पेपर पर लगी डोरी को सीधा खींचते हुए पूछा।
मैंने जो सुना है, उसके अनुसार 'द शैडो रोज' लेखक की अन्य रचनाओं के स्तर की ही है।
"अत्यधिक नाटकीय?"
अब कार्ल की मुस्कुराने की बारी थी। उनके बीच एक अनकहा समझौता था: जब भी वह उसके लिए कोई किताब लाता, वह हमेशा नाटकीय होती, जिसका अंत दुखद होता। पहले भी उसने कभी-कभार सुखद अंत वाली किताबें सुझाई थीं, लेकिन उसे वे पसंद नहीं आती थीं। उसे लगता था कि उनका वास्तविकता से कोई लेना-देना नहीं है। एंड्रिया क्रेमेन को ऐसे उपन्यास पसंद थे जिनमें महिला नायिका को कष्ट सहना पड़ता था और अंत में या तो उसकी मृत्यु हो जाती थी या वह दुखी और अकेली रह जाती थी। खुले अंत वाली कहानियाँ उसे तभी स्वीकार्य थीं जब उनमें दोनों में से किसी एक की संभावना बनी रहती थी।
“हमेशा की तरह, मुझे चुप रहने का अधिकार है,” कार्ल ने कहा। “पिछला उपन्यास आपको कैसा लगा?”
एंड्रिया क्रेमेन ने गहरी सांस ली और सिर हिलाया। "यह बहुत दुखद था! आखिर में वह पानी में चली गई... तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?" उसने नखरे दिखाते हुए मुंह बनाया।
मैं ऐसा बिल्कुल नहीं कर सकता।
पहले वह उसकी किताबों को चमकीले, खुशमिजाज उपहार के रैपर में पैक करता था, लेकिन कुछ समय बाद उसे यह बनावटी लगने लगा।
“क्या आप अगले हफ्ते मेरे लिए एक और उपन्यास लाएँगे? मैंने एक उपन्यास के बारे में सुना है जिसमें हर समय रात रहती है—कहानी सर्दियों में ग्रीनलैंड में घटित होती है। और मुख्य पात्र ने अपना बच्चा खो दिया है। क्या आप इसके बारे में जानते हैं? मुझे यह अच्छा लगा।”
कार्ल ने उस किताब के बारे में सुना था। उसे उम्मीद थी कि एंड्रिया क्रेमेन ने इसके बारे में नहीं सुना होगा।
“मैं इसे ले आऊंगा।” कार्ल ने यह नहीं कहा कि वह इसे खुशी-खुशी ले आएगा, क्योंकि यह झूठ होता।

"क्या आप मुझे किसी और चीज़ में रुचि दिला सकते हैं?"
“इसी शहर में घटित एक अपराध कथा है; यह अभी-अभी प्रकाशित हुई है। मैंने इसे अभी तक पढ़ा नहीं है, लेकिन सुना है कि यह बहुत मजेदार है।”
एंड्रिया क्रेमेन ने सुझाव को खारिज कर दिया। "क्या आपको लगता है कि मुझे इसमें मज़ा आएगा?"
कार्ल ने झूठ न बोलने का पक्का इरादा कर लिया था। अगर आप झूठ को दुनिया में फैला देते हैं, तो उसे कभी वापस नहीं लिया जा सकता। "नहीं।"
मुझे भी ऐसा नहीं लगता।
“पर शायद इससे तुम्हें हंसी आ जाए। और तुम्हारी हंसी बहुत प्यारी है— उम्मीद है ये कहना कुछ ज़्यादा ही नहीं होगा। मुझे यकीन है तुमने चार्ली चैपलिन का ये कथन सुना होगा, ‘बिना हंसी के एक दिन बेकार जाता है।’ इस धरती पर हमारे पास बहुत कम दिन हैं, हम एक भी दिन बर्बाद नहीं कर सकते।” उसने उससे पहले कभी ऐसी बातें नहीं कही थीं। शायद उसे महसूस हो गया था कि आज वो ज़्यादा उदास है? कार्ल को पता नहीं था। कभी-कभी उसका मुंह बिना सोचे-समझे ही कुछ भी बोल देता था।
एंड्रिया क्रेमेन के चेहरे पर अब मुस्कान नहीं थी। उसका निचला होंठ थोड़ा कांप रहा था। "आपने मेरा दिन बचा लिया, धन्यवाद!" दरवाजा अचानक बंद हो गया। कार्ल ने दरवाजा बंद होते देखा, एंड्रिया क्रेमेन पर नहीं, बल्कि एफी ब्रिस्ट पर: एक दुखी युवती, जिसकी कम उम्र में शादी हो गई थी, जिसका दुखद भाग्य उन अनगिनत नायिकाओं के भाग्य जितना ही दुखद था, जिनकी किताबें एंड्रिया क्रेमेन ने मंगवाई थीं। कार्ल चाहता था कि वह उसके लिए कुछ और कर सके, न कि सिर्फ ऐसी किताबें पहुंचाए जो यह साबित करती हों कि दूसरे भी दुख झेल सकते हैं, लेकिन उन्हें यह नहीं बतातीं कि उस दुख को कैसे समाप्त किया जाए।
दरवाजे के पीछे, एंड्रिया क्रेमेन ने अपने आँसू रोकने की कोशिश की। वह उसे उस दिन की घटना बताना चाहती थी, लेकिन ऐसा करने से उसे उस घटना को फिर से जीना पड़ता, जो उसके बस की बात नहीं थी। उसने कांपते हाथों से पैकेट खोला और गलियारे से बाहर निकलने से पहले ही किताब पढ़ना शुरू कर दिया था। पहले ही पन्ने के अंत तक एक किरदार ने आत्महत्या कर ली थी।

यह लेख सर्वप्रथम 2023 में यूके में प्रकाशित हुआ था।
मनीला प्रेस
बोनियर बुक्स यूके का एक प्रकाशन
चौथी मंजिल, विक्टोरिया हाउस, ब्लूम्सबरी स्क्वायर, लंदन, WC1B 4DA
बोनियर बुक्स के स्वामित्व में
स्वेवेगेन 56, स्टॉकहोम, स्वीडन

मूल रूप से 2010 में जापान में शोगकुकान इंक. द्वारा के रूप में प्रकाशित।

कॉपीराइट © सातोशी यागिसावा द्वारा 2010
अंग्रेजी अनुवाद कॉपीराइट © सातोशी यागिसावा द्वारा 2023
एरिक ओज़ावा द्वारा जापानी से अनुवादित
संतोका तानेडा की कविता का अनुवाद ब्रूनो नवास्की द्वारा किया गया है, जिसका उपयोग अनुमति से किया गया है।

सभी अधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशन का कोई भी भाग किसी भी रूप में, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी या अन्य किसी भी माध्यम से पुनरुत्पादित, संग्रहित या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने के सतोशी यागिसावा के अधिकार का दावा उन्होंने कॉपीराइट, डिजाइन और पेटेंट अधिनियम, 1988 के अनुसार किया है।

यह एक काल्पनिक रचना है। नाम, स्थान, घटनाएँ और प्रसंग या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से प्रयुक्त किए गए हैं। किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति या वास्तविक घटना से कोई भी समानता केवल संयोगवश है।

इस पुस्तक का सीआईपी कैटलॉग रिकॉर्ड ब्रिटिश लाइब्रेरी से प्राप्त किया जा सकता है।

ISBN: 978–1–78658–323–9

यह ईबुक और ऑडियोबुक के रूप में भी उपलब्ध है।

टाइपसेटिंग का काम Envy Design Ltd द्वारा किया गया।

लीह कार्लसन-स्टैनिसिक द्वारा डिज़ाइन किया गया
यह कलाकृति क्षुशा दुस्मिकेवा और गुडस्टूडियो द्वारा शटरस्टॉक, इंक. पर प्रस्तुत की गई है।

मैनिला प्रेस, बोनियर बुक्स यूके का एक प्रकाशन है।
www.bonnierbooks.co.uk